युग-देवता

[मौलिक उपन्यास]

उपन्यासकार

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजहंस प्रकाशन

सदर बाजार, दिल्ली ६

प्रकाशक—
राजहंस प्रकाशन,
सदर बाजार रुई मण्डी
दिल्ली ६ ।

• • •

• • •

मूल्य ४)

• • •

मुद्रक—
अमरचन्द्र जैन
राजहंस प्रेस,
सदर बाजार रुई मण्डी
दिल्ली ६ ।

मैं इतना ही कहूँगा—

मग देवता मेरा ६वां उपन्यास है।

मेरे रचित अन्य उपन्यासों का जो स्वागत हिन्दी के पाठकों ने किया उस से मुझे काफी प्रोत्साहन मिला और मेरे सन्यासी और सुन्दरी के गुजराती और मराठी अनुवाद ने तथा नया इन्सान के गुजराती अनुवाद ने मुझे भविष्य में और अधिक सजग रहने की शिक्षा दी। फिर भी मैं लोकमान्य तिलक के इन शब्दों पर विश्वास करता हूं कि मनुष्य को अपनी प्रगति से कभी सन्तोष नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं मां भारती का शृंगार और भी यत्न से करने को कटिबद्ध हूं।

इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं बीकानेर के प्रसिद्ध विचारक डा० छगनलाल मोहता का अत्यन्त कृतज्ञ हूं, और आभारी हूं—राजहंस के सम्पादक श्री विश्वमित्र शर्मा व प्रकाशक श्री सुबुद्धिनाथ जैन का, जिन के सद्प्रयत्नों से यह कृति आप के सम्मुख तुरन्त आ गई।

पाठक मेरे सच्चे आलोचक हैं। उनकी राय की प्रतीक्षा करूंगा।

साल की होली,
बीकानेर (राजस्थान)

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

प्रकाशक—
राजहंस प्रकाशन,
सदर बाजार नई मण्डी
दिल्ली ६।

• • •

• • •

मूल्य ८)

• • •

मुद्रक—
अमरचन्द्र जैन
राजहंस प्रेस,
सदर बाजार, नई मण्डी
दिल्ली ६।

मैं इतना ही कहूँगा—

पग देवता मेरा ६वाँ उपन्यास है।

मेरे रचित अन्य उपन्यासों का जो स्वागत हिन्दी के पाठकों ने किया, उस से मुझे काफी प्रोत्साहन मिला और मेरे सन्यासी और सुन्दरी के गुजराती और मराठी अनुवाद ने तथा नया इन्सान के गुजराती अनुवाद ने मुझे भविष्य में और अधिक सजग रहने की शिक्षा दी। फिर भी मैं लोकमान्य तिलक के इन शब्दों पर विश्वास करता हूँ कि मनुष्य को अपनी प्रगति से कभी सन्तोष नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं माँ भारती का शृंगार और भी यत्न से करने को कटिबद्ध हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं बीकानेर के प्रसिद्ध विचारक डा० छगनलाल मोहता का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, और आभारी हूँ—राजहंस के सम्पादक श्री विश्वमित्र शर्मा व प्रकाशक श्री सुबुद्धिनाथ जैन का, जिन के सत्प्रयत्नों से यह कृति आप के सम्मुख तुरन्त आ गई।

पाठक मेरे सच्चे आलोचक हैं। उनकी राय की प्रतीक्षा करूँगा।

साले की होली,
बीकानेर (राजस्थान)

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

प्रकाशकीय

श्री चन्द्र हिन्दी के उन थोड़े से तरुण लेखकों में से हैं जिनको इतनी छोटी आयु में अन्य भाषा भाषी भारतीयों ने भी अपनाया। 'युग देवता' आज के युग के तथाकथित महामान्य नेता पर कठोर व्यंग्य है— जो अपने को जनता का सेवक कहने का दम भरता है या दम्भ रखता है। आशा है 'युग-देवता' की स्थापना से ऐसे लोगों की आँख खुलेगी— जो जनता के सेवक होने के बावजूद उनकी ओर से आँख मूँदे हैं।

विश्वमित्र शर्मा
सम्पादक
राजहंस प्रकाशन

प्रकाशकीय

श्री चन्द्र' हिन्दी के उन थोड़े से तरुण लेखकों में से हैं जिनको इतनी छोटी आयु में अन्य भाषा भाषी भारतीयों ने भी अपनाया। 'युग देवता' आज के युग के तथाकथित बहुमान्य नेता पर कठोर व्यंग्य है— जो अपने को जनता का सेवक कहने का दम भरता है या दम्भ रखता है। आशा है 'युग-देवता' की स्थापना से ऐसे लोगों की आँख खुलेगी— जो जनता के सेवक होने के बावजूद उसकी ओर से आँख मूंदे हैं।

विश्वामित्र शर्मा
सम्पादक
राजहंस प्रकाशन

आदरणीय श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

को सप्रेम—

'अरविंद !"

क्षोभ भरा स्वर अरविंद के कानों से टकराया। उसने सकरुण नयनों से पीछे की ओर गदन घुमा कर देखा। उसका बड़ा भाई चाँद झुँझलाया हुआ उसकी ओर जल्दी जल्दी आ रहा था।

'अरविंद यह तेरी भाभी आखिर मुझसे चाहती क्या है ?' चाँद ने अपने अन्तराल की सारी व्यथा अपने स्वर में उड़ल दी थी। उसकी आँखें सजल हो उठी थीं जो अन्त में धीरे धीरे भर भी गईं।

अरविंद अपने बड़े भाई को कुछ देर तक स्नेह भरी दृष्टि से देखता रहा। इस प्रकार देखना चाँद के लिए और ही असह्य हो गया। अपने स्वर को तेज करता हुआ वह बोला तुम इस तरह क्यों देख रहे हो ? क्या मैं बदल गया हू ? बोलते क्यों नहीं ?'

"क्या कहा ? ' चाँद पर जैसे वज्रपात हो गया। क्रोध से उसका सारा बदन काँपने लगा। आँखें लाल हो उठीं। बड़ी मुश्किल से अपने हृदय के आवेग को दबाकर वह बोला 'यह असम्भव है बिल्कुल असम्भव !

असम्भव नहीं है भया। अरविंद के अधरों पर सूखी स्मित की रेखायें दौड़ गईं। उसने अपनी व्यथा को दबाने का बहुत यत्न किया लेकिन वह दब नहीं सकी आँखों में सजलता बन कर चमक उठी।

तुम भी मुझे सताने लगे" चाँद ने तड़प कर कहा "यदि तुम्हें सताने में मजा आता है तो मैं तुम्हें सताने का अधिकार भी देता हूं। पर एक बात याद रखना तुम घर छोड़ कर नहीं जा सकते। यह बिल्कुल ही असम्भव है।"

अरविंद भाई के अगाध स्नेह से श्रद्धातिरेक हो गया। विह्वल स्वर में बोला, "भैया तुम्हें मैंने बहुत कष्ट दिये हैं जीवन भर तुम्हें तेली का बैल समझ कर अपना पोषण करता रहा हूं लेकिन अब मेरा अन्तःकरण इसे स्वीकार नहीं कर सकता कि मैं तुम्हारे टुकड़ों पर जीऊं।"

चाँद के तन पर किसी ने तपी सलाका चिपका दी हो इस तरह चिहुंक कर बोला "यदि किसी के कर्तव्य को तुम इतनी हेय दृष्टि से देखते हो तब मैं कहूंगा कि तुममें साधारण ज्ञान और शिष्टता भी नहीं है। यदि तुम मेरी प्रेम की रोटियों को टुकड़ों की संज्ञा से पुकारते हो तब मैं समझूंगा कि तुमसे बढ़ा मेरा अपमान करने वाला कदाचित यहाँ कोई नहीं है।"

अरविंद क्षण भर के लिये हतप्रभ हो गया। बाद में सोचने लगा कि भैया मेरी साधारण बात को इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हैं? मैंने कोई अमर्यादित बात नहीं कही। दूसरों के सहारे पलने वाला समर्थ व्यक्ति और क्या कह सकता है अपने दाता की रोटियों को? टुकड़े ही तो फिर मैंने कौन सा अपराध कर दिया? उसकी भौंहें तनिक वक्र हो गईं। ललाट पर सलवटें पड़ कर स्थिर हो गईं। फिर भी चाँद के चेहरे पर जो करुणा का सागर लहरा रहा था उससे वह द्रवित हो उठा। अपने हृदयोद्‌गारों को रोकता हुआ वह संयत स्वर में बोला "भैया यदि मैंने कोई अनुचित बात कह दी हो तो क्षमा करना।

"क्षमा? क्या कहते हो अरविंद मैंने तुम्हें बेटे की तरह पाला है न! यदि ब्याह के एक वर्ष के भीतर मेरे भी बच्चा हो जाता तो ठीक तुम्हारी ही उम्र का होता। चल खाना खा लो।

"मैं खाना नहीं खाऊंगा।" उसने दृढ़ता से कहा।

'क्यों ?'

'भैया मैंने कह दिया न, अब मुझे जिन्दगी में कुछ करना है। अकर्मण्यता भी कोई जीवन है ? ठीक है, हम बहुत दरिद्र हैं साधनहीन हैं और हमें किसी सुयोग्य व्यक्ति का समर्थन भी प्राप्त नहीं है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि हम कुछ करें ही नहीं। पुरुषार्थ करना व्यक्ति का धर्म है। इस समस्त विश्व में सब पदार्थ हैं लेकिन जो कर्म हीन होता है, उसे कुछ भी नहीं मिलता।"

चाँद को अरविंद की बात से तनिक भी संतोष नहीं हुआ। वह विगलित स्वर में बोला तुम कदाचित अपने भैया को धीरज बंधा रहे हो। सोच रहे हो कि भैया अबोध बालक है मेरे सुन्दर शब्द जाल में उलझ जायगा भटक जायगा कह देगा कि अच्छा अरविंद जैसी तुम्हारी मर्जी लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। चाँद बहुत ही गंभीर हो गया। उसकी आँखों में उसके अन्तराल की अपरिसीम वेदना झलक उठी।

अरविंद, आत्मा के सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता। रक्त प्रेम रक्त-गंध और रक्त-व्यथा का विस्मृति इतनी सहज चीज ही है ? इतनी सहज होती तो कुरुक्षेत्र में विशाल जन-समूह के मध्य अर्जुन विचल नहीं होता ? वह धनुषबाण त्याग कर युग-नेता श्री कृष्ण को यह नहीं कहता कि य मेरे अपने हैं। यह यह अपनापन ही तो 'प्रेम' है। यदि प्रेम के हृदय को विदीर्ण करके जाना चाहते हो तो जाओ। रही तुम्हारी भाभी की बात, कभी-कभी अर्थाभाव के कारण वह अपने मस्तिष्क का संतुलन खो देती है उस समय उसकी नारी उसकी आत्मा के प्रकाश से हटती जाती है और क्रोध का अंधकार बढ़ता जाता है। तब वह अधीर हो जाती है ऊल-जलूल बक देती है। पर उसका मन बड़ा ही निर्मल है। अन्तर में पाप नहीं रखती।

अरविंद निरुत्तर रहा।

तभी भीतर से अरविंद की भाभी शान्ता की कर्कश आवाज सुनाई पड़ी। वह अपनी आठ साल की लड़की निर्मला को डाँट रही थी तू मर

जाती तो मुझे सब सुख मिल जाते और तेरे पिता जी को स्वग ! पर सौ डीस रुपट्टी लाते हैं उसमें तुम्हें कचौड़ियाँ खिलाऊँ या सूख टुकड़े। तेरा धाधा तो एक पसा कमाता नहीं। दोनों वक्त खा-पीकर पाँव पसार कर पड़ा रहता है।

अरविंद के लिय आग सुनना असह्य हो उठा। वह तेज स्वर में बोला मैं जाता हूँ भया मुझ मत रोको। मैं आदमी हूँ कुत्ता नहीं।'

चाँद अरविंद के पाँवों की मिटती हुई आहट को सुनता रहा। उसकी आँखों में मोतियों के सदृश अश्रु दुलदुला आय। उसे जसे महसूस हो रहा था कि उसके हृदय के टुकड़ हो रहे हैं।

चाँद पलग पर अपन सा पड़ गया।

निमला रोती रोती आकर चाँद क पास बठ गई। चाँद ने उस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। सिसकियाँ जो उसे सुनाई पड़ती थीं उसे लगता था कि ये सिसकियाँ निम्मू की नहीं अरविंद की हैं जो उसके लाख चाहने पर भी रुक नहीं पा रही हैं।

सोना अब भी भीतर बड़बड़ा रही थी।

जीर्ण-शीर्ण घर। कब और किस भाग्यशाली पूवज न इसका निर्माण कराया था इससे भी सभी अपरिचित-भीड़दार सूर्य क उत्ताप स वंचित चन्द्र-ज्योत्स्ना न जिसके भीतरी भाग के दशन भी नहीं किय हों ? एसा भुतहा-सा वह घर था।

उस घर के दो हकदार थे चाँद और अरविंद।

चाँद साधारण क्लक और अरविंद बकार ग्रजुएट। सोना अच्छे खाते-पीते घर की लड़की। यहाँ तभी वस कर वह अपने को मधुर नहीं रख सकी। चिड़चिड़ापन उसकी हर बात में आ गया। यहाँ तक कि उसके प्रम प्रदर्शन में भी सभी को कटाक्ष नजर आता था।

उसका बड़बड़ाना अब भी जारी था। अब चाँद से नहीं रहा गया। अश्रुओं को पोंछते हुए वह सोना के समीप आया। बुत की तरह अचल खड़ा हो गया। सोना उसको इस मुद्रा स काँप उठी। उसक रोम रोम

में भय की लहर का सचार हो गया। वह अपनी इस आतुरता को सभाल नहीं पाई थी कि चांद घृणा से मथन तरेरते हुए बोला, अब तो तुम दूध और घी के कटोरे भर भर कर पीओगी ? अरविंद सदा के लिए चला गया है। वह निकम्मा, हरामखोर, कपूत, कमीना कहते कहते चांद रो पड़ा।

सोना उसके दुख से अभिभूत हो उठी। उसे सांत्वना देने के ख्याल से उसके समीप आकर बोली, "आपने उन्हें रोका क्यों नहीं ? मैं तो यों ही बकती रहती हूं, मेरा तो स्वभाव ही पड़ गया है। क्या करूं कभी-कभी किसी अभाव की भयंकरता मेरे लिए असह्य बन जाती है तब मैं आवेग में आ जाती हू, आवेग मुझे कटु बना देता है और कटुता में कभी कभी मैं घर ढाहने वाली बातें भी कह जाती हूं।

चांद ने बड़ी कठिनता से कहा, 'घर टूट गया है सोना। अपनी मां की आंखों के दो तारे थे हम दोनों, आज एक तारा टूट गया और टूटा हुआ तारा या तो निस्तेज हो जाता है अथवा प्रखर प्रकाश पुंज।

'मैं जाती हू और अरविंद भया को मना कर ले आती हूं लेकिन ।" वह कुछ कहती-कहती रुक गई। उसके कथन में चांद को एक भाभी के उस विद्रूप का भास हुआ जो एक प्रकार देवर के प्रति प्रकट होता है। वह जल भुन गया। बोला सोना आंतरिक प्रवृत्तियों के संघर्ष में तुम पराजित हो जाओगी। तुम्हारा अन्तर तुम्हारी वाणी का सहयोग नहीं करेगा क्यों कि तुम यह चाहती ही नहीं कि वह यहां रहे।'

क्यों ? वह चौंक पड़ी।

"अपने पति पर सम्पूर्ण अधिकार की भावना स्नेह को मिटाती जाती है। तुम नहीं चाहती कि मेरा एक पैसा भी अरविंद अपने प्रयोजन में ले।

बात कड़वी थी फिर भी सोना शांत बनी रही। मन ही मन सोचने लगी कि कैसा है उसका पति ? जो अपनी पत्नी पर कम और भाई पर अधिक प्यार उड़ेलता है। जिसकी अक्का स्कूल में दी ध्यान नहीं रख कर

सकती लेकिन जिसका भाई आवारागर्दी में एक रुपया खर्च कर सकता है। ऐसा क्यों? खून का रिश्ता जो ठहरा। तो क्या निम्मू की रचना मेरे रक्त से नहीं हुई है? फिर मैं क्यों अपनी बेटी की इच्छाओं का अनुचित दमन देखूं? एक अपनेपन की चरम सीमा से उत्पन्न डाह में वह जल उठी। उसके मन में संघर्ष की उग्र भावना ने तुरन्त जन्म लिया लेकिन तनिक अपने पति की भावना का ख्याल करके वह उस पल शांत रही। उसे शांत देखकर चांद भीतर की ओर जाता हुआ बड़बड़ाने लगा, यह घर एक दिन श्मसान हो जायगा भूत प्रेतों का क्रीड़ास्थल।

पति के एकांगी पक्ष से सोना क्षणिक चिंतित हुई तत्पश्चात् आहत सांपिन की तरह फुंफकारती हुई बोली, जो श्मसान होगा वह किसी के रुके नहीं रुकेगा पर श्मसान होने के बाद आपका कलेजा तो ठंडा हो जायगा। मैं अपने पीहर से कितने वर्ष और पसे मंगाऊंगी?

मनुष्य कितना निर्बल और निस्सहाय क्यों न हो लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं जो सीमा के बाहर की होती हैं। जिन्हें पुरुष का स्वाभिमान सुन कर तड़प उठता है गरज उठता है। सोना सीमाहीन होती जा रही थी। वह उत्तप्त स्वर में लाल आंखें करके बोली मैंने तो आपको तीन हजार रुपये लाकर दे दिये आपको सूट बनवा दिया आपके लिये।

खामोश मैंने तुम लोगों के लिये क्या नहीं किया? रात दिन का भेद न समझ कर केवल धनोपार्जन करता आ रहा हूं। कठोर श्रम के बाद पाव भर दूध भी नसीब नहीं होता इससे बढ़ कर एक व्यक्ति के लिये क्या दुःख हो सकता है?"

'दूध नसीब कैसे हो कम जो आपने अच्छे नहीं किये हैं। अरविंद अरविंद क्या किया अरविंद ने आपके लिये? जब दो कौड़ी कमाने का वक्त आया तो घर से चलता बना। सोचा होगा कि कहीं नौकरी कर के ऐश करूंगा। निम्मू के पिताजी आप बड़े भोले हैं। दुनियादारी जरा भी नहीं जानते। प्यार और स्वार्थ के अंतर को नहीं पहचानते। आप

केवल जानते हैं भाई पर सर्वस्व उत्सर्ग कर देना प्राण तक भी। और भाई आपको ठग कर चला गया।'

चाँद ने लम्बे स्वर में उत्तर दिया, 'यह क्रोध से प्रस्फुटित विद्रूप के उद्गार हैं सोना। इसमें विवेक का बड़ा अभाव है। अधीरता में वाणी भी सत्य का आँचल छोड़ देती है! तुम्हें स्वार्थ ने अंधा कर दिया है लेकिन जीतता वही है जो ठगाता है खोता है देता है।

"तुम महात्मा बन सकते हो पर मैं नहीं बन सकती। मुझे तो अपना और अपनी बच्चों का सुख चाहिए, सुख" कहती-कहती सोना हवा की तरह वहाँ से हट गई।

*　　　　*　　　　*

२

प्रायः ऐसा होता था कि सोना अनर्गल प्रलाप कर दिया करती थी और चाँद एक कान से सुनता था और दूसरे कान से निकाल देता था। लेकिन कभी-कभी वही प्रलाप प्रतिकूल वातावरण पाकर संघर्ष का रूप धारण कर लेता था। यही बात आज हो गई थी। चाँद पूरी दोपहर सोना से एक शब्द भी नहीं बोला, हालाँकि उसने कई बार विनती की। वह समझ नहीं सकी, आखिर आज उसने ऐसी कौन सी विषम तथा जघन्य बात कह दी जिससे वे रूठ गए और अरविंद बाबू घर छोड़ कर चले गए। वह तो यदा-कदा ऐसा कहती ही आई है।

सहसा सोना के मस्तिष्क में एक विचार बिजली की तरह तड़प कर चला गया। वह आन्तरिक घृणा और अपमान से जल उठी। अपने आपको डाँट कर कहने लगी कि वह खुद नादान और भोली है वर्ना इस घर में ऐसा कौन अक्ड़ वाला है जो अभिमान से उसके सम्मुख मस्तक ऊँचा कर सके। सभी उसके पति धन पर आनन्द करने वाले

है। आज जब उसने अपने पिता से रुपये मंगाने बन्द कर दिए तब सभी उस पर रंग जमाने लगे उससे उखड़ी-उखड़ी बातें करने लगे, यहाँ तक कि निम्मू के पिताजी भी। वह विक्षोभ के मन में उग्र हो उठी। वह विद्रोह की भावना लिये उठी जहाँ चाँद व्यथा से भाराक्रांत होकर तन्द्रिल अवस्था में सोया हुआ था वहाँ उसने खड़ी होकर एक हुंकार भरी और अपने सोने के कमरे में आकर रूठी रानी की भाँति जागृतावस्था में भी नेत्र बंद करके सो गई।

सन्ध्या के आँचल में बंधा गुलाल क्षितिज का स्पर्श कर समृति पर बिखर पड़ा। प्रकृति की इस अनुपम छटा का यह दृश्य बड़ा ही मनोरम प्रतीत हो रहा था। अरुणिमा ही अरुणिमा स्वर्णिम निर्झर सौन्दर्य का स्रोत एक अलौकिक आभा।

निम्मू छत पर बैठी बैठी इस आभा का रस ले रही थी। उसकी स्थिति बड़ी विचित्र थी। चाचा घर छोड़ कर चले गये पिताजी दिन भर से सोये हुए हैं माँ सोती-सोती बड़बड़ा रही है क्या तमाशा है? इसे उसकी सरल बुद्धि और नम्र-स्वभाव समझने में सर्वथा असमर्थ रहा। फिर भी उसने साहस करके माँ के कमरे में प्रवेश किया। सोना अब भी चादर से अपना तमाम शरीर ढक कर सोने का बहाना कर रही थी। निम्मू ने नकित होकर पूछा माँ, माँ चाचाजी कहाँ हैं?

सोना भड़क कर बोली 'जहन्नुम में।

निम्मू भय से काँप कर रह गई।

निम्मू वहाँ से उठ कर वापस चाँद के पास आ गई। चाँद भी सोने का बहाना किए हुए था। निम्मू ने और अधिक शंकित होकर पूछा बाबूजी यह जहन्नुम क्या होता है ?'

चाँद ने निम्मू की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा मुस्कराया और हँस कर बोला "तू क्यों पूछती है ?

माँ कहती है कि चाचाजी जहन्नुम में चले गए।"

चाँद आगबबूला हो उठा। बिगड़ कर बोला "जहन्नुम तेरा चाचा

नहीं, तेरी माँ जायगी।"

"ओ जी मेरा नाम लिया तो ठीक नहीं रहेगा" कमरे में प्रवेश करती हुई सोना गज कर बोली।

'क्या कर लोगी ?"

।" सोना तड़प कर रह गई।

पीटोगी ?" चांद के ओठों पर अनायास ही हँसी आ गई। वह हसता हुआ निम्मू से बोला, भाग कर मेरे वाली छड़ी तो उठा ला, तेरी माँ आज मुझे पीटेगी।'

निम्मू को भी मजाक सूझा। वह भाग कर छड़ी उठा लाई। चांद ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को दबा कर अपने हाथ की छड़ी सोना के हाथ में थमा दी। सोना त्रस्त हो उठी। व्यंग का प्रहार उससे अवश कर गया। छड़ी को निम्मू की ओर उठाती हुई तड़प कर बोली 'मैं तेरी हड्डी-पसली एक कर दूंगी, ठहर ।" और देखते-देखते निम्मू नौ-दो ग्यारह हो गई।

'सोना !' यकायक चांद गम्भीर हो गया। उसने उसका पल्लू पकड़ लिया 'यह बचपन और गदी आदतों को छोड़ कर मेरी बात सुनो मैं अरविंद को मना कर लाता हूँ और तुम खाना बना कर रखो।'

मुझ से खाना नहीं बनेगा। सोना यह कह कर हठात चांद की आँखों से ओझल हो गई। उसके कदम रसोईघर की ओर बढ़ रहे थे।

रसोईघर में चूल्हा जलाने के बाद सोना का गुस्सा बिलकुल ठंडा हो गया और वह चिन्ता से व्यथित हो उठी। उसे महसूस हो रहा था कि उसने अरविंद पर जो व्यंग्य कसे हैं वे तीर से कम नहीं हैं बिलकुल ही शिष्टता और इन्सानियत के विरुद्ध हैं।

एक बार तो उसने सहज आत्मीयता का भी त्याग करके यहाँ तक कह दिया था कि अब इस घर में खाना खाओगे तो कुत्ते का ।

सोना ने अपने मुँह के आगे हाथ रख लिया। वह विचलित हो उठी। मस्तिष्क में संघर्ष का तूफान-सा उठने लगा। कही हुई बातें बार-बार उसे याद आने लगीं।

अरविंद जी! बड़े भाई ने बी० ए० पास करवा दिया अब कुछ आप भी करके दिखाइए न ?

व्यंग तीखा था आहत करने वाला। अरविंद से नहीं रहा गया। कठोर एवं क्रुद्ध स्वर में बोला जमाना आने दो भाभी आकाश के तारे भी तोड़कर ले आऊँगा। किसी भी तरह महान् बन कर दिखा दूँगा।

हमारे मरने के बाद ?' भयानक प्रश्न!

नहीं भाभी, तू तो मेरी माँ के समान है। तुझे मैं सुख देकर ही मरूँगा। आज प्रतिज्ञा करता हूँ तुम्हारे सामने कि अपने मन का इन्सान मार करके भी कुछ बनूँगा। उसका कंठ भर आया। आँखें सजल हो उठीं। इस संसार में सभी बंधन अब द्वारा देख जा रहे हैं। तुम्हें पैसा चाहिए, सखी को पैसा चाहिए मित्र को पैसा चाहिए पैसा पैसा पैसा! भाभी, बिना पैसे के जीवन व्यर्थ लालसा व्यर्थ और प्रीत व्यर्थ।'

फिर यह जादुई करिश्मा जल्दी क्यों नहीं दिखला देते ? आपको रोकता कौन है ?

सच कहती हो भाभी, मेरी माँ यदि जीवित होती तो मुझे जरूर रोकती। मेरी मजबूरियों और बेकारी पर रहम खाकर सीने से चिपका लेती पर गीले वस्त्र पर खुद सोकर मुझे सूखे पर सुलाने वाली मेरी माँ कहाँ ? अरविन्द की आँखों में अश्रु छलछला आए।

सोना चिहुँक पड़ी। निम्मू दौड़ी-दौड़ी आई।

'क्या हुआ माँ ?' वह घबरा उठी थी।

'जा अरविन्द को बुला कर ले आ!

'पिताजी गये हुए हैं।

'नहीं तू भी जा ? मैं उसके बिना नहीं रह सकती। वह मेरा बच्चा

है। हाय री यह मैंने, क्या कर दिया ?'

तब सोना को जिन्दगी के अभाव कष्ट और पीड़ाए सभी की सभी काटने दौड़ पड़े।

और वह मानसिक-संघर्ष में डूब गई।

* * *

३

अरविन्द दिन भर शहर की सड़कों, बागीचों एवं होटलों में घूमता रहा पर वह कुछ निर्णय नहीं कर सका कि वह कहाँ जाय। वसे उसके कई ऐसे मित्र थे जिन्होंने मित्रता की शेखी बघारते हुए उसे कई बार कहा था कि समय पड़ने पर तुम्हें पता चलेगा कि हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं ? और आज इस 'क्या' का स्पष्टीकरण करने का समय आ गया था। वह इस क्या में छिपे अपनत्व की अतल गहराई की थाह से भिज्ञ होना चाहता था। अतः वह दिनेश के घर चला।

दिनेश का नाम वसे दमड़ीप्रसाद था। लेकिन पन्द्रह अगस्त १६४७ के पश्चात भारतवर्ष जसे ही आजाद हुआ, परतन्त्रता की शृंखलाएं जसे ही खड़-खड़ हुईं, वसे ही धनी बाप के बेटे ने अपना रूप बदला। उस समय तक बेटा हाई स्कूल की परीक्षा पास कर चुका था, अतः अपने ही मोहल्ले में उसने स्वतन्त्रता समारोह का आयोजन किया और उसमें उसने कविता पाठ किया था।

लोगों ने तालियाँ बजाई। कवि को प्रोत्साहन मिला। चाहे भाव न हो चाहे भाषा पर श्रोताओं ने अत्यन्त धैर्य से काम लिया पर उसे निरुत्साहित न करके उत्साहित ही किया। फलस्वरूप आज माँ भारती को एक और वरद (!) पुत्र मिल गया। प्रतिभा विकसित होती गई और दमड़ीप्रसाद ने तुरन्त एक मासिक पत्र निकाला। इस मासिक पत्र का नाम था 'दिनेश' और सम्पादक थे—दमड़ी प्रसाद 'दिनेश'।

पिता जी मुझसे सख्त नाराज हैं। इस पत्रकारिता में सिवाय घाटे के फायदे का नाम नहीं। फिर भी तुम भरोसा रखो कि मैं तुम्हारी पूरी सहायता करूँगा। तुम मुझसे दो दिन बाद मिल लेना।'

'और दो दिन मैं कहाँ जाऊँगा?' अरविंद ने तनिक रुष्ट होकर कहा।

'अपने घर।'

'मेरा भी कोई घर है?' अरविंद का गला भर आया। 'अब मैं उस घर में तभी पाँव रख सकता हूँ जब मैं समर्थ हो जाऊँ। मैं कुछ उपार्जन करने लगूँ। कितना वह आदमी कितना दीन होता है जो दूसरों के टुकड़ों पर पलता है। क्या तुम मुझे कुछ काम दे दो। मैं तुम्हारा जिन्दगी भर अहसान नहीं भूलूँगा।'

दमड़ी ने मन ही मन सोचा कि गले में फाँसी का फंदा लग ही गया। अतः उसे आश्वासन देता हुआ अत्यन्त मधुर स्वर में बोला, 'अरविंद! कम से कम दो दिन तक तो तुम्हें कहीं और रहना ही पड़ेगा। इसके बाद मैं कहीं न कहीं तुम्हारा प्रबन्ध कर ही दूँगा। तुम नहीं जानते कि आजकल मैं किस संकट में हूँ।'

अरविंद क्रोध से जलभुन उठा। मित्रता का ढोंग भरने वाले का मान रूप कितना विकृत और खोखला होता है यह उसने आज जाना। वह स्तब्ध होकर वहाँ से चल पड़ा।

नील निलय में श्वेत फूलों की माला के सदृश आकाश गंगा की धारा मन को मोहने लगी थी। एक शांत वातावरण संसृति पर छा रहा था। गलियाँ सुनसान हो रही थीं। बड़े चौक का अंधा भिखारी अब भी किसी की हल्की पदचाप सुन कर कह उठता था, 'बाबू, एक पैसा।'

बड़े चौक के पार एक नाला था, गंदे पानी का नाला। सड़ाँध और छोटे-मोटे जीव-जंतुओं से भरा पूरा। म्युनिसिपलिटियों के सफेद और स्वच्छ वस्त्र वाले दृष्टिप्रिय कमिश्नरों के विपरीत यह नाला उतना ही घिनौना और काला था कि यहाँ के गरीब निवासियों का आजकल

यहाँ रहना दूभर हो गया था। यहाँ के असभ्य निवासी उन कमिश्नरों की इज्जत पर धूल उड़ाते हुए कभी-कभी बड़ी असभ्य बातें कह देते थे, जो उन्हें सभ्यता शिष्टता का ख्याल करके नहीं कहनी चाहिए थीं। वे कहते थे कि यह कमिश्नर जब बोर्ड का चुनाव होता है तो सब घट या पालतू कुत्ते की तरह पूंछ हिलाते आते हैं प्रार्थना और प्रतिज्ञायें करते हैं, और बाद में एक दत्तक पुत्र या गर मोहल्ले के कुत्ते की तरह उनकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखते।

कोई-कोई आवेश के वशीभूत होकर उन्हें चोर-लुटेरा तक कह देता था जो इन कमिश्नरों की इज्जत के विरुद्ध होता था। भला इन्हें चोर लुटेरे कहना कहाँ तक उचित है? यह तो मनुष्य की प्रकृति है कि स्वार्थ पड़े तो गधे को भी बाप बना ले।

फिर भी इस नाले के इर्द गिर्द रहने वाले मनुष्य कितने सहिष्णु थे कि दम घोट देने वाली उस बदबू को वे अमृत समझ कर साँसों द्वारा पी रहे थे। गरल पीकर जिस प्रकार शिवजी मृत्युञ्जयी बन गए थे, ठीक उसी प्रकार ये गरीब निवासी सड़ांद पीकर मृत्युजयी तो नहीं कम से कम मंदिर के उस महादेव की श्रेणी में अवश्य आ गए थे जिसकी वेदी की नाली में अनाज के दाने सड़-सड़ कर इसी प्रकार की निकली दुर्गन्ध उत्पन्न कर देते हैं और बेचारा महादेव चिरन्तन धैर्य धारण किये बैठा रहता है।

अरविंद उसी नाले की ओर बढ़ा जा रहा था।

रात्रि का तिमिरांचल तारों के सुमनों से अत्याकर्षक लग रहा था। उसके बीचोंबीच चमकता चाँद उस आँचल की श्री-वृद्धि कर रहा था। सुषमा का साम्राज्य-सा छा रहा था। कभी-कभी प्रकृति की इस अनुपम क्रीड़ा को देख कर अरविंद को भावातिरेक हो उठता था कि प्रकृति ही विनाशगम्य भौतिक तत्वों की सम्पूर्णता है।

धीरे धीरे खिसकते नगर की रास्ते की दसी हवा के झोंके से बार बार असली-बकली बीन पड़ी। अरविंद न जाने क्यों हँस पड़ा। जरूर

उसे इस बत्ती के भभकने और जलन पर हँसी आई होगी। सोचता होगा जैसी सरकार वसी बत्ती।

तभी दो आदमी गम्भीरतापूर्वक बातचीत करते जा रहे थे। उनके चेहरों पर भेदभरा औत्सुक्य छाया हुआ था।

"यह किसी माँ के लक्षण हैं ?" एक बोला।

'नहीं जी यह तो साक्षात हत्यारिन है।

' बच्चे को नाले में फेंक गई।

अरविंद उस ओर द्रुतगति से भागा। उसके दुखित मन में यह विचार बार-बार मर्मान्तिक व्यथा के समान उठ रहा था कि एक वत्सला अपने वात्सल्य को सड़ादवार नाले में कैसे फेंक गई ?

वह नाले के पास गया।

एक वृद्ध हाथ में लालटेन लिये भद्दी भद्दी गालियाँ दे रहा था। ऐसा विदित होता था कि उसके अंतर का आक्रोश बार-बार उसके हृदय-पटल पर भू-लुंठित होकर चीत्कार-सीत्कार कर रहा है।

अरविंद एक देर तक वहाँ निस्तब्ध विमूढ़ खड़ा रहा और अंत में उसने बड़ी कठिनता से एक बुड्ढे से पूछा 'बाबा, क्या बात है ?"

यह प्रश्न पूछ कर उसने जैसे उस श्रम-क्लांत क्लांत वृद्ध के वर्षों से विदीर्ण मानस पर गहरा आघात कर दिया हो। जलती हुई आँखों से अरविंद को देख कर उसने कहना शुरू किया 'बात क्या है भया घोर कलियुग आ गया है कलियुग ! मनुष्य मनुष्य को कीड़ा-मकौड़ा समझने लगा है। शास्त्रों में ठीक लिखा है कि कलिकाल में आदमी आदमी को खायगा। विश्वास न हो तो चलो अपनी आँखों से देख लो।" इतना कह वह वृद्ध अरविंद को घसीट कर उस जगह ले गया जो बदबू से भरे आदमियों का माथा भन्ना देती थी।

'परन्तु, जरा लालटेन पकड़ना तो। उस बुड्ढे ने दूसरे वृद्ध से कहा।

परमु से लालग्न लेकर वह न उसे नाले की ओर भुकाया। अरविंद न चोल कर अपनी आँखें बन्द कर लीं।

देखा भया, इस कलियग कहते हैं, कलियुग। घोर पाप हो रहा है घोर पाप। और इस वद्ध की आँखों में दारुण अवसाद की चिनगारियाँ भड़क उठीं।

अरविंद कुछ आश्वस्त हुआ। उसने अपने हाथ में लालटन ली। गौर से देखा—किसी कठोर और हृदयहीन माँ का कोमल शिशु! कोमल इतना जितना कि फूल, पर ओह!—उसने एक आह छोड़ी और नाले से कुछ दूर पर था कर अन्धेरे में बैठ गया।

अब अम्बर में उन्मत्त नभ-गंगा प्रयसि सी चन्द्रमा से आलिंगन करने के लिए तत्पर जान पड़ती थी और चन्द्रमा तारों की बारात लिए खड़ा खड़ा मुस्करा रहा था। एकाएक मेघ शिशु ने उन्हें अपने आवरण में ढक लिया। उस का ढकना ऐसा जान पड़ा जैसे चन्द्रमा मेघ शिशु की यवनिका में नभ गंगा के सीमन्त में सिन्दूर डाल रहा हो। चन्द क्षण में ही पवन ने उन निरावरण कर दिया। सृष्टि ने देखा होगा—जाह्नवी और चन्द्र का महामिलन।

कुत्ते की भौं भौं ने अरविंद के विचारों की तन्मयता को भङ्ग किया। वह चौंक कर बड़बड़ा उठा "ओह! वह शिशु? कितना विकृत और कितना बीभत्स? ममता ने ममत्व के शोणित से सन्तोष प्राप्त किया हो या अपने जीवन के दुख का अन्त किया हो पर ये दोनों बातें घृणास्पद हैं। यह वर्तमान युग की घृणित विशेषता है। इस रक्त रंजित सन्तोष और दुख के अन्त में घृणा और जुगुप्साहीन भावना की उत्पत्ति है जो दिन प्रतिदिन हृदय-पट पर अंकित हो कर अपराधी के वास्तविक सुख और दमन को छीनती रहती है। एक ऐसी दारुण वेदना का सृजन करता है जो इस हत्यारिन माँ के दुष्प्य संघर्ष को भयभीत व कायर बना देगी और वह माँ सदैव के लिए समाज तथा उस पापी के हाथ बिक जायगी जिसके खून से इस शिशु का जन्म हुआ है।

अरविंद ने दृढ़ता के साथ अपने आप से कहा गलत परम्परा और उस का समाधान आदमी को पशु बना देता है।

अरविंद कुछ देर तक फिर मौन रहा। परन्तु मानस के सदृश चीख रहा था 'मैं कहता हूं अब प्रलय होने वाली है। धरती इस पाप की गठरी को अब नहीं उठा सकती।'

वास्तव में परमा सच ही कहता है।' अरविंद आवेश में उठ खड़ा हुआ 'वसुन्धरा विवर्ण हो उठी है। बच्चे की हत्या वास्तव में अमानवीय हृदय की सब से निकृष्ट परिधि है। मां अपने बच्चे की हत्या कर दे? हत्या करके नारी के हृदय का परिणत नगापन बताने के लिए उसे सड़ांद के नरक में फेंक दे। उसकी फूल-सी पखड़ियों के समान तन को अपने संहार पञ्जों से चीर फाड़ दे। ओह! नारी का यह रूप कितना रोमांचक और हृदयभेदक है! पापाणी दानवी।'

सहसा अरविंद को महाभारत की कुंती याद हो आई। सूर्य के प्रति उसकी प्रगाढ़ प्रीत भरी तपस्या और भास्कर का महादान 'कर्ण के रूप में कुंती को प्राप्त होना धर्म और आवेग की महानता भले ही हो? अन्य धार्मिक निष्ठावान किसी प्रकार की टिप्पणी करने वाले को नास्तिक कह कर भले ही हार्दिक शान्ति पा लें लेकिन सत्य गुप्त नहीं रह सकता और पाप छिपाया नहीं जाता इस उक्ति से शायद सभी ही सहमत होंगे। यही सत्य आज अरविंद के उच्छ्वसित मन में व्यथा का संचरण कर रहा था कि क्या कुंती ने कर्ण को फेंक कर अपने को बदनाम होने से बचा लिया और इस शिशु की मां ने बच्चे की हत्या कर के अपने को मुक्त जान लिया? पर इतिहास गवाह है कि—न तो कुंती को शान्ति मिली थी—कर्ण को त्यागने पर और न इस मां को मिलेगी—बच्चे की हत्या करने पर। क्योंकि खून वास्तविक मृत्यु के बाद पानी बन जाता है और हम उसे भूल जाते हैं वर्ना खून खून को कभी नहीं भूलता, कभी नहीं भूलता।

अरविंद बावला हो उठा। वह क्या करे?

तभी पुलिस के दो व्यक्ति आए और उस बच्चे को उठाकर ले गए।

तमाशा खत्म हो गया।

अरविंद की आँखों में अब नींद समान लगी थी। उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को सम्भाला और अन्त में वह अपने भाई के मित्र वकील धीरेन्द्र कुमार के बंगले पर पहुँचा।

उसने दरवाज़ा खटखटाया।

छोटा-सा बंगला। आगे दालान में बाग और उस बाग में चाँदनी में चमकते पीले, लाल और सफ़ेद फूल।

दरबान ने छड़दार लोहे के बने बड़े फाटक को खोले बिना ही पूछा "कौन है रे ?

'मैं हूँ अरविंद, गोमू ?"

"ओह अरविंद बाबू अपने चाँद बाबू के छोटे भया आइए आइए,' कहते-कहते उसने फाटक खोल दिए।

"गोमू तुम्हारे बाबू सो गए ?"

"हाँ क्यों जगा दूँ ?'

'नहीं, मुझे सोने के लिए एक दरी चाहिए और ओढ़ने को चादर, क्या मिल सकती है ?

"क्यों नहीं ?' कह कर गोमू ने तुरन्त अपनी कोठरी के आगे दरी बिछा दी और अरविन्द बिना कुछ बोले ही उस पर सो गया।

  

४

रात सारा बूथन को आतुर था। प्राची की मुखरित होती हुई अरुणिमा सुहागिन की माँग का सिन्दूर लग रही थी।

शची ने अल्हड़ता से बगीचे के एक फूल को तोड़ा। जैसा कि अक्सर जवानी में युवतियाँ एक विचित्र अल्हड़पन की शिकार होती हैं और वे

निष्प्रयोजन ही इस प्रकार की हरकतें करती रहती हैं। फूल को तोड़ कर शची ने उसको सूंघा, फिर उसे लापरवाही से सोए हुए नौकर पर फेंक कर अपने ही पावों से मसल दिया।

'गोमू अरे ओ गोमू। उसने झपट कर चादर को खींचा। प्रकाश में उसने सोए व्यक्ति का चेहरा देखा तो हतप्रभ रह गई। सकपका कर कह उठी 'ऊंह यह तो अरविन्द है।'

पल भर के लिए वह गम्भीर बनी रही और बाद में उसने मसले हुए फूल से उसके तन मन को गदगुदाना शुरू किया। अरविंद के नेत्र खुल गए। सवेरे-सवेरे उसके सम्मुख कोटरगामिनी नेत्रों वाली सद्यःयौवना थी। उसने भय भरी आंखों से उसकी ओर देखा और देखते-देखते उसके युगल अधरों पर स्मित रेखाएं नाच उठीं।

'तुम यहाँ कैसे ?' शची ने पूछा।

भैया से झगड़ आया हूं।'

क्यों ?"

भाभी तानें जो देती हैं ?"

ओह ! घूमने चलोगे ?' शची जानती थी कि सोना से अरविंद का झगड़ा सदा ही चलता रहता है।

'क्यों नहीं ?"

"उठो।'

अरविन्द शीघ्रता से उठा और शची के साथ हो लिया। इस समय वह स्वप्नाविष्ट सैनिक जो बारूदों के ढेर के निकट खड़ा है लेकिन अपनी पत्नी का हंसता हुआ चेहरा याद कर उन्मत्त हो जाता है क्षण भर के लिए समस्त संकटों को विस्मृत करके सुख का आवास बन जाता है ठीक उसी प्रकार रात की वेदना और कष्ट से मुक्त हो शची के संग अपने को सुखागार समझ रहा था।

//युवकों की यह स्थिति भी बड़ी मजेदार होती है। युवती का संसग

उनमें स्फूर्ति और उत्साह का समावेश कर देता है। वे अपने को गौरवान्वित और भाग्यवान समझने लगते हैं।

अरविन्द सोच रहा था मेरे दुस्वप्न का अन्त हो रहा है। वकील साहब मुझे अवश्य ही किसी उपयुक्त काम में लगा देंगे। शची कुछ-कुछ मेरी ओर आकर्षित है।

तुम चुप क्यों हो?

"नहीं तो।

वह खिलखिला कर हंस पड़ी, 'जरूर तुम्हें गहरी पीड़ा है अरविन्द। एक बात बताओगे?'

पूछो।"

'परसों चाँद भैया कह रहे थे कि अरविन्द शची से प्यार करता है। क्या यह सच है?

कुछ-कुछ।'

"मुझे यह छायावादी उत्तर पसंद नहीं है।' उसके बंकिम नयनों में रोष की हल्की चिनगारियाँ दीख पड़ीं।

छायावादी है या रहस्यवादी यह मैं भी नहीं समझता। मैं साफ तौर पर इतना ही कह सकता हूं कि तुम मुझे अच्छी लगती हो तुम्हारा साथ मुझे अच्छा लगता है लेकिन इसके साथ यह भी सही है कि अभी वह स्थिति नहीं आई है कि मैं तुम्हारे बिना अपने आपको अधूरा समझूं।"

"और यदि वह स्थिति उत्पन्न हो गई तो?"

"तो मैं तुम्हें प्राप्त करने का प्रयास करूंगा। हालांकि मैं इन महान करतूतों से नितान्त अपरिचित हूं कि एक सम्पन्न घराने की सुनिश्चित कन्या को अपने प्रेम-जाल में किस खूबी से फाँसा जाय कि वह फिर न निकल सके? मैं उन युवकों के आधुनिक हथकण्डों से भी परिचित नहीं जो अपनी प्रेयसियों को मछली की तरह तड़पाना जानते हैं। न ही मैं नाम्पिक-इश्रआत में अपनी प्रेयसि को भड़का कर नाटकीय ढंग

से उन गद्-गद्‌ाद भावों को बोल सकता हूं जिन्हें अवसर नई प्रमिकायें ही क्यों, समस्त प्रेम-इच्छुक युवतियां बड़े चाव से सुनती और पसन्द करती हैं। मैं इस भाग का बिल्कुल नया और भोला छात्र हूं नमो! इसीलिए मेरा प्यार परवाना नहीं बन सकता फलता-फूलता मुरझा जाता है, क्लाइमेक्स पर नहीं पहुंचता।

मकानों का क्षेत्र समाप्त हो चुका था। खुले मदान की खुली हवा के झोंकों ने नमो की श्यामल अलकों पर से उसकी साड़ी के छोर को उड़ा दिया था जिससे उसका रूप मुखरित जान पड़ा। उसके अभिराम आनन पर चवल मत्स्य के समान चपल नयन तरते हुए जान पड़े। अरविन्द उसे अनिमेष दृष्टि से देखता रहा।

इस शिक्षित समाज में एक प्रकार की ऐसी प्रमिकायें होती हैं जिन्हें अपने प्रेमी की भोली बातें बहुत प्रिय होती हैं। नमो वसी ही थी। उस अरविंद की बातों में रस जान पड़ा, अत वह बोली 'यदि तुम आधुनिक समाज के प्रचलित नियमों से अनभिज्ञ हो तो तुम एक सफल व्यक्ति नहीं बन सकते। सोसायटी मूव' के तरीके ही तुम्हें उच्च वर्ग में जो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अनुकरण कर रहा है, एक दिन चस्प और आकर्षक 'हीरो' बना सकते हैं, अन्यथा तुम सदा ही पुच्छल तारे की पूंछ की तरह महत्वहीन ही बने रहोगे।'

अरविंद कुछ देर मौन धारण किए चलता रहा। उसके ललाट की सलवटें उसके अन्तर के गम्भीर चिन्तन की प्रतीक जान पड़ रही थीं। वह कुछ विचलित-सा भी जान पड़ा फिर बोला, नमो! इस युग ने व्यक्ति के मान-दण्ड बदल दिए हैं। वह मानवीय भावनाओं से यांत्रिक चेष्टाओं की ओर अधिक बढ़ गया है। फिर भी मैं अपने बारे में इतना ही कह सकता हूं कि मैं केवल प्रेम कर सकता हूं प्रेम। और वह भाव विह्वल हो उठा, 'प्रेम भी ऐसा जिसे हमारे शास्त्रों ने पूज्य कहा है शुचिता का आगार और महिमाधर माना है। तुम्हीं बताओ न वह मनुष्य कितना महान है जो अपने आराध्य को सर्वस्व अर्पण करके उसे

आजीवन पूजता है अब कि वह हर दृष्टि से पूजने लायक भी नहीं है। क्या यह मानव त्याग का परम आदर्श नहीं कि हम मानवता के लिए अपनी वासना का दमन कर लें ?"

शची मुस्करा पड़ी। वह नीम के नीचे उठती हुई बोली, 'कौन देवता है और क्या त्याग है, इनकी मान्यतायें सदा बदलती रहती हैं। अरविंद यदि मैं तुम्हें कहूँ कि मुझे पाने के लिए तुम महान् बनो, ऐसे महान् नहीं जिस की यश पूजा करे पर ऐसे महान जिसे हमारा जग माने। मेरा भाई मेरी भाभी और मेरे सम्बन्धी महान समझें। तो तुम क्या महान् बनने का प्रयास नहीं करोगे ?

"यह बहुत बड़ी बात है ?' अचानक उसके चेहरे पर उदासी दौड़ गई जैसे वह भावन की इन बड़ी गुत्थियों में इस तरह उलझता गया कि उसे यह भी याद नहीं रहा कि वह बिल्कुल बेकार है। उसके पास इतना भी पैसा नहीं है कि वह दो जून पेट भर खाना भी खा सके।

'तुम एकाएक उदास क्यों हो गए ?' शची ने आश्चर्य से पूछा।

'मैं सोच रहा हूँ कि व्यक्ति कल्पना के सन्तोष में इतना लीन क्यों हो जाता है कि वह यह भी भूल जाता है कि इस जगत में उसका अपना अस्तित्व क्या है ?

'शायद तुम्हें कल की बातें याद आ रही हैं" शची ने उठते हुए कहा।

'हाँ चाँद भया की दशा देख कर मेरी आत्मा कराह उठती है। शची, मनुष्य को देवता के रूप में यदि देखना चाहती हो तो चाँद भया को देखो। भ्रातृत्व की भावना का सच्चा रूप और उस पर उत्सर्ग की कामना, ये दोनों उनके अंग-अंग में कूट-कूट कर भरे पड़े हैं। मैं यहाँ नहीं रहूँगा। यहाँ रहने पर चाँद भया को बड़ा कष्ट होगा। वह एक-दम रुग्ण और व्यथित हो उठा।

'क्यों ? क्या तुम अपने घर नहीं जाओगे ?'

'नहीं, घर से जो इरादा लेकर निकला हू, उसको पूरा किए बिना जाना मुझे आत्म प्रवचना सा लगता है।

शची को आघात सा लगा। कुछ विचार कर बोली 'फिर मुझे प्राप्त करने की प्रतिज्ञा का क्या होगा ? अरविंद मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हू। और प्रयति के मन में तब कितना कष्ट होगा जब उसका प्रमी उसे छोड़ कर अनिश्चित काल के लिए कहीं दूर चला जाए। मैं तुम्हें नहीं जाने दूगी।"

'इतना अधिकार है मुझ पर ?"

'हां।

"शची !" अरविंद ने झपट कर उसका पल्लू पकड़ लिया। शची के स्तब्ध चेहरे पर नवीन यौवन का एक सद्य जाग्रत सुधा-मूर्ति अकस्मात दौड़ गई। उसने अनुभव किया और वह सकोच समेत स्थिर हो गई। उसने मन ही मन सोचा, ओह ! वह कितनी भावुक हो गई है ? उसे इतनी शीघ्रता नहीं करनी चाहिए।

और अरविंद उसकी जड़ता का तात्पर्य समझ गया। उसका पल्लू छोड़ कर पश्चाताप भरे स्वर में बोला, शची ! मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि मैं इस प्रेम मार्ग का नया छात्र हूँ। मुझ से अपनी प्रयति से बर्ताव करने में काफी भूलें हो जाती हैं। सभ्य-सुसंस्कृत समाज में प्रेम करने का सर्वोत्कृष्ट तरीका क्या हो सकता है इस से मैं सर्वथा अनभिज्ञ हूँ।'

शची कुछ नहीं बोली, वह चुपचाप चलती रही। उसके समक्ष उस का अपना घर घूम रहा था जहाँ व्यक्ति की भावना से पूंजी को अधिक महत्व दिया जाता है।

भारतवर्ष में पाश्चात्य संस्कृति का जो प्रवाह चला आ रहा है, उस ने यहाँ की मानवता को पीड़ित और जर्जरित किया है। लेकिन उसका बहिरंग इतना सुन्दर है कि यहाँ का कोई भी प्राणी सहजता से उसकी ओर आकर्षित हो कर धर्म कर्म और नैतिकता का नए सिरे से मान दण्ड गढ़ने लग जाता है। बड़ी-बड़ी शानदार कारें और उनमें पति के

समक्ष पत्नी का अन्य व्यक्ति के साथ प्रमालाप सुरापान और रोमांस का ऊपरी और छिछले रूप का प्रदर्शन। यह सब आखिर क्या है? मानवीय भावनाओं पर आघात नहीं? व्यक्ति कैसा भी हो पर उस व्यक्ति में एक बात का होना बहुत जरूरी है कि वह बाह्याडम्बर में प्रवीण हो, उसके पास धन राशि का अपार भण्डार हो और सैर के लिए एक सुन्दर कार हो।

शची का सारा घर इस सभ्यता के सागर की अतल गहराइयों में गोते खा रहा था। शची भी इन्हीं नई सभ्यता-जनित मान्यताओं से प्रभावित थी। अरविंद के प्रति उसका कोई लगाव नहीं था और न ही उसका तनिक प्रेमाकर्षण भी, बल्कि इस प्रकार की बातों और अभिनय को यह मनोरंजन का एक अंग समझती थी। हाँ, कभी-कभी वह शंकाकुल अवश्य हो उठती थी। यह शंकाकुलता उसे अरविंद की उस कटूक्ति का स्मरण करा देती थी जो यदा-कदा उसकी उपेक्षा पर वह उसे हँसी हँसी में कह देता था, 'जिस प्रकार वन की गायें नित्य प्रति नई-नई घास खाती हैं ठीक उसी प्रकार तुम पुरुषों को चाहती हो, अथवा उनके साथ प्रेम का अभिनय करती हो। प्रिय और अप्रिय तुम्हारे लिए कुछ नहीं है। फिर तुम्हारे इस आधुनिक समाज में जहाँ सबस स्वतन्त्र है, जहाँ केवल पूँजी की महत्ता है जहाँ दिखावे का बोलबाला है वहाँ मानवीय मूल्यांकनों का क्या महत्व हो सकता है? यह कैसी अनोखी बात है शची कि इस वर्ग का बाह्य पहलू कितना सुन्दर व मनोरम है कि आदमी का भोला और मृदुल हृदय उसमें अपने आपको एकाकार करने के लिए लालायित हो उठता है। लेकिन जिस प्रकार एक अद्वितीय सुन्दरी निरावरण होने पर घृणास्पद लगती है और शील व्यक्तियों की आँखों को संकोच से झुका देता है उसी प्रकार जब इस समाज का सुनहरी पर्दा हटता है तो आदमी इसके नंगेपन से भयातुर हो उठता है। तब इस समाज की सारी कोमलता भयंकरता में बदल जाती है। इस समाज में किसी मनुष्य के गुण विशेष का आदर नहीं है बल्कि

यह छल-कपट या अनकानक तरीकों से कितने अधिक प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित करके एश करा सकता है यही उसकी महानता का परिचय और प्रमाण है। और यह महगी और दुष्ट महानता प्रत्येक साधारण व्यक्ति के लिए सुलभ नहीं है।

अब दोनों अपन-अपन विचारों में तल्लीन चले जा रहे थ। पूरब का सतेज प्रकाश सष्टि को आलोकित करने लग गया था। एक ग्वाला हाथ में दूध की बाल्टी लिए द्रुतगति से भागा जा रहा था। वह नग पाँव था इसलिए बार बार वह धरती की ओर देखता था। धरती पर कंकड़ बिखरे थ जो उसके पाँवों में चुभ रहे थ।

शची ने उत्फुल होकर मौन भग किया, अरविंद, यदि तुम यहीं रहना चाहो तो मैं तुम्हारा प्रबन्ध करा सकती हू।

'मैं यहाँ रहना नहीं चाहता, फिर तुम्हारा सामीप्य दुर्भाग्यवश दुखकर हो जाय तो ?'

'कैसे ?

'तुम्हारे समाज की औरतों में वही आदमी सभी प्रकार से श्रेष्ठ है जिसके पास दौलत है।'

"तुम्हें अविश्वास का रोग लग गया है। मैं उन औरतों में नहीं हूँ अरविंद ! मैं वास्तव में तुम्हें चाहती हू। उसन बड़ विश्वास क साथ कहा पर तो भी स्वर का व्यंग छिपा नहीं रह सका।

यह मेरा सौभाग्य है। तभी मैं जरा डर कर हल्का विश्वास लेकर अपने सब आत्मीयों से तुम्हारे प्रम की चर्चा कर देता हूँ।'

'फिर तुम कहाँ जाओग ?

'कहीं भी पर मुझे कुछ रुपय कज देम पड़ेंग।'

"कज क्यों ?' मैं तुम्हें प्रम करती हूँ ऐसे ही दे दूँगी। अरविंद को उसके स्वर में अहम का तीखापन जान पड़ा।

'नहीं ! यह मैं बार बार भूल जाता हूँ कि तुम मुझ प्यार करती हो। भविष्य में इसक लिए अधिक सावधान रहूगा।

अब मैं तुम्हें एक आखिरी बात कहना चाहती हूँ। उसने दृढ़ता से कहा, "यदि तुम कभी समय हो तो इस प्रेम-पुजारिन को अपने चरणों में स्थान देना।" बिल्कुल नाटकीय-संवाद थ नाचो थे।

'यह तुम्हारे पर अवलम्बित है। कदाचित मैं इस संक्रान्तिकाल में समर्थ होऊ ही नहीं।"

उसने चौंक कर जवाब दिया, यह नहीं हो सकता। मुझे विश्वास है कि एक दिन तुम बहुत ही लोकप्रिय होओगे, धन और यश दोनों के भागी बनोगे।

'तुम्हारे स्वप्न को सत्य करने का प्रयास करूंगा।"

'दिन भर कहाँ रहोगे।"

कह नहीं सकता किसी भी गाड़ी से चला जाऊंगा।"

बंगला आ गया था।

खुले बरामदे में बिछी टेबुल के चारों ओर चाय के प्याले लगा दिए गए थ।

शची गची को भाभी अनुराधा और अरविंद ने चाय पी। गोमू म वकील साहब को उठाना चाहा तो अनुराधा ने डांटते हुए कहा 'उठाने की कोई जरूरत नहीं है, सोते-सोते थक जाएंगे तो आकर चाय पी लेंगे।

अरविन्द को अनुराधा का यह बर्ताव प्रीतिकर नहीं लगा लेकिन शची किस भाव से प्रेरित होकर कह उठी, 'अरविन्द युग एसी नारी की मांग करता है, जो अपने अधिकारों का सही मूल्यांकन करना जानती हो।

अरविन्द मौन रहा। अनुराधा के मुख पर गर्व की रेखाएं लक्षित हुईं।

विशेष रूप से, पत थम मैं उन्हीं के साथ बम्बई गई थी।'

'आह ! वही ठाकुर जगदीश सिंह।' कटाक्ष था अरविंद के स्वरों में।'

हाँ महाराजा साहब के पी० ए०।

आदमी बड़ अच्छे हैं।

'इनके विलायत भी जाकर आये हैं। बड़ ही शिष्ट हैं।'

अरविंद के होठों पर निराशा भरी मुस्कान नाच उठी। गंभीर होकर वह बोला, "इसलिये मुझे तुम से डर लगता है। जब मैं अपने आप को देखता हूँ तब मुझे धरती के सीधे-सादे इन्सान की याद हो आती है और तुम्हें देखता हूँ तब स्वर्ग की उस अप्सरा के बारे में सोचने लगता हूँ, जिसका उपभोक्ता केवल इन्द्र होता था।

नधी को यह लांछन भरी बात अच्छी नहीं लगी। वह कुछ कठोर होकर बोली, यह तुम मेरा अपमान कर रहे हो ?'

एसी मेरी तनिक भी इच्छा नहीं है।'

तुम्हारा यह वाक्य तुम्हारी भावना का साथ नहीं दे सकता। सचमुच आज तुमने यह बात कहके मेरे दिल को बड़ी ठेस पहुँचाई है। तुमने मेरे प्यार का अपमान किया है वह कठोर किंतु धीमे स्वर में बोली।

'नधी इसीलिये मैं तुम्हें कहता हूँ कि मैं प्रेम के विषय का नया छात्र हूँ। मैं भूल जाता हूँ कि एक प्रमिका के साथ किस तरह व्यवहार करना चाहिये। क्षमा कर दो न।

मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकती।'

'तुम्हारी मर्जी। तभी इंजिन ने सीटी दी। वह नधी का हाथ पकड़ कर बोला गुस्ताखी के लिये माफी माँगता हूँ। कभी जरूरत पड़े तो मुझे लिखना। मैं तुम्हें बराबर पत्र लिखा करूँगा। फिर उसने भाई के चरण स्पर्श किये और कूद कर गाड़ी पर चढ़ गया।

* * *

नया आदमी नया शहर ।

सुन्दर व पर्वतीय सुषमा युक्त । हरा भरा और सुसम्पन्न । विभिन्न राजनीतिक दलों का केन्द्र ।

अरविंद उस समय हिन्दू पीड़ित सेवा समिति में भर्ती हो गया। हालांकि उसे वेतन के अधिक पैसे नहीं मिलते थे लेकिन उसका सम्पर्क विभिन्न जन-नेताओं से होता गया। हिन्दू महासभा उस समय पूर्ण प्रगति पर थी । मुसलमानों के नृशंस अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू हृदयों में सबसे जबरदस्त यही प्रतिक्रिया हुई कि यह सब अत्याचार कांग्रेस के कारण हुआ है ।

बड़ी विकट समस्या थी ।

अरविंद इन दिनों बिलकुल खामोश रहता था । यहाँ के जन-नेता यह उपाधि उन्हें किसी जनता द्वारा प्राप्त नहीं हुई थी बल्कि वे हर भाषण में इस शब्द को इस प्रकार जोड़ा करते थे, "भाइयों और बहनों ! यह स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं हिन्दुओं की लाश पर इस स्वतंत्रता इस आजादी, इस फ्रीडम की नींव पड़ी है । लाहौर की गली-गली में हमारी बहनों को नंगा करके जलूस निकाला गया बच्चों को भालों की नोक पर रखकर प्रदर्शन किया गया । मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार किया गया जवान लड़कियों के गर्भांगों में हे भगवान ! ऐसी भयानक लीला तो कभी इस आर्यावर्त में राक्षसों ने भी नहीं की थी । हम जन नेताओं ने अपनी आँखों से यह नंगा जुल्म देखा है । हम 'जन-नेताओं' ने अपने कानों से हमारी माँ बहिनों की दुख-दर्द भरी कहानी सुनी है । इस प्रकार जन-नेता' धर्म की आड़ में अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने में प्रयत्नशील थे ।

यह दोपहरी अरविंद के जीवन की अविस्मरणीय बन गई । दिन मणि नीले आकाश में चमक रहा था । उसकी रजत-सी धवल रश्मियाँ

अग्नि-बाण सी लग रही थीं। सभा भवन में थोड़ी हलचल थी क्योंकि बाहर से किसी लोकप्रिय धार्मिक नेता का आगमन हुआ था नव स्थान निर्जन और निस्पन्द था।

वह सोच रहा था नाची के बारे में। नाची के अतुल्य सौन्दर्य का मूल्यांकन करने बैठा हुआ था वह। सोच रहा था कि वह उसे वास्तव में प्यार करती है या नहीं। तब उसके मन ने हौले से कहा कि आज से नहीं बचपन से ही वह उसे चाहती है बचपन की वे घड़ियां कितनी मधुर और प्यारी थीं। नाची का बात-बात पर झगड़ना और झगड़ कर वापस मन जाना अरविंद को कितना भाता था? तब वह मन ही मन निर्णय करता था कि वह जीवन में उसे ही अपनी अर्द्धांगिनी बनाएगा उसी पर अपना सर्वस्व विसर्जन करेगा। पर शाची जैसे-जैसे यौवन की ओर अपने कदम बढ़ाती गई वैसे-वैसे वह अरविंद से दूर से दूरतर होती गई। हालांकि वह जब कभी भी अरविंद से मिलती थी तो उसके व्यवहार में पहले जैसा ही अपनत्व टपकता था लेकिन उस अपनत्व में शंकित कर देने वाली स्वतंत्र भावना का मिश्रण अरविंद की मनःस्थिति को वाचाल कर देता था और वह भी अहम् से अभिभूत होकर शाची के समक्ष यह प्रदर्शन कर बैठता था कि वह भी उससे उतना ही प्यार करता है जितना वह करती है। तब उन दोनों के बीच एक ईर्ष्या की हल्की रेखा उत्पन्न हो जाती थी और वे एक दूसरे के प्रति तनिक कठोर होकर कुछ कटूक्तियां सुना देते थे। लेकिन अरविंद जैसे महान महत्वाकांक्षी युवक के लिये यह अभिनय क्षणिक था। वह तो मन ही मन निश्चय करता था कि आज अर्थाभाव के ही हमारे सम्बन्धों को मजबूत न होने दे पर एक दिन मैं उन्नति और प्रगति के साथ-साथ नाची को प्राप्त करने में किसी भी तरह समर्थ हो जाऊंगा।

तब उसका अन्तर-मन अत्यन्त क्रूर होकर उसे अशांत कर देने वाला प्रश्न कर बैठता था और यदि इस बीच शाची ने तुम्हारे साथ छल कर दिया तो?'

इस प्रश्न क ध्यान के साथ वह आवेग में आ जाता था और उसकी आँखों में हिंसात्मक चिनगारियाँ जल उठती थीं। अंग प्रत्यंग चंचल हो जाते थे और अपने आप से वह कह उठता था कि यदि शची ने उससे छल किया तो वह उसका जीना हराम कर देगा। वह प्रयत्न करेगा कि वह किस प्रकार तड़पे किस प्रकार उसे मार्मिक वेदना मिले ?

फिर उसके हृदय की कोई कोमल भावना विहँस पड़ती थी, "शची ! एसा नहीं कर सकती थी और फिर नारी एक ही पुरुष को प्यार करती है वह पुरुष कैसा भी हो नारी के लिए वन्दय ही है। हाँ, शची इतना जरूर चाहती है कि मैं महान् बनूँ, लोकप्रिय और ऐश्वर्यवान। वह मैं जरूर बनूँगा। महत्वाकांक्षा की पूर्णता के लिए मैं अपने ज्ञान की हर क्रिया का प्रयोग करूँगा, सतत प्रयत्नशील और जागरूक रहूँगा।'

'अरविंद बाबू अरविंद बाबू ' चपरासी न बाहर से पुकारा।

'कौन है ?

'मैं हू चेतन।"

"खोलो ?"

सट हुए किवाड़ों को धीरे से खोल कर चेतन भीतर घुसा। अरविंद की गभीर मुद्रा देखकर वह क्षण भर तक स्तब्ध रहा और फिर मुस्कराते हुए बोला "आपको स्वामी जी बुला रहे हैं।

"मुझे ? वह थोड़ा चकित होकर बोला "चेतन क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मुझे क्यों बुलाया जा रहा है ?"

चेतन मुस्करा पड़ा। बिच्छू-सी छोटी-छोटी आँखों को नचाता और दरी पर बैठता हुआ बोला "आप भी कसी बातें कर रहे हैं साहब मैं भला गवार आदमी स्वामी जी क मन को क्या जान सकता हूँ ? वे भगवान् के समान है।'

अरविंद न उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठा रहा। उसके ललाट पर पड़ती हुई सलवटें उसकी आन्तरिक गभीरता की प्रतीक थीं। वह उठा और चेतन स बोला 'कहाँ बुलाया है ?"

'ठाकुर मोहनसिंह की कोठी पर।

"कह देना मैं आ रहा हूँ।

अरविंद उठा और अन्यमनस्क सा मोहनसिंह की कोठी की ओर रवाना हो गया। प्रयसी की मधुर या कटु कल्पना में तन्मय किसी प्रेमी की उस कल्पना में अवरोध उत्पन्न करना कितना पीडाजनक होता है, फिर भी "पराधीन सपनहु सुख नाहीं" की पंक्तियाँ स्मरण कर प्राणी को अपने आपको संतोष देना पड़ता है। अरविंद ने अपने आपको संतुष्ट किया और ठाकुर मोहनसिंह की कोठी पर पहुँचा।

कोठी की बैठक में बड़े-बड़े पूँजीपति सामन्त और कुछ साधु एकत्रित थे। उन्हें दूध के गिलास भर भर कर दिए जा रहे थे और वे पी पी कर निर्धारित विषय पर अपनी थोथी दलीलें पेश कर रहे थे। अरविंद ने जैसे ही बैठक में प्रवेश किया वैसे ही सभी उपस्थित व्यक्तियों ने उसे इस तरह देखा जैसे बिल्लियाँ अचानक नई बिल्ली को देखती हैं।

अरविंद कुछ झेंप-सा गया। ठाकुर मोहनसिंह ने सिगरेट का कश खींचते हुए कहा "अरविंद देखो आज सभा है तुम्हें सभी भाषणों का सारांश लिखना है अतः ठीक पाँच बजे सार्वजनिक बाग में पहुँच जाना।

अरविंद निरुत्तर रहा। वहाँ से वापस चला आया।

पाँच बजे सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सभापति के कथनानुसार एक वक्ता उठता था और साम्प्रदायिकता का विष उगलता हुआ अंत में धर्म की जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सद्भावना हो और विश्व का कल्याण हो के नारे लगाता हुआ बैठ जाता था। वक्ताओं में कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी वक्तव्य कला इतनी प्रभावोत्पादक हो जिससे श्रोताओं में हलचल पैदा हो जाए एवं महान प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाए। एकाएक एक ओर कुछ व्यक्तियों ने हल्ला मचाना शुरु किया। ये पंजाब के शरणार्थी थे साम्प्रदायिक आग ने जिनका सर्वस्व जला दिया था जिन पर अमानुषिक अत्याचार हुए थे। आवाज आई हम तो बरबाद हो गए आप क्यों हिंदू हिंदू चिल्ला रहे हैं?

'हम बदला चाहते हैं।' एक आवाज।

'हम इन ढोंगियों को जान गए।" दूसरी आवाज।

देखते-देखते सभा के रंग बदलने लगे। नाजुक स्थिति उत्पन्न हो गई। ठाकुरों की माता भवानी जंग से पीड़ित होकर म्यान में पड़ी थी। साधुओं का साधुवाद चला नहीं।

भूखे पेट और भरे पेट की पीड़ा और चीख का यही तो अन्तर है। जब भूखे पेट की चीख निकलती है तब सत्य नंगा होकर सब पर छा जाता है।

स्वामी सोहनगिरि जी ने हड़बड़ा कर अपना दंड-कमण्डलु उठाते हुए कहा "स्थिति बिगड़ रही है, मेरा ख्याल है कि सभा विसर्जन कर देनी चाहिए। ये शरणार्थी दुःख से पागल हो गये हैं। इन्हें अभी खून चाहिए, धर्म नहीं। अशांति चाहिए, शमन नहीं।'

ठाकुर मोहनसिंह ने कांपते स्वर में कहा "मेरी मोटर तैयार है चलिए।

उस समय अरविंद के दिल में विचित्र संघर्ष हो रहा था। विचारों के आंदोलन में वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। लेकिन उसकी महत्वाकांक्षा उसे कचोट रही थी। कह रही थी, यह सुनहरी मौका है, यदि तुम्हें अपने पर विश्वास है तो आज इस समूह में आग फैला दे। अपनी बुद्धि और भाषण-कला के सहारे भीड़ को शान्त कर दे।

वह उठा और गरजता हुआ बोला "मैं तुम्हें खून दूंगा, खून लेकिन पहले आप शांत हो जाइए, शांत।

यह गम्भीर गर्जना ने सभा में सन्नाटा फैला दिया। स्वामी जी ठाकुर साहब और वक्तागण हतप्रभ हो गए।

अरविंद ने समूह पर दृष्टिपात करके कहना प्रारंभ किया

'भाइयो और बहनों !

मैं जानता हूं कि भाषण आपके कष्ट और पीड़ा का निदान नहीं। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि मृत्युदंड पाए हुए अपराधी को जब

फांसी हो जाती है तब वह व्यक्ति वापस जिंदा नहीं होता जिसको आप रायी ने मारा है। महान राजनीतिज्ञ श्री चाणक्य न कहा है—प्रजा के किए हुए पाप राजा भोगता है, राजा के पाप को राजपुरोहित भोगता है /स्त्री के किए पाप उसका पति भोगता है/ और चेले के किए पाप उसका गुरु भोगता है, तब आप बताइए कि धर्म के नाम पर किए गए पाप और अत्याचार को कौन भोगता ?

सीधे प्रश्न का सीधा उत्तर है ('मजहब के पगम्बर या रहबर ! मैं जानता हूँ कि मुसलमानों ने आप पर अत्याचार किए हैं, अनय और अनाचार किए हैं पर मैं पूछता हूँ, क्या इससे इस्लाम के चार चाँद लग गए ? नहीं, नहीं, नहीं ! एक आवाज आती है कि नहीं। ताकत और शासन धर्म को सनातन नहीं बना सकते। धर्म को शाश्वत बना सकती हैं तो उसकी अच्छाइयाँ, उसकी सहिष्णुता और उसकी विशाल एकत्व की भावना।' — ९१५५/५०१/२६६६/३१० १९०११९

वह लगातार एक घंटा बोलता रहा। उसने उस उत्तेजित समुदाय को बहुत ही शांत कर दिया। वह कहता रहा मुसलमान हिन्दुत्व को नहीं मिटा सकते और न ही हमारे हिन्दू भाई यह सोच कर अधीर हों कि विधर्मियों ने हमारा सर्वनाश कर दिया। क्योंकि हमारे शास्त्र कहते हैं कि प्राणी स्वयं अपने कर्मों का जन्मदाता है इसलिए वह स्वयं अपने किए कर्मों का फल भोगता है। न कोई किसी को मार सकता है और न कोई किसी को जिंदा कर सकता। मारना और जिलाना भगवान के अधीन है। ये दुर्घटनाएँ तो केवल निमित्तमात्र हैं।)

इसके पश्चात वह लगातार एक घंटा फिर बोलता रहा। इस घंटे में उसने निम्नलिखित अंश बहुत ही महत्वपूर्ण कहा— 'अब हमें छिछली भावुकता का त्याग करके संगठित होना पड़ेगा। संघ शक्ति कलौयुग को साकार करना होगा। चारित्रिक पौरुषता निष्ठा, सेवापरायणता, राष्ट्रीयता की भावना ले कर हम एकत्रित हुए तो क्या मजाल है कि हम हिन्दू ध्वज समस्त आर्यावर्त पर नहीं फैला सकेंगे। अत्याचार और

भ्रष्टाचार के उन्मूलन का एक ही रास्ता है यह है हिंदू महासभा को मत देना हिंदू संगठन को प्रश्रय देना और सब बातें गौण हैं।

हर्षध्वनियों और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच जब उसने अपना भाषण समाप्त किया तब ठाकुर मोहनसिंह ने उस प्रगाढ़ आलिंगन में आबद्ध कर हार्दिक धन्यवाद दिया। स्वामी जी प्रसन्न हुए किन्तु फिर वे आपसी प्रतिस्पर्द्धा की जलन में जल उठे और उन्होंने तत्काल अपने आपको गंभीरता की प्रतिमूर्ति बना लिया।

अरविंद बिल्कुल मौन और गंभीर था। ठाकुर मोहनसिंह ने जब वहाँ की विषम उपस्थिति से उसका परिचय कराते हुए यह कहा, कि 'मैंने अरविंदजी को पहली ही नजर में पहचान लिया था। आप ही कहिए कि लाल कभी गुदड़ी में छिप कर रह सकते हैं? मैं कहता हूँ कि हमारी सभा इस नेता को पा कर गौरवान्वित होगी।'

तब अरविंद ने अत्यन्त धीमे से कहा "कुछ पानी चाहिए।'

लेकिन उस दिन अरविंदजी को पानी की जगह लेमन मिला और इसके बाद वह यान अरविंद नेता' उन्हीं की कार पर बैठ कर ठाकुर की कोठी पर गया। भाग्य का रुख एक ही दिन में बदल गया।

* * *

७

अरविंद के हाथ में दादी का खत था। वह खत को हाथ में ले कर दादी की सुन्दर लिखावट को देख रहा था पर न जाने किस विचार में उलझ कर वह खत खोल कर नहीं पढ़ रहा था।

ठाकुर मोहनसिंह की कोठी का एक शानदार कमरा। नौकर-चाकर। आमोद प्रमोद। भोग विलास। सबकुछ।

भाग्य-चक्र का यह स्वर्णिम बिंदु।

कुछ देर तक विमूढ़ रहने के बाद अरविंद ने पत्र खोला। पढ़ने लगा।

प्रिय अरविंद!

तुम पत्र क्यों डालोगे? कम्बख्त हो ना! और अब इस कम्बख्ती पर महानता की छाप और लग गई है, अतः मिजाज सातवें आसमान पर पहुंच चुका है। सातवें आसमान पर खुदा रहता है जो सब पर दयालु और उदार है और तुम्हारा मिजाज उस आसमान तक पहुंच कर पत्थर की तरह कठोर और तपस्वी की भांति एकांगी बन गया है।

समाचारपत्रों में तुम निर्विरोध हिन्दू महासभा के एकनिष्ठ कर्मनिष्ठ और यशस्वी नेता स्वीकार कर लिए गए हो। तुम भी खूब हो। खूब क्या गिरगट हो और सम्मान सूचक शब्दों में मैं तुम्हें इन्द्रधनुष कहना ही पसन्द करूंगी। इन्द्रधनुष के सात रंग होते हैं और तुम्हारे मैंने अभी तक दो रंग देखे हैं भोलाभाला अरविंद और नेता अरविंद।

अरविंद! एक दिन मैंने तुम्हें कहा था न कि तुम यश और धन दोनों के भागी बनोगे। मुझे विश्वास हो रहा है कि मेरी भविष्यवाणी अब सत्य हो रही है। यश अर्जित होने के बाद धन स्वतः ही तुम्हारी ओर भागता हुआ आएगा। यही भाग्य की व्यवस्था का नियम है।

कल मैंने एक स्वप्न देखा था। तुम दूल्हा बन कर आए और मुझे ब्याह कर ले गए। कितना सुहाना और मधुर स्वप्न था? मनुष्य का चेतन मन इस अचेतन मन की सुन्दर प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करता रहता है।

पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारी—

शची

अरविंद को क्षण भर के लिए सुखानुभूति हुई। शची उसकी दुलहिन बन कर अपरिसीम सुख का अनुभव करती है यह भावना भविष्य में उसको कितना प्रसन्न करेगी? वह घंटों उस पर विचारता रहा। और

यदि ठाकुर मोहनसिंह आकर उसे नहीं पुकारता तो न जाने कब तक इस समाधिस्थ अवस्था में निमग्न रहता ?

अरविंद आज हमारे समधी नरेन्द्रसिंहजी के यहाँ नृत्य-गीत का कार्यक्रम है उन्होंने तुम्हें भी निमन्त्रण दिया है, रात को ९ बजे तक चलना है ?

अरविंद ने ठाकुर साहब को बैठाने का संकेत करके धीरे से उत्तर दिया।

यदि मैं नहीं चलूं तो ?

यह कैसे हो सकता है ? ठाकुर ने आश्चर्य से कहा।

"क्यों ?'

देखो आपसी परिचय ही आज की बड़ी विशेषता है। बड़े-बड़े लोगों से घनिष्ठता आगे चल कर आपको बड़ा काम देगी। इसमें हमारा बहुत बड़ा स्वार्थ है।'

अरविंद ने हँस कर कहा तब मैं जरूर चलूँगा। मैं सदा आपका ही भला चाहता हूँ ठाकुर सा! जीवन में सब कुछ भी देकर आपका अनुराग मिलता रहे यह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है।"

"यह तुम्हारी महानता है, अच्छा मैं चला।

ठाकुर चला गया।

अरविंद के अधरों पर अचानक भयानक मौन हँसी नाची। उसकी आँखों में क्रूरता चमकी और उसने आह के साथ भयकर निर्णय किया। उसने टेबुल की दराज में से फाउन्टनपेन निकाला और शची को पत्र लिखने बैठा।

प्रिय शची

पत्र मिला। तुम नहीं समझो कि मैंने उस पत्र को कितनी बार भावावेश में चूमा। मनुष्य अपनी सबसे प्यारी वस्तु को पाकर जितना खुश होता है वही हालत मेरी थी।

तुमने लिखा तुमने स्वप्न देखा उस स्वप्न में दो आत्माओं को

एकाकार होते हुए देखा। उस नवीन अनुभूति का अनुभव किया जो नर और नारी के प्यार की चरम सीमा कही जाती है। काश! उसका मैं भी अनुभव करता। फिर तुमने यह कैसे लिख दिया कि मैं भाग्यशाली हूँ। भाग्यशाली तो तुम हो ?

मैं नेता हो गया हूँ पढ़ कर मुझे हंसी आई। शायद तुम्हें यह पता नहीं है कि आज का नेता कितना स्वार्थी और बईमान होता है ? धीरे धीरे यह श्रद्धा से पूजा जाने वाला शब्द जनता-जनार्दन की दृष्टि में दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। फिर भी मैं बहुत ही महत्वाकांक्षी हूँ अतः मुझे इस 'नेता' शब्द के पीछे जितनी भी बुराइयाँ छिपी हैं और बाद में करनी होंगी, स्वीकार हैं। मैं महान बन कर तुम्हें प्राप्त करना चाहता हूँ।

तुम्हारी सोसायटी का क्या हाल-चाल है ? नघी! मैं उस दिन को आज तक नहीं भूला हूँ।

वह दिन—क्लब में तुम बी० सी० माथुर का उपहास कर रही थीं और उसकी बीवी शराब के नशे में चूर उस उपहास का साथ दे रही थी। मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। मान लो एक वक्त किसी आदमी के पास पैसा न हो और उसने मजबूरी से फटा ही कोट पहन लिया हो तो क्या हुआ ? पर तुम्हारी सोसायटी भी बड़ी विचित्र और एडवांस है। माथुर के पीछे ही पड़ गई। अंत में बेचारे को रोना आ गया, वह रो रहा था और उसकी बीवी खिलखिला कर हंस रही थी। लाचार वह बाहर चला गया तो मैंने सुना कि उसकी बीवी डाक्टर राय से कह रही थी कि जाने दीजिए डा० राय! यदि सोसायटी के काबिल नहीं है तो फिर यहाँ आते ही क्यों हैं ?

और राय ने उसकी कमर में हाथ डाल कर कहा 'पर आपकी साड़ी तो आज गज़ब ढा रही है।

मेरी साड़ी ? यह गोपीसिंह की भेंट है। तब मैं ठाकुर गोपीसिंह के बारे में सोचने लगा। यह व्यक्ति एकदम मुर्दा था। मारो, चाहे वह

गोरा हो या सांवली, चाहे वह काली हो या चेचक के दाग वाली एक बार वह उसके जिस्म को काटे बिना नहीं रह सकता था। कत्ल की आदत थी न उसकी। फिर वह मिस्टर बी० सी० माथुर की धर्मपत्नी को एक साड़ी भेंट कर दे तो कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वह तो सौंदर्य की खान थी।

बी० सी० माथुर बाहर चला आया। मैंने उसका पीछा किया। उसके पीछे का बहाना ही मेरे मानसिक परिताप से छुटकारा पाने का यत्न था। मैं जानता था कि एक दिन मेरी भी ऐसी ही हालत हो सकती है अतः मैंने उसे सांत्वना देने के ख्याल से बाहर चला जाना श्रेयस्कर समझा।

मैंने बाहर आकर देखा। माथुर निस्सहाय बच्चे की तरह आँखों में अश्रु भर कर उस भवन की ओर देख रहा है जिसमें उसकी बीवी शील-संकोच का परित्याग करके उसके सम्मान की खिल्ली उड़ा रही थी।

मैंने उसे सांत्वना देने के ख्याल से कहा 'आपको इतना उत्तेजित नहीं होना चाहिए, मज़ाक तो होते ही रहते हैं ऐसी सोसायटी में। आपको धैर्य रखना चाहिये।'

मेरे इस प्रश्न से वह और व्याकुल हो उठा। विगलित स्वर में बोला 'आप नहीं जानते मिस्टर अरविंद, कि मैंने अपनी बीवी के लिये अपनी हर प्रिय वस्तु को छोड़ दिया है। यदि मुझे यह पता चलता कि ब्याह के बाद मेरी बीवी मुझे मर्मांतक पीड़ा पहुंचाएगी तो सच कहता हूँ कि मैं ब्याह ही नहीं करता इस रोग को ही नहीं पालता? आह! कितने उत्साह के साथ मैंने इसे सोसायटी में मूव करना सिखाया था। और मैंने इसलिये मूव करना नहीं सिखाया कि उसका सितारा बुलन्द होते ही वह मुझे ही सोसायटी से बाहर निकाल दे।'

उसकी आतुर आँखों में व्यथा की चिनगारियाँ जल उठीं। वह रुद्ध कंठ से बोला 'काश! मैं अपनी तुच्छ दौलत को सम्भाल कर रखता। उसे अपनी बीवी की प्रत्येक इच्छा पर पानी की तरह नहीं बहाता तो

एकाकार होते हुए देखा। उस नवीन अनभूति का अनुभव किया जो नर और नारी के प्यार की चरम सीमा कही जाती है। काश! उसका मैं भी अनुभव करता। फिर तुमने यह कसे लिख दिया कि मैं भाग्यशाली हूँ। भाग्यशाली तो तुम हो ?

मैं नता हो गया हू पढ़ कर मुझ हसी आई। शायद तुम्हें यह पता नहीं है कि आज का नता कितना स्वार्थी और बईमान होता है ? धीरे धीरे यह श्रद्धा से पूजा जान वाला शब्द जनता-जनादन की दृष्टि में दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। फिर भी मैं बहुत ही महत्वाकांक्षी हूँ, अतः मुझ इस नता' शब्द के पीछ जितनी भी बुराइयाँ छिपी हैं और बाद में करनी होंगी, स्वीकार हैं। मैं महान् बन कर तुम्हें प्राप्त करना चाहता हूँ।

तुम्हारा सोसायटी का क्या हाल चाल है ? नचो ! मैं उस दिन को आज तक नहीं भूला हूँ।

वह दिन—क्लब में तुम बी० सी० मायुर का उपहास कर रही थीं और उसकी बीवी शराब क नशे में चूर उस उपहास म साथ द रही थी। मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। मान लो एक वक्त किसी आदमी के पास पसा न हो और उसन मजबूरी से फटा ही कोट पहन लिया हो तो क्या हुआ ? पर तुम्हारी सोसायटी भी बड़ी विचित्र और एडवांस है। मायुर क पीछ ही पड़ गई। अत में बचारे को रोना आ गया वह रो रहा था और उसकी बीवी खिलखिला कर हँस रही थी। लाचार वह बाहर चला गया तो मैंने सुना कि उसकी बीवी डाक्टर राय से कह रही थी कि आज कीजिए डा० राय ! यदि सोसायटी के काबिल नहीं है तो फिर यहाँ आते ही क्यों हैं ?

और राय न उसकी कमर में हाथ डाल कर कहा 'पर आपकी साड़ी तो आज रग ला रही है।

मेरी साड़ी ? यह गोपीसिंह की भेंट है। तब मैं ठाकुर गोपीसिंह क बारे में सोचने लगा। वह व्यक्ति एकान्त मुर्दा था। नारी चाहे वह

गोरा हो या साँवली, चाहे वह काली हो या चेचक के दाग वाली एक बार वह उसके जिस्म को काटे बिना नहीं रह सकता था। कुत्ते की आदत थी न उसकी। फिर वह मिस्टर बी० सी० माथुर की धमपत्नी को एक साड़ी भेंट कर दे तो कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वह तो सोसायटी की शान थी।

बी० सी० माथुर बाहर चला आया। मैंने उसका पीछा किया। उसके पीछे का बहाना ही मेरे मानसिक परिताप से छुटकारा पाने का यत्न था। मैं जानता था कि एक दिन मेरी भी ऐसी ही हालत हो सकती है अतः मैंने उसे सान्त्वना देने के ख्याल से बाहर चला जाना श्रेयस्कर समझा।

मैंने बाहर आकर देखा। माथुर निस्सहाय बच्चे की तरह आँखों में अश्रु भर कर उस भवन की ओर देख रहा है जिसमें उसकी बीवी शील-संकोच का परित्याग करके उसके सम्मान की खिल्ली उड़ा रही थी।

मैंने उसे सांत्वना देने के ख्याल से कहा, 'आपको इतना उत्तेजित नहीं होना चाहिये, मजाक तो होते ही रहते हैं ऐसी सोसायटी में। आपको धैर्य रखना चाहिये।

मेरे इस प्रश्न से वह और व्याकुल हो उठा। गिरगिराते स्वर में बोला "आप नहीं जानते मिस्टर अरविंद, कि मैंने अपनी बीवी के लिए अपनी हर प्रिय वस्तु को छोड़ दिया है। यदि मुझे यह पता चलता कि ब्याह के बाद मेरी बीवी मुझे मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाएगी तो सच कहता हूँ कि मैं ब्याह ही नहीं करता इस रोग को ही नहीं पालता ? आह ! कितने उत्साह के साथ मैंने इसे सोसायटी में मूव करना सिखाया था। और मैंने इसलिए मूव करना नहीं सिखाया कि उसका सितारा बुलन्द होते ही वह मुझे ही सोसायटी से बाहर निकाल दे।

उसकी आकुल आँखों में व्यथा की चिनगारियाँ जल उठीं। वह रुद्ध कंठ से बोला 'काश ! मैं अपनी बुद्धि दौलत को संभाल कर रखता। उसे अपनी बीवी की प्रत्येक इच्छा पर पानी की तरह नहीं बहाता तो

आज वह मेरा उपहास नहीं करती लोग मुझे अपने व्यंग का निशाना नहीं बनाते लेकिन अब मैं कर ही क्या सकता हूँ। दुख से आँसू बहाने के सिवाय अब मेरे पास रखा ही क्या है ?'

मैं उसकी व्यथा को सहन नहीं कर सका। उठ कर चलने को उद्यत हुआ कि उसने मेरा कन्धा पकड़ते हुए कहा ठहरो अरविंद, तुम नहीं जानते, मैंने अपनी बीवी से प्यार केवल वासना के वशीभूत और उन्मत्त प्रेमी की तरह नहीं किया है बल्कि एक भक्त की तरह उसके प्रति श्रद्धा भी रखी है। और मेरे जैसा समझदार आदमी भी उस श्रद्धा में इतना मग्न हो गया कि उसे उस नारी के व्यवहार-बर्ताव के ढोंग में भी प्यार नजर आया। जब तक मेरे पास पैसा था तब तक वह मुझे इतना प्यार करती थी जितना जूलियट अपने रोमियो को करती थी। आज मैं उस प्यार को याद कर गद्‌गद् हो जाता हूँ। सोचता हूँ कि वादी पहले मुझे इतना प्यार क्यों करती थी। तब तब मेरे दिल में दर्द भरी ऐंठन होता है और मैं तड़प जाता हूँ। वह सम्मान और प्यार किसी विशेष उद्देश्य से किया जाता था ताकि मैं गरीब हो जाऊं ताकि मेरी सारी पूँजी की हकदार मेरी बीवी बन जाय और मैं पालतू कुत्ते की तरह मांस के टुकड़े के लिए क्या, माँस लगी हड्डी के लिए पूँछ हिला कर उसके सामने भौं भौं किया करूँ।'

मैंने वहाँ खड़ा रहना अच्छा नहीं समझा था अतः हम शून्य सड़क पर चले आए थे। माथुर के दिल में शायद उस समय भयंकर तूफान उठ रहा था। एक हृदय विदारक बहुत्य व्यथा थी जो उसकी नस-नस को पीड़ित कर रही थी। उसकी आँखें भी सजल हो उठी थीं।

मैं भी कितना मूर्ख था कि उसके प्रम-जाल में फंस गया और अपनी अपार धनराशि लुटा कर उसके हाथ की कठपुतली बन गया। माथुर पुनः बोला, अरविंद! मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कि मैं उसे अब भी बहुत प्यार करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह भी प्यार से बोला करे मुस्करा कर मुझे खाना खिला दिया करे, प्रम से आलिंगन में आबद्ध

कर अपना प्यार दे दिया करे। पर वह इतनी कठोर और हृदयहीन हो गई है कि वह मेरा इतना भी ख्याल नहीं रखती जितना एक मेम अपने पिल्ले का रखती है? तब म गुस्से में भर जाता हूँ। और उसके लिए अशुभ कामनायें करने लग जाता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी दौलत उसके पास भी अचल नहीं रहेगी। वह उसके पास से भी हाथ के कबूतर की तरह स्वतन्त्र होकर उड़ जाएगी तब वह मेरे पास आएगी। तब उसे अपने सौन्दय का अभिमान भी नहीं रहेगा। वह बड़ी हो जा।। उसएगीका तेज और अहम मर जाएगा। उसका उड़ना और फड़फड़ाना बन्द हो जाएगा क्योंकि तब वह पखहीन होगी। तब वह मुझे खूब प्यार करेगी, इतना प्यार जितना जब मैं दौलत वाला था तब करती थी। अर्रावद मैं उसी आशा और वक्त के इन्तजार में हूँ। मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ मैं सचमुच उसे बहुत ही प्यार करूंगा। उसकी काली काली जुल्फों की छाया में मुझे बड़ा आनन्द मिलता है वह जब रूठती है तब मुझे उसे मानने में एक स्वर्गीय सुख का आभास होता है। वह बहुत ही अच्छी और प्यारी है लेकिन आजकल वह कठोर हो गई है कठोर!

माथुर का घर आ गया था अत वह सलाम करके चला गया। मेरे सिर पर बोझ सा हो गया।

शची! तुम भी उसी सोसायटी की महान नारी हो! साड़ियों की सरसराहट में सरा की मादकता और नृत्य के आरोह-अवरोह में जीवन का तत्व निकालने वाली उसकी मीमांसा करनेवाली। वास्तव में मुझे तुम्हारी सोसायटी बहुत पसन्द है। जहाँ स्पर्धाविता एव शिक्षिता पत्नी अपने पति को उतनी ही मार्मिक वेदना पहुँचा सकती है जितनी समाज एक साध्वी असहाय बवा को पहुँचाता है। यहाँ वास्तव में देवियाँ रहती हैं! यह सब लिख कर तुम्हें पीड़ा पहुचान का मेरा कोई ध्येय नहीं है। बल्कि मैं तो कहूगा कि तुम्हीं लोग भारतीय संस्कृति क ढकोसले को दूर कर पाश्चात्य संस्कृति की गरिमा की मशाल जलाये हुए हो जिस संस्कृति में शील चरित्र नीति और अनीति को एक भ्रमात्मक राग

अबोध की तरह नरेन्द्रसिंह ने पूछा, 'फिर हमें क्या करना चाहिए?"

अरविंद पूर्ववत शांत रहा।

'बोलिए।' ठाकुर मोहनसिंह ने अधीरता से कहा।

'आप जानते हैं इस मामले को दबाने के लिए लाखों रुपए बरबाद हो जाएंगे?

"जी।'

'जनता की सरकार है यदि वह चाहे तो आपको फांसी की सजा भी दे सकती है। क्योंकि स्थित बदल चुकी है कानून के मापदंड बदल चुके हैं। साम्राज्यवादी और सामन्तवादी सत्ता की समाप्ति के पश्चात् जो जनतंत्रात्मक शासन का उदय हो रहा है उसके पूर्णरूप की घोषणा चाहे भले ही न हुई हो पर उस पर धीरे धीरे अमल जरूर किया जाने लगा है। अन्धी निरंकुशता, अत्याचार अनाचार भ्रष्टाचार का अन्त हो रहा है अन्त करने के पूर्ण प्रयास भी जारी हैं। हां युग स्थिति और वर्तमान सत्तात्मक अत्याचार-अनाचार जरूर जीवित हैं, लेकिन वे भी क्षणिक हैं और उनमें केवल पूंजीपतियों को ही क्षमा किया जा सकता है पर आपको नहीं। क्योंकि आपका युग समाप्त हो गया है। अल्पकाल में आपने अपना पुनर्निर्माण एवं विकास नहीं किया तो धरती से सामन्तों का अस्तित्व ही मिट जाएगा।'

अमीन का उसका लम्बा भाषण ठाकुरों को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उन्हें ऐसा मालूम हो रहा था कि यह विचित्र व्यक्ति कितना धीर और गम्भीर है तथा आग लगी और बुझी छोड़ने वाली आग से भी एक भस्म आग बना हुआ है। खून हो गया है और यह भाषण दे रहा है। वे दोनों अवाक् हो उठ पर रहे निर्विरोध ही।

अरविंद बोलता गया इस शोषण और उत्पीड़न प्रणाली का सूरज क्षितिज के छोर पर अन्तिम चमक दिखा रहा है। सामन्तवाद का राम धारण—ईश्वर के छत्र-चक्र, राजा-रथ, ऊँच-नीच बनाये हैं—भी अब

निष्प्रभाव हो गया है। हम राणा प्रताप की सन्तान हैं या हम चित्तौड़ की शान हैं—य मारे भी अब कमजोर और बोद पड़ चुके हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि स्थिति बहुत बदल चुकी है। इस बदली हुई स्थिति में आप को कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए—जो आप की मान प्रतिष्ठा के लिए घातक सिद्ध हो अथवा आप को एक असह्य अर्थाभाव हो जाय।

'फिर आप कोई उपाय बतलाइये न ?' नरेन्द्रसिंह ने झुंझला कर कहा।

'उपाय बता दूंगा पर नकद पाँच हजार रुपये लूंगा।"

'पाँच हजार ? नरेन्द्रसिंह और मोहनसिंह की आँखें फट गईं। पर अरविंद के भाषण का आतंक उन पर पूरे तौर पर छा गया था।

"लाखों का काम हजारों में निकालता है और आप मैं देख रहा हूँ कि बोरे भर की जगह मुट्ठी भर भी नहीं देना चाहते। हालाँकि मैं वकील नहीं हूँ पर मैं इतना विश्वास के साथ कह सकता हूं कि स्वयं भगवान इस धरती पर उतर आयें तो भी आप को वे नहीं बचा सकते। बचा सकता हूँ तो केवल मैं सिर्फ मैं।

अरविंद इतना कह कमरे में चहलकदमी करने लगा। उसके उठते कदम उन दोनों को वाचाल कर रहे थ। मोहनसिंह ने नरेन्द्रसिंह की ओर भयभरी दृष्टि से देखा और नरेन्द्रसिंह न विस्मय से। अरविंद ने बड़ी सफाई से उन दोनों की ओर देखा और फिर दीवार पर लगे एक प्राचीन राजस्थानी शैली के चित्र 'ढोला मारू' पर दृष्टि गड़ाते हुए बोला यह पाँच हजार मैं अपने लिए नहीं माँग रहा हूं। मुझे रुपयों से मोह नहीं प्यार नहीं नेह नहीं। लेकिन मैं कर्तव्य से विमुख भी नहीं हो सकता। धर्मात्माओं ने कहा है कि माता पिता की सेवा ही सब से बड़ा धर्म तप और मोक्ष है यदि मैं इस सेवा से वंचित रहा तो मेरा कल्याण कैसे होगा ? मैं इस भव-बन्धन से मुक्ति कैसे पाऊंगा ?"

मोहनसिंह ने तपाक से कहा 'हम पाँच हजार देंगे ?'

"इस प्रदर्शन की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे बाहरी आत्मीयता में सदा खोखलापन नजर आता है। एक बात को प्रथम मन में घड़कन की की तरह बसा लीजिए कि मैं आप पर कोई अहसान नहीं कर रहा हू यह मेरा प्रत्युपकार है पाँच हजार की वापसी है।

अरविंद कुछ देर तक विचारों में निमग्न रहा, फिर बोला मैं जानता हू कि गोली केसर अद्वितीय सुन्दर युवती है। आप भी स्वीकार करते हैं। और मेरा मन कहता है कि उसके सौन्दर्य पर प्रत्येक व्यक्ति सहज ही में आसक्त हो जाता होगा। उन आसक्त व्यक्तियों में आप का और मेरा भी नाम आ सकता है।'

मोहनसिंह की आँखों में वासना नाच उठी। वह आवेश में बोला 'जी हाँ मैं भी देखकर मस्त हो गया था।'

अरविंद ने पनी निगाह से उन दोनों को घूरा। अपने बायें हाथ की चटकी में अपना निचला होंठ एक पल के लिए पकड़ा और बोला 'स्त्री यदि वह रूपवती है तो विष भरी कटार है—फिर भी पुरुष अंधा होकर स्पर्श करता है तड़पता है और मर जाता है। ठाकुर सा। यह दर्शन की बातें हैं बड़ी गूढ़तम हैं। यदि आदमी शास्त्रानुसार इन बातों को समझ और सही ढंग से विश्लेषण कर ले तो औरत के बनावटी जाल में कभी भी न फँसे। आज एक औरत ने आपके परिवार को दुश्चिंता में डाल दिया है सर्वनाश की भट्ठी में झोंक दिया है। इन दो मौतों से वह निर्भय हो गई है। क्योंकि ये दो भेड़िये उसके जिस्म को दरिन्दों की भाँति नोचते थे और उसे मर्मान्तिक पीड़ा पहुचाते थे। आज वह स्वतंत्र हो गई निर्बाध हो गई, दुःख रहित हो गई। आप शांत रहिए बोलिए नहीं जो मैं कहता हू बस सुनते जाइए। आप इस चिन्ता से बिलकुल मुक्त हो जाइए कि आप पर कोई आपत्ति या विपत्ति आ सकती है। मैं कह रहा था एक नारी के पीछे आपके परिवार में खून-खराबी हुई एक द्रौपदी के पीछे महाभारत का संग्राम हुआ, एक सीता के पीछे लंका का नाश हुआ, एक पद्मिनी के पीछे गौरवपूर्ण

कीर्ति-स्तंभ चित्तौड़ श्मसान बना। कहने का तात्पर्य है कि स्त्री सब दुख का मूल है। वह नीति में भी बड़ी निपुण होती है। कहते हैं—

उशना वेद यच्छास्त्र यच्च वेद बृहस्पति।
स्वभावेनव तच्छास्त्र स्त्री बुद्धौ सुप्रतिष्ठितम॥

जिस नीति शास्त्र को दैत्यगुरु शुक्राचार्य जानते थे तथा जिस नीति शास्त्र को बृहस्पति जानते थे, वह नीति शास्त्र स्वभाव से ही स्त्रियों की बुद्धि में रहता है। [हि० प १८१]

इस पर आप प्रश्न करेंगे कि केसर इतनी भयंकर और चतुर नहीं है यह ठीक है। लेकिन वह सदा एसी नहीं रहेगी। जमाने की हवा से आज तक कोई नहीं बचा है इसलिए भविष्य में आप को इस नारी से सावधान हो जाना चाहिए।

अब मैं आप से जो कहता हूँ उसे ध्यान से सुनते जाइए। शायद आप केसर को जिंदा रखना चाहेंगे। आपके लिए नारी उपभोग की वस्तु है और कोई उपभोक्ता इतना क्रूर नहीं होगा कि वह अपनी उपभोग की वस्तु का नाश कर दे। तब मैं आपको दो सुख इन पाँच हजार में दूंगा। पहला—केसर यौवनवान सुन्दरी और दूसरी इस समस्या से मुक्ति। आप पुलिस के सामने सिर्फ इतना ही कहिए कि धूड़सिंह ने मेरे दोनों बच्चों को जान से मार डाला। इससे आप को लाभ होंगे—धूड़सिंह का हक भी मारा जाएगा और आपको केसर भी मिल जाएगी। अपने गोलों का मुँह पैसों से बन्द कीजिए शक्ति से नहीं। अब पैसा ही सबका बाप और माँ है।

डूबते को तिनके का सहारा मिल गया।

ठाकर नरेन्द्रसिंह ने झपट कर अरविंद के पाँव पकड़ लिये और गिड़गिड़ा कर कहा आप मनुष्य नहीं देवता हैं साक्षात देवता।"

अरविंद ने पाँव छुड़ाकर कहा ठाकुर सा! देवता बनना आसान है और आदमी बनना मुश्किल। क्योंकि आदमी बनने के लिए कठोर

तपस्या करनी पड़ती है अपनी प्रत्येक इंद्रिय व लिप्सा को वश में करना पड़ता है वासना का त्याग करना पड़ता है। और देवता बनने के लिए सिर्फ विवेक को पुष्ट और वाणी को मधुर व संयत करना पड़ता है।

इसके पश्चात अरविंद ने उनकी ओर ताका भी नहीं सीधा कमरे के बाहर हो गया।

*   *   *

६

अपने कमरे में पहुंच कर उसने उन्माद भरा निश्वास छोड़ा और नोटों को जब से निकाल कर मेज पर जोर-जोर से पटकने लगा। क्षण भर तक वह उन नोटों को भय भरी दृष्टि से देखता रहा और बाद में खुशी भरे स्वर में जोर से पुकार उठा 'जगिया, अरे ओ जगिया।

जगिया शीघ्रता से कमरे में आया हुक्म अन्नदाता।

'देख हमारे लिए जल्दी से खाना तो ले आ।

'जी हुक्म।'

सुन आज तुम में बड़ी फुर्ती देख रहा हूँ।

"नहीं अन्नदाता हम नौकरों में सदा ही ऐसी फुर्ती रहती है पर आज आप के रंग कुछ और जान पड़ते हैं। जान पड़ता है कि आज कहीं से गड़ा धन मिल गया है।'

हाँ गड़ा धन नहीं पर धन। ले यह दस का नोट, और लेगा?

'नहीं अन्नदाता नहीं यह बहुत है।

बस।'

"हाँ अन्नदाता, आप तो साक्षात भगवान मालूम पड़ते हैं।

'जा खाना ले आ।

जगिया चला गया।

अरविंद उसके जाते ही बिल्कुल गम्भीर हो गया। मरोद या लोन

भी कितना छोटा है ? आवश्यकता से अधिक चाहते ही नहीं। एक ये धन वाले हैं तृष्णा के भक्त लालच के पुतले, भरे पेट के भूखे।

इन्सान इन्सान में कितना अन्तर है ?

जगिया खाना रख गया। अरविन्द ने नीरसता से दो-चार कौर लिए और चाँद को खत लिखने बैठा।

भैया !

तुम्हारे कई पत्र मिले और मैंने किसी का भी उत्तर नहीं दिया। मेरी विवशता से तुम परिचित हो ही। झूठ स्वाभिमान में वास्तविकता को छिपाए मैं कितना बनने वाला हूँ ? इसी बनावट में मैं तुम्हारी वेदना के उठते हुए शोलों की पीड़ा पत्थर की तरह मूक बना सहता रहता हूँ, तड़पता रहता हूँ। तुम उदारतावादी हो। मेरी गलतियों का उदघाटन नहीं करते बल्कि अपने अन्तर में उसे कसक की तरह बसाये रहते हो। यह उदारता हमारे स्नेह की आन्तरिक धारा को शुष्क करती जाती है। यदि तुम चाहते हो कि तुम सुखी बनो तो मेरी प्रार्थना है कि तुम इस उदारतावाद के चक्कर से मुक्त हो जाओ।

तुमने लिखा कि पत्रों का अभाव कभी-कभी मुझे विक्षुब्ध कर देता है। सच है भैया तुम्हारे जैसा ईमानदार आदमी आज जानवर बन कर जीवित रह सकता है आदमी बन कर नहीं। आदमी को तुम्हारे देश में जीने का हक ही नहीं है। मैंने भी अनुभव करके देखा है कि जब तक व्यक्ति प्रचलित साधनों को चाहे वे अच्छे हैं या बुरे, प्रयोग में नहीं लाता है तब तक वह अपने जीने का हक प्राप्त नहीं कर सकता। जीने के हक को प्राप्त करने के लिए आदमी को बहुरूपिया बनना पड़ता है। पक्का अवसरवादी होना पड़ता है। यदि वह इस अभिनय में असफल है तो वह हर क्षेत्र में असफल है।

अब तुम्हें गरीबी का सामना नहीं करना पड़ेगा। तुमने अपने अरविंद को अपना खून पिला पिलाकर पढ़ाया लिखाया है। अपनी पत्नी की कटु बातें और व्यंग सह-सह कर उसकी इच्छाओं को पूरा किया है।

और अब तुम्हारा भाई समय हो रहा है तुम्हें उस दभा मारो स गिन गिन कर बदले लेने चाहिए। एक-एक रुपया फेंक-फेंक कर उसे वापस सानें सुनाने चाहिए ताकि उसका अहम उसके आक्रोश की जलन में मोमबत्ती की तरह रह रह, तड़प तड़प कर जले। मेरा विचार है कि अहम के जलन के बाद वह बचस मारा रह जायगी फूल-सी कोमल और मधुर सी विशाल हृदय वाली। अभिमान के कांटे न हो उसने और तुम्हारे जीवन को तिक्त और विरस बना रखा है। उस कांटे के टूट जाने पर वह तुम्हें अपार प्यार देगी अपने उन्माद भरे आंचल में तुम्हारी हर वेदना को छिपा कर सुख में बदल देगी। वह बहुत अच्छी है मदप ि पूज्य है।

इस व्यस्त और तपपमय जीवन में मुझे 'निम्मू' का मुख इस तरह दिखलाई पड रहा है जिस तरह शांति और सुख का सूरज प्रभात के आगमन पर पूरब दिशा में दिखता है। वह सूरज कितना निश्छल और सुखप्रद होता है कि दर्शन-मात्र से महान संतोष होता है। वसी ही पवित्र सूरत है अपनी निम्मू की। सोचता हूं—जीवन के समस्त बंधन तोड कर उस महान सुख के लिए चिरन्तन यत्न में चला आऊं। लेकिन मेरी महत्वाकांक्षा मुझे सदा ही दुबला कर देती है।

मैं तुम्हारी सेवा में अपने उपार्जन किए हुए धन का एक बड़ा हिस्सा यानी तीन हजार रुपए भेज रहा हूं। इन रुपयों को मैंने पाप से नहीं कमाया है। पुण्य-साधन ही इनके अर्जन में सहायक रहे हैं।

एक कहानी याद आ गई।

सबसे छोटी चींटी होती है चींटी को चिड़िया अपनी चोंच में पकड़ कर भक्षण कर लेती है। चिड़िया को बाज झपट कर मार देता है बाज को शिकारी मार देता है और शिकारी चूंकि गरीब है सावेदार है इस लिए वह अमीर के द्वारा मार दिया जाता है। हालांकि यह पाप है पर इस ईश्वर के नाम पर सृष्टि का नियम समझ कर समाज में मान्यता दे दी गई। ऐसे ही इस क्रम की धुरी चलती रहती है।

'जीवो जीवस्य जीवनम'

स्नेहमयी भाभी को प्रणाम। निम्मू को प्यार।

तुम्हारा पुत्रवत
अरविंद

चाद को पत्र लिख कर अरविंद बहुत देर तक उन्मन और मौन बैठा रहा। न जान क्यों उसे अपनी इस उन्नति और प्रगति से संतोष नहीं हो रहा था। एक अभाव उसको खटक रहा था यह अभाव था शची का। बिना शची वह अपन को अपूर्ण समझता था। तब वह अपनी अपूर्णता को पूर्ण करन के लिए आकुल हो जाता था। तब उसके समक्ष आशाओं का विस्तृत क्षेत्र फैल जाता था जहाँ प्रत्येक वस्तु सुलभ प्रतीत होती थी, जहाँ मनुष्य की महत्वाकांक्षा कुलाचें भरती हुई नाच सकती थी जहाँ मनुष्य अपनी बुभुक्षित वासना की सरलता से तृप्ति कर सकता था।

अरविंद उठा और कमरे में चहल कदमी करन लगा। उसके समक्ष वह घटना साकार हो उठी जो अन्याय की नींव पर आधारित थी। जो मानवता क वक्ष पर अपन निर्दयी कदमों को खूंखार कील के सदृश गाड़े हुए थी। वह विचलित हो उठा। दुनिया में कितने घृणित और विचित्र पाप होते हैं। वह स्वतः ही बड़बड़ाया मैं भी कितना पापी हू कितना घृणित हूँ कितना पतित हू ? पासवान के लड़के धूर्जसिंह का हत्यारा कौन ह ? मैं अरविंद हो। वह अरविंद जो शिक्षित बुद्धि जीवी और गरीब ह। पूजी का मोह आदमी को कितनी विषम परिस्थिति में डाल देता ह कितना संकीर्ण और पतनोन्मुखी बना देता ह ? केवल अपन व्यक्ति की पूजा और सुख के लिए आदमी पत्थर-सा कठोर और साँप-सा विषाक्त हो जाता ह। बचारा धूर्जसिंह! जीता जागता इन्सान, माँ की आँखों का तारा जिसकी रगों में जवान अरमान अठखेलियाँ करते होंग वस से अपराधी करार दिया जाकर जल के भयानक सींखचों में बन्द कर दिया जाएगा। कानून अपनी अंधी परम्पराओं का

अनुकरण करके उसे मौत की सजा दे देगा। सत्य झूठ के पर्दे में छिप जाएगा अधकार प्रकाश को ग्रस लेगा विष अमृत को प्रभाव हीन कर देगा। आज के यान्त्रिक और पूंजी प्रधान युग की यही विशेषता और यही सत्य है।   यह सत्य सक्रामक व्याधि-सा हर मानवी मस्तिष्क में आरोपित होकर उसे पथभ्रष्ट बना रहा है।

वह क्षण भर के लिए विमूढ़ हो गया। दूसरे क्षण अपने तपे स्वर में कहा, 'युग का अभिशाप आज के निवासियों को एक ही विचार देगा—उसके लिए इन्सान की कोई कीमत नहीं। वह जब चाहेगा तब अपने विपक्षी को कीट-पतंग की तरह मसल कर रख देगा। उस समय उसके चेहरे पर करुणा के भाव भी नहीं आएँगे। पश्चाताप उसके हृदय को कचोटेगा नहीं। कितना लघुतम रूप होगा—मानव का? दो भले काम करके वह अपनी अच्छाई का डंका बजाएगा इसके उपरान्त वह धपके से महापाप कर बैठेगा? वह महापाप प्रकट नहीं होगा।

अरविंद लुढ़क कर अपने बिस्तरे पर पड़ गया। उसके मुख पर अवसाद क्षोभ ग्लानि और व्यथा के कई भाव संघर्ष करते हुए जान पड़े। वह अवश हो उठा "आदमी कितना बदल गया है?

एक बार चांद ने कहा था "सोना तेरा अरविंद एक रोज जरूर देवता बनेगा। वह साधारण व्यक्ति नहीं है और असाधारण व्यक्तित्व एक दिन महत्व धारण करता ही है। पवित्र भावना पवित्र आदर्श और पवित्र विचार का यह आगार है। मैं सच कहता हूँ—वह एक दिन अपनी इन्हीं अच्छाइयों को लेकर देवता बन जाएगा। तब तुम उसे उतना ही प्यार करोगी जितना मुझे करती हो।

तब भाभी तमतमाकर बोली थी झोंपड़ी में रह कर महल के सपने देखना बहुत ही सरल और सुखप्रद होता है। आज पैसा ही परमात्मा बना हुआ है बिना पैसे वाले देवताओं के मंदिरों पर कबूतर अपने घोंसले बनाते हैं और मूर्तियों पर चूहे नाचते हैं।

पैसा?' अरविंद भारी स्वर में चिल्लाया।

तब उसके मुख पर से समस्त ग्लानियाँ हवा हो गई। उसने अपने जीवन की महान पवित्र भावना को, जिससे वह संसार में अपने आपको एक कल्याणकारी विचार द्वारा समा देना चाहता था त्याग कर पैसा पर केन्द्रीभूत कर दी।

वह उठा और उसने अपनी डायरी में निःसंकोच निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखीं—

युग बदल गया है। आज वही देवता कहलाता है जो अपने निम्नतम एवं घृणित कृत्यों द्वारा अपने उद्देश्य तक पहुंच जाय जिसकी दृष्टि सदा अपने उद्देश्य पर जमी रहती है। एक मनुष्य का जीवन उसके लिये उतना ही महत्व रखता है जितना तूफान के लिये तिनका।

* * *

१०

भूरी आँखों वाले एक युवक ने सवेरे सवेरे अरविंद के कमरे में प्रवेश किया। अरविंद चाय पी रहा था। अपने हाथ की उंगलियों से धीरे धीरे मेज को बजा रहा था। उसने नीले रंग की लुंगी पहन रखी थी, सैंडो-कट बनियान। उसकी पलकें अब भी बोझिल थीं।

युवक ने नमस्कार कर एक खत उसके सामने बढ़ाया। खत खोले बिना ही अरविंद ने अत्यंत नम्रता से उसे बैठने का संकेत करते हुए कहा "आप बैठिए और चाय पीजिए।"

युवक शिष्टता का ख्याल करके बोला "मैं अभी चाय पीकर आया हूँ। मुझे मल्होत्रा जी ने भेजा है।"

अरविंद ने एक बार उस युवक के मुख की ओर देखा। निराशा से श्रांत-क्लांत वह युवक स्थिर बैठा था। उसके नेत्रों में व्यथा थी।

वह बहुत ही मधुर होता हुआ बोला "देखो भया तकल्लुफ करने

की कोई जरूरत नहीं है। इसे अपना ही घर समझो और जम के चाय पी लो। भूख लगी हो तो टोस्ट मंगवा दूं?

युवक उसके व्यवहार से गदगद हो उठा। अरविंद उसके मन के भावों को ताड़ गया पुकारा 'जगिया अरे ओ जगिया दो टोस्ट।

युवक के हृदय में दुख की घटाएं उमड़ रही थीं स्नेह से टकरा कर दुःख पिघल उठा और आँखों की राह बहने लगा।

अरविंद उसके अश्रु देखकर करुण हो उठा। आर्द्र कंठ से बोला 'पगले कहीं के रोता है जवान होकर साहस खोता है। छि-छि छि, बहुत बुरी बात है। हम भी यदि तुम्हारी तरह रोना शुरू कर देते फिर उन्नति कैसे करते?

आप खत पढ़ लीजिए,' उसने रुंधे कंठ से कहा।

"उसकी जरूरत नहीं है। इस खत में देवीप्रसाद जी मल्होत्रा ने तुम्हें काम देने के लिए मुझे लिखा होगा। लिखा होगा पाकिस्तान में इस गरीब के पास अच्छी सम्पत्ति और खेती-बाड़ी थी। हँसता-गाता परिवार था सुख-समृद्धि थी। पर वहाँ हिंदू-मुसलमानों का दंगा हुआ। काफिरों ने इसका सर्वस्व लूट लिया। आप उसकी सहायता कीजिए। उसने एक लम्बी साँस लेकर पुनः कहा, "मैं तुम्हारी जरूर सहायता करूँगा। जगिया—टोस्ट रख दो और जाओ। तुम चाय पीओ न शर्म न करो। मैं तुम्हें लज्जित नहीं कर रहा हूँ। मैं हर युवक को जिसकी नसों में गर्म खून दौड़ रहा है अपना भाई समझता हूँ। बताओ तुम्हारा नाम क्या है?' उसने चाय का प्याला मुंह से लगाकर एक चुस्की भरी।

'किसन। उसने बिलकुल धीमे से कहा।

'किसन तुम जवान हो तुम्हें इतना निराश नहीं होना चाहिए। उसने हँस कर कहा तुम्हारे ही नाम के युग-नेता श्रीकृष्ण की भाँति तुम अपना मूल्यांकन करो। सोचो, समस्त कर्म अन्न वनस्पति मन्त्र अग्नि जल, घास अमन मृत्यु सत्य और असत्य उत्पत्ति और

प्रलय, वद और पवित्र ओंकार में हो हैं। इस प्रकार के विचार मनुष्य की लघुता और तुच्छता को मिटा कर उसका उत्कर्ष करते हैं। और तुम अभी से बिलकुल निराश हो गए हो! नहीं आदमी को कुछ भी दुसाध्य नहीं समझना चाहिए समझे।

किसन न श्रद्धा से उसे हाथ जोड़ दिए "आपकी बराबरी मैं क्या कर सकता हूँ।'

'फिर वही हीन भावना। जाओ, कल से महासभा के दफतर आ जाना।'

बहुत अच्छा।' युवक चला गया।

अरविंद शौचादि से निवृत्त होन के लिए चला गया।

लगभग एक घंटे में वह सभी कार्यों से निवृत्त होकर निकला तो अपने कमरे में मोहन सिंह को उसने किसी युवती से दत्तचित होकर बातचीत करते पाया। युवती उसकी ओर पीठ किए हुए थी। वह उसे पहचान नहीं सका पर जसे ही मोहन सिंह न देखा वसे ही वह आह्ला दित स्वर में बोला लीजिए अरविंद जी आ गए हैं।

युवती न गर्दन घुमाई। अरविंद जरा भी चचल नहीं हुआ। सयत स्वर में बोला, 'शची?

शची न तपाक से कहा 'गुड मार्निंग ।'

कब आई? अरविंद ने उसे पूरी तरह बोलने भी नहीं दिया क्योंकि उसे भय था कि कहीं शची उसे 'डियर' न कह दे।

"सुबह।

"सामान कहाँ ह?'

"नीचे।

"ठाकुर साहब आपका परिचय इनसे हो गया होगा?

'इतना तो हो ही गया कि यह आपकी कोई परिचित हैं मोहन सिंह न तनिक मुस्कराते हुए कहा।

फिर मैं परिचय करा ही देता हू वह आराम से बठते हुए बोला

'आप हैं मेरे बड़े भाई मिस्टर चाँद के मित्र वकील वीरेन्द्रकुमार की बहन, मिस नाजो बी०ए०। और आप हैं हिंदू महासभा के महान नेता ठाकुर मोहनसिंह जी। ठाकुर साहब मेहमान की खातिर तवाजा कीजिये।'

'क्यों नहीं, मैं अभी चाय बिस्कुट और टोस्ट भिजवाता हूँ, कहकर ठाकुर चला गया। उसके जाते ही अरविंद नाजो के पास बढ़कर बोला, "आज मैं तुम्हें अपने पास देखकर बहुत खुश हूँ।"

"पर तुम्हें मेरा परिचय अच्छी तरह देना चाहिये।

'बुरा तो नहीं दिया ?

'पर यह भी तो नहीं कहा कि तुम मेरे मित्र हो।'

"आजकल मैं राजनीति और धर्म के दलदल में हूँ। तुम्हारा दिया हुआ इन्द्रधनुष का नाम मुझे बहुत प्रिय है।

"सच ?

विश्वास क्यों नहीं होता।

'राजनीतिज्ञ हो न, इसलिए।'

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

चाय आ गई थी। अरविंद ने उसकी ओर चाय बढ़ाते हुए कहा, 'पीओ।'

'और तुम ?

"मैंने अभी पी है।"

'अकेली मैं भी नहीं पीऊँगी उसने मचल कर कहा।

"अब बच्चे की तरह रूठोगी तो मुझे भी पीना ही पड़ेगी, कहकर उसने भी अपने लिए चाय का कप बनाना चाहा।

'मैं बनाऊँगी तुम्हारे लिए ?

"क्यों ?"

तुम्हें प्यार जो करती हूँ' इतना कह नाजो ने एक मादक दृष्टि उस पर फेंकी। वह व्याकुल हो उठा। उसका हाथ अनायास ही उसकी

ग्रौर घड़ा। उसे स्पर्श करना चाहा कि वह बोली "पराया मकान है।"

अरविंद शची का संकेत समझ गया। सभलता हुआ बोला, 'कैसे आना हुआ ?'

"मौसी ने बुलाया है एक बहुत जरूरी काम से, पर मैं यहां नहीं ठहरूंगी।

क्यों ? उसने आश्चर्य से पूछा।

'इस लिये कि वहां व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का हनन होता है। वहां पीना पिलाना मना है और मुझे सरोज बाबू के यहां जाना है। वहां तो सभी पीने पिलाने वाले हैं।

अरविंद चुप रहा।

शची ने चाय समाप्त करते हुए कहा चुप क्यों हो गए ?

'सोच रहा हूं शची कि मुझे तुम्हारी उन हरकतों से डर क्यों लगता है ? वह बिलकुल गम्भीर हो गया, 'मैं बुरे से बुरे पाशविक से पाशविक ग्रौर उत्तम से उत्तम कार्य को इतनी निर्भयता ग्रौर धर्य से कर लेता हूं जैसे मेरे कान पर जूं तक भी नहीं रेंगी हो पर तुम से मुझे बराबर भय लगता है। तुम्हारा प्रत्येक संकेत मेरे मन में सन्देह का प्रादुर्भाव कर देता है।'

यह मेरा परम सौभाग्य है।

नहीं मेरे चरित्र की दुर्बलता है नैतिक कमजोरी है।

वह खिलखिला कर हँस पड़ी तुम भावुक हो और जब भावना में बहने लगते हो तब तुम्हारा आत्म विश्वास निर्बल हो जाता है। अरविंद ! यह बिलकुल सही है कि तुम मुझे प्यार करते हो और मेरा ग्रौर तुम्हारा प्यार यदि इस दायरे में सतुष्ट है तो उस बड़े दायरे में जिसे हम पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित सोसायटी कहते हैं सन्तुष्ट रह सकता है, अटूट रह सकता है। उसने अरविंद पर अपनी ग्रांखें जमाकर मध्यम स्वर में कहा, "हां वहां तुम्हें सहिष्णु बन कर रहना पड़ेगा।

वह स्नान करने चली गई।

अरविंद काफी देर तक विचारता रहा। उसे फ्रांस के सुप्रसिद्ध यथार्थवादी लेखक होनोर द बालजाक के उपन्यास 'प्रोरे गारियो' की एक पात्री 'बाई काउंटस' के शब्द स्मरण हो उठे 'जब तुम प्रेम करो तो ऐसी स्त्री चुनो जिससे तुम सदा प्रेम कर सको कभी किसी स्त्री को धोखा न देना। लेकिन अरविंद देख रहा था उच्च वर्ग में प्रचलित प्रेम प्रणाली इस पवित्र वाक्य से बिलकुल विपरीत पड़ती है। पुरुष स्त्री और स्त्री पुरुष पर हार्दिक विश्वास कर ही नहीं सकता—निष्ठा के आधार पर उदार पत्नियों की तरह परोक्ष शिकायत की शक्ति लिए हुए हैं। पति पत्नी के समक्ष साध्वी और आज्ञाकारिणी बन कर उत्कट प्रेम का परिचय देती है पर पीछे से उसके आर्थिक अभाव का रोना रोती है उसकी संकीर्ण मनोवृत्ति की खिल्लियाँ उड़ाती है और वर्ग विशेष की मान्यताओं के विरुद्ध एक शब्द के उच्चारण का विकृत रूप में उद्घाटन करती है और पति अपनी पत्नी के स्वतन्त्र प्रेम पर करारे व्यंग कसता है उसकी चारित्रिक एवं नैतिक दुर्बलताओं को कुलटा या दुश्चरित्र के नाम से पुकारता है उसके शराब पीने और अन्य पुरुषों के आलिंगन में आबद्ध होकर बाल डांस करने को वह अभारतीय संस्कृति कहता है। जहाँ इतना तीव्र विरोधाभास हो वहाँ स्त्री और पुरुष के प्रेम की सफलता असम्भव जान पड़ती है। सहज मानवीय प्रेम के उद्गम की बात हवाई जान पड़ती है।

शची ने कमरे में प्रवेश कर लिया था। उसकी कीमती और चमकदार साड़ी उसके सुडौल तन पर बहुत ही प्रिय लग रही थी। अधरों की निश्छल मुस्कराहट मन को मोह रही थी। वह उस अनिमेष दृष्टि से देखता रहा। उसके निरन्तर देखने को वह सह नहीं सकी। आकुल स्वर में बोली इस तरह क्या देख रहे हो ?

तुम्हारे रूप को। शची सच कहता हूँ, तुम्हारे तन और मन पर मेरा ही अधिकार रहेगा। वह दृढ़ता से बोला।

क्या। वह सस्मित हंसती हुई बोली वह तुम सौन्दर्य से अभिभूत हो कर तो नहीं कह रहे हो ?"

'नहीं।'

'फिर निश्चित समझो, मैं तुम्हारी ही रहूँगी।' शाचा ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। वह उसे विडम्बना पूर्ण निगाहों से देखने लगी। अरविंद का प्रेम-प्लावित अन्तराल उसे नहीं समझ सका।

* * *

११

दिन के पाँच बजे हिंदू महासभा के विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं की गुप्त बैठक थी। सभा का स्थान ठाकुर मोहनसिंह की कोठी ही चुना गया था। विषय रखा गया था—पाकिस्तान के प्रति महात्मा गांधी का पक्षपात पूर्ण रवया तथा सभा का भविष्य में विशाल संगठन।

अरविंद चार बजे खादी का कुर्ता पाजामा पहन कर बैठकखाने में आया। एक अपरिचित कार वहाँ खड़ी देखकर वह अनायास ही उस ओर बढ़ गया। जगिया को पूछा, 'यह कार किस की है?'

'बाबू जी, सेठ हरप्रसाद की।'

'ठाकुर साहब से कहो कि अरविंद बाबू आना चाहते हैं।'

जगिया ने वापस आकर कहा, 'ठाकुर साहब ने निवेदन किया है कि वे कुछ व्यक्तिगत मामलों पर विचार विमर्श कर रहे हैं अतः वे आप से क्षमा माँगते हैं। आप बाहर ही उनकी प्रतीक्षा करें।'

अरविंद चुपचाप वहीं पर बैठ गया।

उस समय साम्राज्यवाद भारतीय पूंजीपतियों के हितों की रक्षा नहीं कर पा रहा था। और नहीं युद्ध के अन्त काल तक ब्रिटिश सरकार और भारतीय पूंजीपति वर्ग के बीच कोई कायदे से सौदा ही हो रहा था। यह सत्य है कि ब्रिटिश सरकार ने उनमें समझौता करने का कई बार प्रयास भी किया था और उन्हें कुछ महत्वहीन सुविधाएं भी दी थीं पर

उससे पूंजीपति वर्ग सन्तुष्ट नहीं हुआ, फलस्वरूप वह कांग्रेस के संगठन में शामिल होने लगा। उसे छिपे रूप से शक्ति पहुंचाता रहा।

और आज जब देश स्वतन्त्र हुआ तब भी भारत का पूंजीपति वर्ग जमींदारों, रियासती नरेशों को अपने साथ मिला कर भारत के सभी प्रकार के उद्योग को हथियाना चाहता है एक बड़ा राजनीतिक गठ बना कर देश की सत्ता को अपने नियन्त्रण में करना चाहता है।

कदाचित् यह एकाकी सम्मेलन इसी बात का द्योतक है।

वह बठा रहा।

लगभग आधा घंटा बाद वे सज्जन निकले। वह सज्जन जिन्हें अर विंद पहचानता था, मिल मालिक थे और कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता भी।

उनके जाते ही अरविंद ठाकुर के पास गया। ठाकुर ने कहा 'अरविंद तुमसे एक गंभीर समस्या पर परामर्श करना चाहता हूं।'

अरविंद अपने स्वभावानुसार ऐसे अवसरों पर नितान्त गंभीर और निश्चल बन जाता था। उसकी आकृति पर कठोरता आ जाती थी।

ठाकुर ने उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही कहा मुझे विश्वास है कि तुम मुझे सही सलाह दोगे ?

'ठाकुर साहब!" अरविंद कनखियों से देख कर मुस्कराया, 'मैंने आपको कभी भी गलत सलाह नहीं दी। जीवन की राह में जिस किसी का साथ दो उसे पूर्णतया सच्चाई के साथ निभाओ, यही सच्ची मित्रता है। स्वार्थ साधना, स्वार्थ परायणता और उचित अवसर पर छल करना यह पापियों का काम है नीच लोग ही ऐसा करते हैं। भगवान् उनकी आशा कभी पूर्ण नहीं करते।

ठाकुर की आंखों में सन्देह की छाया झलकी। आंखों को तनिक अकिंम करके बोले सेठ हरप्रसाद जी आये थे कह रहे थे हिन्दू महा सभा से त्यागपत्र देकर कांग्रेस में सम्मिलित हो जाइए। सत्तारूढ़ संस्था से ही हम अपने अधिकारों स्वार्थों और हितों की अधिक रक्षा कर सकते हैं।

अरविंद ने कहा, "जहाँ तक जमींदारी उन्मूलन और उद्योग के राष्ट्रीयकरण के न होने देने का सवाल है, वहाँ तक मैं सेठजी की राय की कद्र करता हूँ पर अचानक किसी संस्था से त्यागपत्र देकर दूसरी संस्था में सम्मिलित हो जाना अपने आपको क्यों जनता की नजरों में नीचे गिराना है। मेरे एक सूत्र को हृदय में महामन्त्र मान कर बसा लीजिए कि जनता जिसको अपनी नजर से नीचे गिरा देती है उसे उठने नहीं देती और राजनीति जिसे छोड़ देती है उसे वापस नहीं अपनाती। इसलिए हमें अपना हर कदम इतनी सावधानी से उठाना चाहिए कि हमारा रुतबा जरा भी कम न हो।

'फिर ?"

समय की प्रतीक्षा कीजिए।

इसके बाद उसने एक प्रकाशित विज्ञप्ति ठाकुर साहब के हाथ में देकर कहा, आज मैं सभा में उपस्थित नहीं हो सकूँगा, अत्यन्त आवश्यक कार्य से मुझे बाहर जाना है। कृपया आप मेरी इस विज्ञप्ति को पढ़ कर सुना दीजियेगा।'

ठाकुर ने विज्ञप्ति की कुछ प्रतियाँ ले लीं और उन पर अपनी दृष्टि दौड़ाते हुए उन्होंने उदास स्वर में पूछा, 'बस इतनी ही छपवाई हैं ?"

नहीं बीस हजार छपवाई हैं और उन्हें सारे भारतवर्ष में प्रचारित कराऊँगा कह कर अरविंद कमरे के बाहर चला गया।

ठाकुर ने विज्ञप्ति को पढ़ना प्रारम्भ किया। उसके महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार थे—

कांग्रेस हिन्दुत्व की महानता से विमुख हो कर उनको सहयोग दे रही है जिन्होंने सहस्रों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा है। साम्प्रदायिक विष वमन करना मेरा कदापि ध्येय नहीं है अपितु हमारी गहरी मान्यता है कि वास्तविक एकता उन्हीं लोगों में आ सकती है जो कि समान आचार विचार वाले समान परम्परा वाले समान संस्कृति-सभ्यता वाले एक उद्देश्य व एक ही कर्त्तव्य को मानने वाले तथा करने वाले

हों। हिंदू महासभा इस भारतीय कथन के अनुकूल है अत हमें उसके भंड क नीचे एकत्रित होकर राष्ट्र की स्थापना करनी चाहिए।
अहिंसा परमो धम' यह तत्व प्रत्येक हिन्दू के रोम रोम में व्याप्त है, इसलिए अहिंसा का विश्व को पाठ पढ़ान का दायित्व भी हिन्दुओं पर आ जाता है। मेरी अभिलाषा है कि हमें इस धम के प्रचार प्रसार में तत्पर हो जाना चाहिए। पर साथ ही मैं उस अहिंसा का विरोध भी करता हू जो व्यक्ति को कायर और नपुसक बनाती है। बलहीन बन कर अपना नाश कराना हिन्दुओं का काम नहीं है। क्योंकि कथन है कि ईश्वर उसकी रक्षा करता है, जो खुद अपनी रक्षा करता है। आज पाकिस्तान में हिंदू सस्कृति विध्वस की जा रही है ऐसे समय हिन्दू धम हिंदू संस्कृति और हिंदू सभ्यता की रक्षाथ हमें सगठित हो जाना चाहिए, प्राणापण करने को उद्यत हो जाना चाहिए, अपन आपको उत्सग करन के लिए हर समय तत्पर रहना चाहिए।'

अन्त में उसन बड़ ही ओज पूण शब्दों में घोषणा की, मैं हिंदू हूँ इसका मुझे गौरव है उस वसुन्धरा न मुझ उत्पन्न किया है जहां मर्यादा पुरुषोत्तम राम और युग-पुरुष भगवान श्री कृष्ण न अपनी लीलाएँ की हैं। हिंदू राष्ट्र धम ही मेरा मुख है मेरा सवस्व है मेरी आत्मा और परमात्मा है। धम की जय हो अधम का नाश हो प्राणियों में सदभावना हो विश्व का कल्याण हो, ओ३म हर हर महादेव।"

* * *

१२

अरविंद दस बजे तक पुस्तकालय से लौटा। उसन आते ही अंगिया को एक प्याला चाय लान को कहा। चाय का एक घूट हल्क से उतार कर उसन अंगिया से पूछा मेम साहब आई थीं?

नहीं बाबू जी।"

वह फिर चाय पीने में लग गया। वह कुछ उद्विग्न सा जान पड़ता था। उसके चेहरे पर रुखाई थी। चाय समाप्त करके उसने जब से एक पत्र निकाला। उसे पढ़ने लगा, पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों में अश्रु छलछला आए। वह बड़बड़ा उठा भगवान कितना निष्ठुर है ?"

उसने खिड़की की राह बाहर झाँका। नीचे एक भिखारी चत्रसखी का कोई भजन गा रहा था। एक पगली जिसने अपने पाँवों में घुंघरू की जगह टूटे-फूटे बरतनों के टुकड़े बाँध रखे थे, बार-बार हँस-हँस कर नाच रही थी। भिखारी को पगली से कोई वास्ता नहीं था और पगली तो सिर्फ पगली ही थी संसार से विरक्त अपने में मस्त। समीप खड़ा एक कुत्ता उसके बरतन में पड़े रोटी के टुकड़े को बड़े इतमीनान से खा रहा था। पगली उसे भी देखकर हँस रही थी फिर एकाएक उस पर झपट कर उसने उसकी गर्दन अपनी बाहों में दबोच ली और उसके मुँह को इतने प्यार से चूमने लगी जितने प्यार से एक माँ अपने बच्चे को चूमती है। जैसे यह पगली इस मूक जानवर के प्रति अपनी विक्षिप्त वेदना प्रकट कर एक महान सुख और संतोष का अनुभव करती है। जैसे उसकी मुस्कराती हुई आँखें कह रही हों कि तू जानवर है पर तेरा जैसा निश्छल हृदय मनुष्यों का भी नहीं है। मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ, कितना चाहती हूँ ?

फिर उसने आसमान की ओर देखा। आसमान पर काले मेघ मँडरा रहे थे। उनके बीच कभी-कभी चाँद इस तरह चमक जाता था जिस तरह नई दुल्हन का अप्रतिम सौंदर्य युक्त आनन जो अपने प्रियतम को छकाने के लिए बार-बार घूंघट की ओट से आँख मिचौनी का खेल करता हो।

शची के सेंडिल की आवाज सुनाई पड़ी। उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे जैसे आज उसने हमेशा से अधिक पी ली हो। उसकी साड़ी वक्षस्थल से खिसक-खिसक बार बार जमीन पर लोट रही थी और वह उसे संभालने का असफल प्रयत्न कर रही थी।

अरविंद ने उसे विचित्र दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में न प्यार था,

न सन्ताप न क्रोध था और न घृणा। अजीब असामंजस्य की भावना और जड़ता।

जब उसने मचल कर हिचकी ले कर अरविंद को छुआ तो अरविंद ने उसी जड़ता की दशा में उसके सामने वह पत्र रख दिया। उसने उपेक्षा और तिरस्कार से उसे लेकर फेंक दिया और वह अस्पष्ट स्वर में बोली 'मुझे शराब दो, मैं और पीऊंगी।'

सहस्र बिच्छुओं के डंक की पीड़ा से उत्तेजित अरविंद चीख सा पड़ा 'तुम्हारे भाई को लकवा हो गया है उनकी हालत चिंताजनक है।

'मेरे भाई को लकवा हो गया है नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वह मदहोशी से क्षण भर के लिये जाग्रत हो कर बोली तुम मुझे बनाना चाहते हो?" रानी पलंग पर निढाल हो गई। उसकी आँखें बन्द हो गई। वह कभी नाची को और कभी अपने आपको देखने लगा। उसकी दयनीय दशा अपने आंसू। उसकी बहुवायी अपनी तटस्थता। उसकी जड़ता, अपनी बखनी। उसके चेहरे के उन्मादित भाव, अपना चिंताग्रस्त म्लानमुख और उसके होंठों पर फड़कती किसी अंग्रेजी गीत की धुन और अपने अन्तर में श्मसानवत शून्यता। ये सब उसका दम घोंट रहे थे।

रानी ने आँखें खोलीं और मुस्कराकर उसका हाथ पकड़ लिया। बोली, "तुम खड़े-खड़े क्या देखते हो? तो आओ न, डरते क्यों हो? अरे वाह! सुनते नहीं मैं कहता हूँ सो जाओ।

अरविंद अपमान की आग में जल उठा। उसके चेहरे पर क्रूरता उभर आई और उसने एक हाथ से नाची का गला पकड़ कर और दूसरे हाथ से उसके सडौल कपोल पर चाँटा देते हुए क्रोध से उबल कर कहा 'पतन की हद हो गई। बेशरमी को घोल कर पी गई हो। मैं कहता हूँ, तुम्हारा भाई सख्त बीमार है।'

शची की आँखों में नींद उमड रही थी। वह बुदबुदाई सो जा, सो जा, मेरे पास सो जा ।

लज्जा, सताप, ग्लानि और क्रोध से उसका अग अग काँप उठा। उसने उसको झकझोरा और फिर तडातड उसके गाल पर चार-पाच चाँटें जड दिए।

नशा उतर गया। आँखें खुल गईं।

शची न मर्म समझने की भगिमा से उसकी ओर ताका। किंचित आतुर होकर उसने कांपते स्वर में कहा 'क्या हो गया है तुम्हें ? तुमन मुझे इतना बेरहमी से पीटा क्यों ?

"वीरेन्द्र कुमार की सच्चा ।" कठावरोध के कारण वह पूरा बोल नहीं सका। उसने खत उसके हाथ में दे दिया। वह पढ़न लगी। पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित हो गई। लज्जा और ग्लानि स वह छटपटा उठी।

अब क्या होगा ? वह हठात खड़ी हो गई।

होगा वही जो कम में लिखा है, पर तुम्हें सुबह की गाड़ी से वापस चले जाना चाहिए ?'

'अभी कोई गाडी नहीं जाती ?'

नहीं।

तब वह अवसाद से अभिभूत होकर विह्वलता से बोली, अरविंद, यदि भया को कुछ हो गया तो ?'

'कुछ नहीं होगा हिम्मत रखो सब अच्छा ही होगा। वह बड़ी मुश्किल से अपन रोने को दबा रहा था। पाषाण की तरह कठोर अरविंद का दूसरा रूप आज निरावरण होकर उसके समक्ष प्रकट हो रहा था।

अरविंद के मन में बिजली की तरह कठोर विचार कौंधा। वह कुर्सी पर बठता हुआ दार्शनिक क स्वर में शची से बोला मनुष्य के जीवन के य अभिशप्त क्षण हैं जिन्हें हम और तुम परम सुख से ओत प्रोत समझ कर इस तरह अपना रहे हैं जिस तरह सर्दी से ठिठुरा हुआ

सूरज की किरणों को। पर य हमें सतोष नहीं दे सकते। सन्तोष का सम्बन्ध आत्मा से है और जब आत्मा स्वयं कृत्रिम और उच्च वर्ग की चमकदार बबरता से आवेष्टित है तब सन्तोष हम लोगों में कैसे आवास कर सकता है? चमकदार बबरता से मेरा मतलब यह है कि हम अपने अस्तित्व या अपनी स्थिति का सही विश्लेषण एवं मूल्यांकन किए बिना अपने आप को मन्त्र सदृश दूसरे साँचे में ढालने का प्रयास करते हैं। वे प्रयास आवश्यकताओं की अपूर्णता के कारण हमसे उचित और अनुचित, यहाँ तक पाशविक कृत्य कराते हमारे बाह्य ठाट-बाट को कायम रखते हैं।[1] पति-पत्नी के शरीर का सौदा करके अपनी शराब के दौर कायम रखता है और पत्नी-पति के अध्ययन की पुस्तक बेच कर अपनी साड़ी की चमक रखती है। यह चमकदार बबरता अंत में स्वभाव बन जाती है। उदाहरण स्वरूप तुम्हें ही लेता हूँ। भाई मौत की शय्या पर है और तुम शराब में डूब कर मुझ से अपने जिस्म को नुचवाना चाहती हो।"

शब्द क्या थे, जलते हुए अंगारे। क्षोभ, ग्लानि और मनस्ताप की अनन्त भावनाओं में उसका रोम रोम उत्तेजित हो उठा। उसके मन में आया कि मैं झपट कर अरविंद का गला पकड़ लूँ और वह एक शब्द बोले उसके पहले उसके प्राण निकाल लूँ और वह हिंस्र पशु की तरह उठी भी पर उसी क्षण धड़ाम से गिर गई जैसे उसकी सारी शक्तियाँ क्षीण हो गई हों।

अरविंद विचारों के आवेग में उठ कर टहलने लगा। उसकी मूकता शची को और भी असह्य और भयंकर लगी।

वह उसकी ओर बिना देखे ही बोला 'यह सोसायटी आदमी से आदमी का स्नेह छीन रही है। उसे सहज मानवीय भावनाओं से परे हटा कर व्यापारी बना रही है। अगर भाई प्यार करता है तो बहन भी प्यार करेगी। अगर पत्नी पति के कहने पर नाचती है तो पति भी बन्दर बनने को तयार है। उच्चकुलीन या उच्च वर्ग की यह सोसायटी हमारे

मानवीय सम्बन्धों को समाप्त कर रही ह।

आज तुम्हें अपने भाई की बीमारी पर चार आँसू रोने की फुसत तो ह कन तुम्हें यह फुसत भी नहीं मिलेगी। तुम्हारा भाई पीडा से कराहता रहेगा, स्नेह और ममता से अपलक उस द्वार की ओर देखता रहेगा जिस द्वार की ओर से तुम आने वाली होगी। पल-पल में सिसक सिसक कर वह पूछगा कि मेरी बहन आई, जिसे मैंने बड दुलार और प्यार से गुडिया की तरह सजा कर पाला था। और कोई निर्मम चुपके से कह देगा कि वह शराब के नशे में चूर होकर किसी कुलीन वग के धन पति पुत्र की बाहा में सिमिट सिकुड़ कर उसकी वासना के साथ नतन कर रही ह तो उस निरीह के अन्तर पर कितना मर्मान्तिक वज्रपात होगा। वह खिडकी की राह चमकते चाँद को देखने लगा जो अब घनाओं के आवरण से मुक्ति पा चुका था, "तेरा भाई दुःख से कराह कर टूटते हुए स्वर में कहेगा, कोई मेरी बहन को जाकर कह दे कि उसका भाई बुला रहा ह। वह अतिम साँसें गिन रहा, मर रहा ह। लेकिन हाय! वह बहन जिस पर एक भाई न चाँद सितारे लुटाय थ उस वक्त भी नहीं आएगी। वह पंखहीन पक्षी की तरह तड़प कर अन्तिम बार कहेगा कि यदि मेरी बहन आ कर मुझे एक बार ममत्व से भीग कर चूम लेती तो मैं निस्संदेह अच्छा हो जाता मैं नहीं मरता। पर उसकी बहन को इतनी फुसत कहाँ? और वह बेचारा दम तोड देगा।

नभी बहुत देर तक विमूढ़-सी पडी रही। प्राणघातक रोग स पीड़ित रोगिणी की भाँति उसन अपनी बुझती हुई आँखें खोलीं। उसकी जीभ सूख गई थी कठ सूख गया था, सारा अन्तर शुष्क हो गया था। वह उठी तो उसे महसूस हुआ कि जैस उसके नीचे के भाग पर लक्वा मार गया हो। वह धक्के खाती हुई अरविंद के पास पहुँची और गिरकर उसन उसके पाँव मजबूती से पकड़ लिए। फफक कर कह उठी, 'अब चुप हो जाओ इतन कठोर न बनो। मैं हाथ जोडती हूँ।'

अरविंद न पाँव छुडा कर नभी को देखा। उसने बहते हुए अश्रु

उसके हृदय की चमत्कार अवस्था के वजूद को धोते हुए जान पड़े। अरविंद ने उसे उठा कर अपनी छाती से लगा लिया। अपने स्वर को कोमल बनाता हुआ बोला "मोर अत्यन्त सुन्दर हो कर भी जब अपने पाँवों को देखता है तो आठ-आठ आँसू रो पड़ता है। यही कुरूपता धरती के हर प्राणी में आज विद्यमान है।

* * *

१३

सवेरा हो गया था।

रात भर की उनींदी आँखों को शीतल जल से धोकर अरविंद ने शची को जगाया। शची ने नींद में ही अंगड़ाई सी और पुनः सो गई। क्षण भर के लिए अरविंद शची के मुरझाए हुए मुख की ओर देखता रहा। उसे लगा कि शची का मुख इतना निर्दोष और कोमल है जितना जन्मजात शिशु का। तब उसे अपने कड़वे बोल तीर से कम प्रतीत नहीं हुए। उन्हीं तीर समान बोलों से उसका अन्तस्तल को हृदयवेधक स्पष्ट हुआ और वह इतना रोई कि उसके चेहरे का साधारण कांति भी लुप्त हो गई। उसके होंठ सूख गए और उसके रक्तिम कपोलों पर अश्रु धारा के चिह्न अंकित हो गये।

तब वह अपने बारे में सोचने लगा। उसको अपनी करतूत पर हार्दिक ग्लानि हुई। दूसरों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाने वाला इन्सान खुद कितना पतित और दम्भी है? पाप को युग का साधन और महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए कुकृत्यों को श्रेष्ठ समझने वाले व्यक्ति को दूसरों की बुराइयों की आलोचना करने का अधिकार ही क्या है? उसे तब प्रथम अपनी आत्मालोचना करनी चाहिए। अपने हृदय के मोह, अन्धकार तीव्र लालसा और पाशविक वृत्ति को खत्म करना चाहिए। वह द्रवीभूत हो उठा-कुछ ही। करुणा भरे स्वर में उसने शची को पुकारा "शची, उठो तुम्हें गाड़ी से जाना है।

हाथ से झकझोड़ने पर नाची जाग उठी। उसकी दृष्टि में रोष और करुणा दोनों थीं। अपने आँचल को ठीक करती हुई वह बोली, 'नौकर से कहो कि वह मेरा सामान ठीक कर दे।'

'वह ठीक कर देगा पर पहले तुम मुझे माफ कर दो।'

'क्यों, तुमने कौन सा अपराध किया है कि तुम क्षमा माँगने लगे। तुम जैसे सीधे-सादे भोले भाले, दूध के धोये, देवता से अधिक उदार व्यक्ति इस देश में नहीं रहे तो पृथ्वी रसातल को नहीं पहुँच जाएगी।

उसकी आँखें रक्तिम हो उठीं। आन्तरिक ईर्ष्या और जलन के मारे उसका अंग-अंग काँपने लगा। वह तीव्र स्वर में बोली, 'मैं जानती हूँ कि तुमने कल मुझे जो कटु बातें सुनाईं, उसके पीछे तुम्हारा कौन सा ध्येय था? तुम सत्य का नारा लगा कर मुझ पर अमिट प्रभाव छोड़ना चाहते हो? मैं जानती हूँ कि तुम स्वयं कितने ईमानदार हो? इस कमरे में बैठ कर हजारों रुपये कमा लेना किस हुनर का कमाल है? वह हुनर एक ही है—संसार की आँखों में धूल झोंकना या एकदम खोट और नीच रास्ते अपनाना। तुम समझोगे कि दूसरों की खाल खींचना ही आसान है लेकिन अब कोई भी व्यक्ति इतनी सहन शक्ति नहीं रखता कि जो चाहे उसकी धज्जियाँ उधेड़ दे और वह मूर्ति की तरह जड़ बना सुनता रहे। आज का हर आदमी प्रतिशोध का पुतला है। तुम अपने सुख के लिए 'हिन्दू हिन्दू' का नारा लगा सकते हो तो क्या मैं बाल डांस और शराब नहीं पी सकती? पर तुम्हें अपनी स्वतन्त्रता पसन्द है मेरी नहीं, यह तुम्हारी बुर्जुआ मनोवृत्ति है जिसे मैं कतई पसन्द नहीं करती। भविष्य में मुझे अपने सम्बन्धों पर विचार करना पड़ेगा। अच्छा गुड बाई।

वह कमरे के बाहर चली गई।

अरविंद यन्त्रवत उठा और जगिया को सामान बाँधने को कहा। सामान बंध जाने पर नाची ठाकुर साहब की कार में बैठी और जब अरविंद चाची के साथ कार में बैठने लगा तब नाची ने नाराजगी से भौंहें टेढ़ी

कर के कहा, 'इस कष्ट की कोई जरूरत नहीं है ड्राइवर चलो।'
धूल उड़ाती हुई कार आँखों से ओझल हो गई।

*   *   *

१४

जहर !

हाँ, जी चाहता है कि इसे अपने हाथ से जहर दे दूँ। कुल कलंकिनी बेहया पापिन यह अपना काला मुँह लेकर यहाँ आई ही *क्यों ? कुए में डूब क्यों नहीं मरती, रेल की पटरी पर क्यों नहीं सो गई,* नदी में क्या नहीं डूब मरी, कहते-कहते सन्तराम की आँखों में आँसू आ गए। दुःख में उत्तेजित होकर उसने अपने मुह पर तीन-चार चाँटे मार लिए। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह थोड़ी देर में पागल हो जाएगा, हृदय में उठते हुए दुःख के बादलों में उसकी चेतना खो जाएगी और वह मूर्छित हो कर गिर पड़ेगा।

उसके सामने प्रतिमा-सी निष्प्राण एक युवती थी जिसका रंग काश्मीर की केसर की तरह दीप्त और सौरभमय था। वह आत्म पीड़ा संताप और व्यथा की तीव्र भावना से अभिभूत और संतप्त अपने आप को नोच रही थी। उसकी नीली गहरी समुद्र की सर्वाधिक सुन्दर व प्रिय मछली की भांति आँखों के अश्रु उसकी अतगूढ़ वेदना का इतिहास कह रहे थे। बाप निर्दयी जल्लाद की भाँति निर्मम हो कर उसे दुत्कारों पर दुत्कारें सुना रहा था 'कमीनी, मैं तेरे कारण अपना मुँह किसे दिखाऊंगा लोग मुझे अपनी अँगुलियाँ दिखाएंगे मेरे सम्मान पर थूकेंगे अरी बदजात तू ने मुझे कहीं का नहीं रखा। उस मुसलमान के घर ही सारी उम्र रह जाती तो अच्छा होता पर उफ़ ! मुझे बरबाद और जलील कराने से तुम्हें क्या मिलेगा ?'
सतराम अवाक हो उठा। क्षण भर के लिए उसके मन में बहुत ही

भयानक विचार आया। समीप पड़ी पिस्तौल उठा कर वह उस युवती की ओर बढ़ा। उसके मस्तिष्क में खूंखारपन समाया हुआ था। वह आगे बढ़ा। पिस्तौल की नली को उसकी गर्दन पर लगा कर दाग देना चाहा कि उसका हाथ काँप उठा। वह अलग हो गया।

उसके विलग होते ही युवती चोट खाई हुई साँपिन की भाँति फुत्कारती हुई चीख उठी, 'मुझे मार डालिए पिता जी मुझे मार डालिए, मारिए न गोली रुक क्यों गए? मैं कहती हूं आपके हाथ काँपते हैं तो लाइए मुझे दीजिए मैं ही आत्महत्या कर लूँ मर जाऊँ यदि आप मुझे पिस्तौल नहीं देंगे तो लीजिए, मैं इस खिड़की से कूद कर अपनी जान दे देती हूँ। युवती खिड़की की ओर बढ़ी। सतराम जड़ बना रहा। उसने खिड़की खोली और ज्योंही कूदने लगी त्योंही उसने युवती को पकड़ कर अपनी छाती से चिपका लिया।

"नहीं नहीं बेटा तू नहीं जानती कि मैं तुझे कितना प्यार करता हूँ। याद है न जब तू पैदा हुई थी तब मैंने सारे मोहल्ले में मिठाई बँटवाई थी। क्षोभ के कारण मैं तुम्हें क्या-क्या बक गया क्या अनाप-शनाप कह गया। उफ तेरा मासूम दिल मेरे बुरे लफ्जों से छलनी हो गया होगा। मेरी प्यारी बच्ची तेरी अपवित्रता का ख्याल कर के मैं पागल हो गया था और आवेश में तेरे दिल को दुखाने वाली बातें भी कह गया, जो एक अच्छे बाप को कभी भी नहीं कहनी चाहिए। मेरी गुलाब! भला एक बाप अपनी बेटी की ऐसी दुर्दशा कैसे सहन कर सकता है? बेटी भी फिर कैसी, इकलौती जिसकी जिन्दगी के लिए बाप के दिल में बड़े-बड़े अरमान हों बड़ी-बड़ी मिन्नतें और साधें हों। वही बेटी अपना सब कुछ लुटा कर, बदनाम होकर उसके सामने आए तो वह बदनसीब बाप किस प्रकार अपने पर काबू रख सकेगा। कल जब लोग यह जानेंगे कि मेरी बेटी गुलाब अप हृत है छह माह के बाद मुसलमानों के शिकंजे से निकल कर आई है तो तुम्हारे मासूम दिल को कितनी ठेस लगेगी?'

'फिर मुझे मर जाने दो।

'यह आसान होता तो कितना अच्छा होता।" संतराम फिर सिसक पड़ा 'मनुष्य संसार के सभी संकटों से मुक्त हो जाता है।

गुलाब रो रही थी।

संतराम खड़ा-खड़ा सिसक रहा था। जब दोनों के हृदय रोने से हलके हो गए तब संतराम ने दीर्घ निश्वास लेते हुए, दृढ़ता से कहा "फिर भी मैं तुम्हें सुखी करके रहूंगा। तेरी माँ को मरते वक्त दिए वचनों को मैं अपने प्राण प्रण से पूरा करूंगा। तुम्हारी मांग में सिन्दूर का टीका लगवाऊँगा चाहे उसके लिए मुझे अपनी दौलत का सौदा ही क्यों न करना पड़े। चल, स्नान करके कुछ खा-पी ले।

छोटा सा घर, पर बहुत ही सुन्दर। सुनते हैं कि पहले उसमें एक मुसलमान रहता था जो अब पाकिस्तान चला गया था। उसके आस पास कई और मुसलमानों के घर थे उन में भी पंजाब से आए हिन्दू बस गए थे। किसन का घर भी यहीं था। जब उसने सुना संतराम की लड़की आ गई है तो वह भी उसके पास आया। लाहौर में वह उसके ही मकान में रहता था। संतराम किसन पर बड़ा ही स्नेह रखता था।

संतराम खाना खा कर उठा ही था कि किसन ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया।

कहो किसन कैसे आना हुआ ?"

आपको बधाई देने, आपकी गुलाबो आ गई है न ?

'हाँ वह आ गई है। उसका स्वर आर्द्र हो उठा 'पर किसन जालिमों ने उसको बहुत सताया है। उसको ।

तो क्या हुआ ? अब आपको जगह-जगह ऐसी अपहृत युवतियाँ मिल जाएंगी।' उसने अपनी कमीज की बाईं बाजू तक चढ़ाते हुए कहा 'हजारों युवतियां उड़ा ली गई हैं।

"लेकिन इनको अपनाएगा कौन ?'

"समाज ! आपकी बेटी किसी की बहन किसी की भतीजी, किसी

की भानजी तो होगी ही उसी प्रकार हमारा लड़कियों का समाज के किसी न किसी व्यक्ति से कोई न कोई रिश्ता जुड़ा हुआ ही है। ये जुड़े हुए सम्बन्ध हर किसी को एक-दूसरे की आलोचना—प्रत्यालोचना से बचाएंगे।'

'हाँ, फिर किसन तू एक काम कर न।" वह उतावली से बोला 'जल्दी से इसकी कहीं न कहीं शादी ठीक कर दे। मैं परेशानी से बच जाऊंगा कुछ न कुछ दहेज भी दूंगा। न जाने क्या मैं इस के लिए इतना अस्थिर हो उठा हूँ ?' सतराम अपने दोनों हाथों की अंगुलियों को बड़े विचित्र ढंग से नचा रहा था। किसन ने उन्हें सांत्वना दी 'मैं कोशिश करूंगा।' वह चल पड़ा।

सूर्य क्षितिज की ओर बढ़ रहा था। क्षितिज के अनंत छोर पर रुपहली वर्षा हो रही थी। कहीं-कहीं मेघ शिशु उस सुनहली अजस्र धारा में चंचल बालकों की तरह तैर रहे थे। देखते-देखते सुनहरे सागर में मलीनता छाने लगी। मेघ शिशु इस तरह सूर्य की ओर लपके जैसे कई देव अमृत के घट को ले जाते हुए दैत्य को पकड़ने के लिए झपटते हों। पर वह दैत्य बड़ा बलशाली था। अमृत के घट को पकड़ कर वह अपनी अन्तिम झलक दिखाने लगा।

सूर्य के अन्तिम दर्शन गुलाब ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से किए। फिर गहरी निराशा से अपने मुँह को दोनों हाथों से छिपाती हुई बोली 'प्रभु मेरी रक्षा करना।

नीचे से सतराम ने पुकारा "गुलाब !'

गुलाब उसके सम्मुख आई। रोते रोते उसकी आखें सूज गई थीं।

'रो मत बेटा, मैंने सोचा है कि तुझे अपनाने वाले को मैं पचास हजार [illegible] जेवर दूंगा। इतने रुपये अच्छे से अच्छे आदमी को तेरा गुलाम बना कर रख सकते हैं।'

गुलाब निरुत्तर रही। केवल वह अपने पिता के अगाध स्नेह से

आन्दोलित हो फूट रो पड़ी।

बाप ने उसे अपने सीने में छिपा लिया।

*　　　　*　　　　*

१५

चांद की चिट्ठी आई थी।

लिखा था—वीरेन्द्र का देहान्त हो गया है।

अरविंद ने पत्र पढ़ना बंद कर दिया। वह कुछ देर तक रोता रहा। जब जी हल्का हुआ तब वह आगे पढ़ने लगा वीरेन्द्र अपनी मृत्यु के पीछे कई हजार का कर्ज छोड़ कर गया है। यहाँ तक कि उसका बंगला भी गिरवी है। सोचो अरविंद, यह कितना विपत्त अर्थ-संकट है। दो चार दिन में उन्हें बंगला खाली करना पड़ेगा। मैंने अनुराधा देवी से विनती की है कि वे अपने घर आ जाएँ। कदाचित उन्हें हमारे ही घर आना पड़ेगा। इधर प्राची की तबीयत खराब है। उसको ज्वर आ रहा है। उसका शरीर दिन रात आग की तरह जलता रहता है। वह अनुराधा को मजबूर कर रही है कि हमें अरविंद के घर नहीं जाना चाहिए। यह दम्भ और गर्व का पुतला है। समय पर वह हमें बड़ी तीखी बातें सुनाएगा। खैर कुछ भी हो। वीरेन्द्र की मृत्यु के साथ उस घर का सुन्दर स्वप्न चूर चूर हो गया।

वीरेन्द्र ने अन्तिम समय कुछ अपनी डायरी दी थी। उसमें एक जगह मराठी के सुप्रसिद्ध महामान्य लेखक श्री वि० स० खांडेकर की कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं।

मन्त्रयुग का यदि कोई सबसे बड़ा अभिशाप है तो यही है—आत्मा की बधिरता। सत्तत्व इस युग की आत्मा है। रुपया आना पाई इस युग का मन्त्र है व्यक्ति-व्यक्ति के परस्पर संबंध से निर्माण होने वाली विविध भावनाओं का इस युग में स्थान नहीं। कला और कपास,

सौन्दर्य और प्यार, विद्वत्ता और वायुयान प्रेम और फौलाद सब एक माप से नापे जा रहे हैं बचे जा रहे हैं। प्राचीन धर्म प्रधान संस्कृति ने शरीर की ओर से मुह फेर लिया था। नयी अर्थ प्रधान संस्कृति आत्मा से मुह मोड़ कर संसार की प्रगति करना चाह रही है।'

उपर्युक्त पंक्तियों में आज के युग का चरम सत्य बोल रहा है। वस्तुत आज हर चीज का मापदंड बदल चुका है।

उसने आगे लिखा था 'मैं इस घर का, विशेषत अपनी पत्नी अनुराधा और बहन शची का सुचारु रूप से चालित यंत्र हूँ जो दिन भर अपने दिमागी कल पुर्जों को घिस कर पैसा पैदा करता है और उस पैसे का बहुत बड़ा हिस्सा ये दोनों अपनी ऊपरी आन-शान यानि पार्थिव रूप के शृङ्गार में खर्च कर देती हैं। शेष इतना कम बचता है कि मैं जो कि एक यंत्र हूँ अपने कल-पुर्जों को ढंग से तेल भी नहीं दे पाता हू। पर साथ ही मैं इतना डरपोक और कायर हूँ कि मैं अपनी पत्नी का विरोध भी नहीं कर सकता उपेक्षा तो बड़ी दूर की बात है। न मालूम कौन सी अज्ञात भावना मुझे इतना भयभीत करती है कि मैं अपनी बीवी का काठ का उल्लू बन कर रह गया हू। मैं अक्सर महसूस करता हूँ कि मेरे हृदय में दुख के कांटे चुभते रहते हैं आंतें सूखती जाती हैं, धीरे धीरे मेरा सारा शरीर मुर्दा हुआ जा रहा है।

आज अरविंद, वीरेन्द्र हम से बहुत दूर, परलोक में है जहाँ उसकी आत्मा सब विपदाओं से मुक्त हो कर असीम शांति का अनुभव कर रही होगी।

तुम्हारी भाभी वीरेन्द्र की मृत्यु से बड़ी दुखी है। कहती है आदमी के जीवन का क्या भरोसा कब यह हंस इस शरीर रूपी मानसरोवर से उड़ जाय इसलिए अरविंद को वापस बुला लो।

निम्मू स्कूल में पढ़ रही है। तुम्हें चुम्बन भेजती है—अपने फूल से कोमल गाल का।

तुम्हारा
चांद

अरविंद ने भैया को प्रत्युत्तर लिखा। पत्र में उसने एक ही महत्व पूर्ण बात लिखी थी 'भाभी की आत्मा निर्मल हो गई है, अब वह तुम्हें बहुत ही सुख देगी।

दूसरा पत्र उसने शची को लिखा।

लिखा था—

शची !

तुम क्यों पत्र देने लगी चाहे मैं तुम्हारी चिंता में दिन रात घला करूं। वीरेन्द्र की मृत्यु का मुझे सख्त अफसोस है। यहीं जंगजू प्रवृत्तियों वाला मनुष्य पराजित हो जाता है। वह भगवान की आस्था लेकर इस दारुण दुःख को भाग्य का चक्र समझकर अपने मन को धैर्य बंधाता है। हम भी रोने के सिवाय कर ही क्या सकते हैं ? विशेष कर तुम्हें अपने भाई की मौत का बड़ा संताप है। चांद ने सूचित किया है कि असह्य आघात के कारण तुम्हें ज्वर आ गया है। तुम्हारा शरीर दिन रात तवे की तरह जलता है। ऐसा भी क्या ? क्या मरने वाला पश्चाताप से पुनर्जीवित हो जायगा ? नहीं, यह असम्भव है। फिर एक की मौत के पीछे दूसरा अपनी जान क्यों दे रहा है ?

मान लो, तुम अपने भैया को अनुराधा से अधिक प्यार करती हो पर अब प्यार का प्रदर्शन दुःख करने से नहीं होगा ? बल्कि अनुराधा की गृहस्थी और वीरेन्द्र के दोनों बच्चों को सभालने से होगा। इन दोनों नन्हें-नन्हें बच्चों को इतनी ताकत दो कि जीवन के संघर्ष में वे हिम्मत न हारें।

अनुराधा भाभी को प्रणाम। बच्चों को प्यार।

तुम्हारा
अरविंद

पुनः—

भैया ने लिखा था कि शची हमारे घर आ कर नहीं रहती। क्यों क्या हम गैर हैं ? तुम सकीर्ण मनोवृत्ति से क्यों सोचती हो—हमारे

और तुम्हारे सम्बन्धों के बारे में ? हम दोनों भाई क्या दूसरे हैं ? अरी पगली हठ छोड़ कर अपने घर चली आ, अब तेरा अरविंद बेकार नहीं है सब का पोषण कर सकता है, समझी ।"

पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारा अपना
अरविंद

शची का उत्तर आया था—

अरविंद !

पत्र मिला पढ़ा और उत्तर लिख दिया ।

भैया के प्रति जो तुम ने सहानुभूति प्रकट की है यह ऊपरी दिखावा है जिसे समाज आदर एवं रिवाज की दृष्टि से देखता है ।

जगह-जगह तुम ने मुझे ले कर जो व्यंग किए हैं उसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूं । भैया का सताप अधिक मुझ हो होगा भाभी को थोड़ ही । जानते हो भाभी ने खत पढ़ कर क्या कहा ? उन्होंने तलवार की धार-से तेज स्वर में कहा कि मैं तो आप के भाई की मृत्यु पर बधाइयां बन्वा रही हू मनौती मनवा रही हू । आप को बुखार क्या आ गया, भाई की मृत्यु की हमदर्दी का सर्टिफिकेट मिल गया । न मालूम तुम्हें हम लोगों को सताने में क्या मजा मिलता है ? मेरे भतीजे कम से कम तुम से दया की भीख मांगने नहीं आएंगे । मैं उनको बनाने में अपना सवस्व विसजन कर दूंगी । तुम्हें बता दूंगी कि शची कितनी स्वाभिमानिनी है ?

तुम्हें हमारी गरीबी पर बड़ा तरस है । खत लिखते समय शायद यह भूल गए थे कि हमारा बंगला भी गिरवी है । हम बिल्कुल गरीब हैं हमारे पास कुछ नहीं है । पर भाभी और मैंने निर्णय किया है कि हम तुम्हारे मकान में आ कर नहीं रहेंगे चाहे हमें फुटपाथ पर ही सोना पड़े ।

जो तुम—'हम गैर थोड़े ही हैं'—का नारा लगाते हो, उसमें तुम्हारी कितनी संकुचित वृत्ति छिपी है, इसका अन्दाज पत्र पढ़ने वाला आसानी

से लगा सकता है। तुम चाहते हो कि हमें दो रोटियाँ डाल कर संसार के सामने जीवन भर ढोल पीटते फिरो कि मैंने इन्हें पाला है। मैं यह लांछन सन का तयार नहीं [redacted] । मरती मर जाऊंगी, पर तुम्हारे सामने हाथ नहीं फैलाऊंगी।

वर्षों के बाद आज ऐसी स्थिति आ गई है कि मैं तुम्हारे सामने कुछ बातें साफ कर दूं। कदाचित तुम्हें गलतफहमी होगी कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। नहीं मैं तुम्हें जरा भी प्यार नहीं करती। हाँ प्यार का अभिनय मुझे बड़ा प्रिय लगता है। वसे तुम आदमी अप्रिय नहीं हो। अच्छे खानदान के हो। दौलत चली गई तो क्या वह दिल तो सुरक्षित है। मैं सदैव सोचती थी कि नाटक का यह हीरो बड़ा रंगीला है। हीरोइन को सच्चे दिल से चाहता है उस पर अपने अरमान लुटाता है। इसलिए मुझे तुम्हारा सहवास अच्छा लगता था पर सचमुच मैं तुम्हें जरा भी प्यार नहीं करती।

अन्त में इतना ही कहूंगी–फिर सिर में दर्द होने लगा है। लिखा नहीं जा रहा है मुझ से पर एक बात मुझे जरूर लिखनी है। वह यह है—मैं जवान हूँ। अभी मुझ में काम करने की बड़ी क्षमता है। रूप है, अतः मैं मोह सकती हूँ। लिखा है इस लिए मैं उपार्जन कर सकती हूँ। लेकिन कम से कम मैं तुम से यह आशा जरूर करूंगी कि अब तुम मुझे अधिक नहीं सताओगे।

— शची

* * *

१६

सूरज निरभ्र नीलाम्बर में चमक रहा था।

जलती हुई हवा के झोंके कभी कभी सन-सन की आवाज कर देते थे।

अरविंद पत्र पढ़ कर बेचैन हो उठा। एक अव्यक्त सी वेदना उसके अन्तराल में घुमड़ रही थी। उसकी आँखों में वाष्प उमड़ रहा था। धुंध सी छा गई। ऐसा महसूस हो रहा था कि थोड़ी ही देर में निविड़ अन्धकार छा जायगा और अपने विकराल हृदय में उस की तमाम इच्छाओं को समा लेगा। तब वह पिपासा रहित निर्विषयी इन्सान रह जायगा। तब उसकी वेदना गूँगी हो जायगी। तब उसकी करुणा असहाय हो जायगी और उसके जीवन के सारे मधुर स्वप्न उल्कापात के समय आकाश के तारों की भाँति टूट जाएँगे।

शची उसके साथ इतना बड़ा छल करेगी उसने यह कभी सोचा भी नहीं था। उसका दुःख इतना निरीह और उपेक्षित हो जायगा, इसका उसे विश्वास भी नहीं था। उसके साथ 'हीरो' की भूमिका अदा करने वाली नारी सत्य को अभिनय मान कर किसी के अन्तर में चिरन्तन दुःख उत्पन्न कर देगी यह सोच कर वह द्रवित होने लगा।

वह दुःख भरी कल्पनाओं में विचरण करता हुआ फिर स्वयं पर प्रतारणाओं की बौछारें करने लगा। अन्त में वह पत्थर की तरह कठोर और राक्षस की तरह निर्दयी हो गया। दत्यराज कंस ने देवकी के हर पुत्र को मौत के घाट इसलिए उतारना शुरू किया था क्योंकि उसकी संतान ही उसकी मौत थी। ठीक उसी भावना से प्रेरित हो कर उस ने भी तय किया कि वह शची को कभी चैन नहीं लेने देगा इसके लिए उसे बड़े से बड़ा पाप भी क्यों न करना पड़े। नीच से नीच क्यों न बनना पड़े।

वह उठा और उसने शची को एक खत लिखा।

शची,

यह पत्र मेरा अंतिम पत्र है।

इस पत्र में वास्तविकता कड़वी हो गई है पीड़दायक हो गई है और कुछ अपमानजनक भी। [illegible] भी तुम्हारी तरह मजबूर हूँ।

सुमन कहा कि मैं सिर्फ प्रेम का अभिनय करती थी लेकिन तुम्हें यह

पता नहीं है कि अभिनय बिलकुल मिथ्या भित्ति पर आधारित नहीं होता बल्कि उसका आधार सत्य ही होता है। इस पर आधुनिक युग में जहाँ वास्तविकता ही प्रधान है वहाँ अभिनय सर्वथा प्रभावहीन कसे हो सकता है? तुम मुझ से प्रेम करती हो और जरूर करती हो नहीं करती हो तो एक दिन तुम्हें मेरे कदमों पर गिर कर प्रेम का दान माँगना ही पड़ेगा।

भले ही तुमने मुझे किसी भी रूप में ग्रहण किया हो पर मैंने तुम्हें हमेशा अपनी प्रेमिका के रूप में ही देखा है। तुम्हें पता नहीं है कि हर युवक अपनी प्रेयसी को अपने मानस में छिपा कर रखता है। उस प्रेयसी को वह अपने मन के मुताबिक ढालता है। वह कैसी होगी? सुन्दर या असुन्दर। उसका स्वभाव मधुर कितना होगा और कड़वा कितना? वह कैसे बातें करेगी उसे किस तरह अपना सर्वस्व समझेगी और प्राणों से प्रिय वह किस तरह कहेगी, आदि सभी बातें वह अपने मन में धीरे धीरे सजोता रहता है। फिर वह अपने विचारों के अनुकूल किसी युवती को खोजता है और मन ही मन उसे अपनी आराधना साधना और प्रेयसी मान लेता है। यही वजह है कि तुमने देखा होगा कि अक्सर प्रचण्ड-खासे आदमी भी साधारण से साधारण स्त्री के प्यार में इस तरह डूब रहते हैं जिस तरह पानी में कंकड़। अतः मेरे द्वारा तुम्हें सर्वथा भूल जाना असंभव है।

पर एक बात मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि तुम्हारा यह अभिमान कि मैं सुन्दर हूँ जवान हूँ शिक्षिता हूँ इसलिए मेरे लिए यह जीवन सुगम है सर्वथा क्षणिक और झूठा है।

लैला का सौंदर्य मजनूँ की आँखों के कारण था और तुम्हारा सौंदर्य मेरी आँखों के कारण। अगर! मैं इस बात को जरूर मानता हूँ कि तुम जवान हो। लेकिन मुझे यह भी पूरा विश्वास है कि तुम इस बात को भी नहीं भूली होगी कि जवानी स्वयं सौंदर्यमयी होती है, और साथ ही जवानी क्षण भंगुर भी। इसलिए तुम्हारा सौंदर्य भी क्षणिक है। चिरन्तन

तो केवल मेरी दृष्टि में। कभी अपने इसी सौंदर्य के दम्भ के आवेग में निकलोगी तो शायद तुम्हें एक साधारण क्लर्क भी अपनाने को तयार नहीं होगा। गर्व करना व्यर्थ है यह महल ढह चुका जो हर एक को मोह लेता था। राई का भाव रात के साथ ही चला गया।

अब मेरा और तुम्हारा जीवन दो रास्तों में विभक्त हो गया ह। भाग्य भी अलग-अलग ही होंगे। देखें, कौन हारता है और कौन जीतता है ?

तुम्हारा
अरविंद

*　　　*　　　*

१७

तीन दिन बाद—

किसन सतराम को समझा रहा था कि यदि आप अपनी बेटी के लिए बहुत ही अच्छे खाविंद की खोज में हैं तो अरविंद बाबू से मिलिए। कल ही एक सभा में उन्होंने अपहृत महिलाओं के प्रति अपनी समस्त समवेदना जाहिर की थी। उन्होंने गरज कर कहा था कि यदि हम इतने सकुचित हो जाएँगे तो विजातीय हमारी माँ-बहनों का धर्म परिवर्तन करा के हमारे ही खून से हमारा विनाश कराएंगे। बग प्रदेश के इतिहास के 'काला पहाड़' को हम कभी नहीं भूल सकते। हमारी धार्मिक निर कुशता न उसको अधा विद्रोही बना दिया था और वह हिन्दू होकर हिन्दुओं पर काल बन कर छा गया था। रहा धर्म ! धर्म तो हमारा बड़ा ही उदार है। शास्त्रों न कहा है आपत्ति काल में धर्म नाश नहीं होता। हमारी सहस्रों बहन और माताए मजबूरी की हालत में म्लेच्छों क घर रही हैं अत वे सूरज देवता की तरह पवित्र और गंगा की तरह निष्कलक हैं।

सतराम ने शका प्रकट की किसन ये जितन नेता हैं म इनके

सिद्धांत सही रूप से भाषणों में ही उतरते हैं जीवन से इनका बड़ा अलगाव है।"

'कैसे ? किसन ने प्रश्न किया।

'ऐसे कि कोई शायर अपना घर जला कर शायरी थोड़े ही करता है दूसरे के घर को जलते देख कर ही व्यथा उमड़ती है। जब अपना घर जलता है न तब आदमी विक्षिप्त हो जाता है। अपना घर जला कर कविता लिखने वाला एक ही कवि राजा हुआ है वह था रोम का सम्राट नीरो। रोम जल रहा था और वह अनुभूतिपूर्ण कविता गा रहा था।'

किसन कुछ देर तक विचारता रहा और फिर श्रद्धापूर्ण होता हुआ धीरे धीरे बोला, 'पाँचों अंगुलियाँ एक सी नहीं होतीं। मैं उनसे कई बार मिला हूँ। उनके व्यवहार बर्ताव से साफ झलकता है कि वे महान हैं देवता समान हैं। निःस्वार्थ भावना और सेवाव्रत ही उनका मूलमंत्र है। मुझे पूरा विश्वास है कि गुलाब ऐसा गौहर पा कर बहुत ही सुख पाएगी।'

सतराम ने दुःखभरी आह छोड़ी। विगलित स्वर में कहने लगा, मैं कहता [illegible] कि इसे थोड़ा [illegible] आदमी ग्रहण नहीं करेगा। सब पवित्रता चाहते हैं।

"आप कोशिश तो कीजिए।' किसन तनिक झल्ला पड़ा।

'मेरा साहस नहीं होता।'

'मैं कोशिश करूँगा।'

'कीचड़ में हाथ डाल कर देख लो वह कर सतराम बाहर चला गया।

किसन नेत्र मूँद कर विचार शून्य सा बैठा रहा। अतीत उसके स्मृति पटल पर उभरने लगा।

बचपन की बात आज भी उसे ताजी-ताजी लग रही थी। गुलाब

का एक भाई अत्यन्त कुरूप था, बौड़म या अष्टावक्र सा था लेकिन वह उसे कितना चाहती थी। साथ खिलाती थी, साथ सुलाती थी।

इतना स्नेह का दृश्य उसने जीवन की अदालत में नहीं देखा था। उसका भाई कप-कपाती आवाज में कहा करता था, 'ओ जी!' वह इतना ही बोल सकता था। उसका इतना बोलना ही गुलाब की ममता को झकझोरने के लिए काफी था। वह उसके गालों और ललाट पर पवित्र चुम्बनों की बौछार लगा देती थी। कभी-कभी अष्टावक्र रो पड़ता था। उसकी आँखों को तिलमिला देने वाली मूक वेदना कातर स्वर में कहती नजर आती थी बहन, भाई हमेशा अपनी बहन की रक्षा करता आया है, पर मैं इतना लाचार हूँ कि मेरी रक्षा तुम्हें करनी पड़ती है।'

बहन अपने भाई की असह्य व्यथा जनित मूक-वाणी समझ जाती थी। वह स्नेहसिक्त स्वर में कह उठती थी 'मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगी, मेरे भाई, कभी नहीं।'

तब अष्टावक्र के भद्दे भद्द होठों पर मुस्कान थिरक उ[illegible] थी।

लेकिन भगवान् को कुछ और ही मंजूर था।

सुख वह किसी का भी ज्यादा दिन तक नहीं देख सकता। एक दिन अचानक अष्टावक्र को बुखार आया और[illegible]र आते ही उसकी दशा इतनी बिगड़ी कि वह वापस नहीं उठ सका। कराल काल की व्याल सी विषाक्त जीभें उसे सदा के लिए डस गई। तब वह कितनी रोई थी? उस समय किसन उसके पास गया। उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ स्नेह सिंचित स्वर में बोला 'रो मत गुलाबो, रो मत अष्टावक्र की जगह मुझ ही अपना अष्टावक्र समझ ले। अरे पगली, मैं कोई दूसरा थोड़े ही हूँ, तेरा भाई ही हूँ, रो मत पगली रो मत।'

वह फूट कर रो पड़ी और किसन के गले से लिपट गई।

प्यार से भीगी हुई स्मृति ने किसन को पलकों को तरल कर दिया। तभी पीछे से किसी का कोमल हाथ बढ़ा और वह किसन के कंध पर

था कर रह गया। विपिन ने नज़र घुमा कर देखा गुलाब का हाथ था। वह सिसक रही थी।

"तू क्यों रोता है ?"

"विपिन पिता या विपिन मामस है ? मैं उनका दुःख ज़रा भी नहीं देख सकती।" इतना कह उसने अपने आँचल से अपने आँसू पोंछे, "मैं मुक़द्दमे नहीं कर सका। न जाने दामन पर दाग़ लग जाने के डर से मुझे ज़िन्दगी से मोह क्यों हो गया है ? अब मैं सोचती हूँ कि यदि उस समय मर जाती तो अच्छा रहता। सची इन्सान की ज़िन्दगी चम्पने वाले कोल्हू की तरह है जो बार-बार चटख कर दम ले लेता है।"

"तू फ़िक्र न कर। मैं अरविन्द बाबू से ज़रूर बात करूँगा।"

"भला अरविन्द बाबू क्या ।"

"डरती क्यों है मैं सब ठीक किए देता हूँ। अभी आता हूँ।"

गुलाब ने आकाश की ओर देख कर आँचल फैला दिया।

* * *

१८

ठाकुर नरेन्द्रसिंह के मामले की आज पन्द्रहवीं पेशी थी। अदालत खचाखच भरी थी। पूर्णसिंह के हाथों में हथकड़ियाँ थीं। मरणासन्न रोगी की तरह उसका मुखड़ा मुरझा गया था। नसों का रक्त मृत्यु-दण्ड के भय से स्थिर हो बर्फ़ की तरह जम कर ठंडा हो रहा था। उसका सफ़ेद चेहरा देख कर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था कि वह अपराधी है या निरपराधी ? क्योंकि—'यह मौत मेरी ससुराल है या मृत्यु मेरे लिए एक खेल है'—ऐसी विकृत भावना रखने वाले प्राणी पीले नहीं हो सकते। यदि हमारे देश का क़ानून गवाहों के बल पर सच का अन्वेषण न कर के यदि किन्हीं यन्त्रों का उपयोग करता जैसा कि पाश्चात्य देशों में होता है तो बेचारे पूर्णसिंह को मुक्ति निश्चय अभी मिल जाता।

अदालत में गवाह के रूप में खड़े होने के पहले अरविन्द ने एक बार अपनी मन सम्भाली। उस के चेहरे पर कठोर गम्भीरता थी। वह उठा। अदालत के कटघरे में खड़ा हुआ। वह बिल्कुल शांत और गम्भीर था इतना जितना कि सत्य।

भगवान की कसम खाते समय भी वह अविचल रहा। फिर बोला, "मी लार्ड, जर जोरू और जमीन यह तीन चीजें हो संसार की लड़ाइयों के कारण हैं। वेद, पुराण कुरान, रामायण महाभारत बाइबिल और इतिहास सभी इस बात में गवाह हैं। तब बेचारे—पूर्णसिंह जैसे नाचीज व्यक्ति के लिए इस तरह की हत्याएँ कर देना कोई मुश्किल काम नहीं है। जिस समय यह काण्ड हुआ उस समय मैं वहीं था। हाथ में पिस्तौल लिए पूर्णसिंह राक्षस की तरह खड़ा था। मेरी आँखें कभी धोखा नहीं खा सकतीं, वह पूर्णसिंह ही था।'

वह कटघरे से लौट आया। उस समय पूर्णसिंह की माँ आँखों में खून उतारे उसे देख रही थी। उसका वश चलता तो वह पूतना' की तरह उसे किसी भी तरह मारने का यत्न करती। पर अरविंद की ढिठाई देखिए। उसके पास आया और दुःख भरे शब्दों में बोला 'तुम माँ हो इसलिए अपने बेटे के दोष को नहीं देख सकती। माँ के लिए बुरे से बुरा बच्चा भी अच्छा होता है। माँ की आँखें ही ऐसी होती हैं लेकिन जो पाप करता है उसे भगवान और कानून दोनों दण्ड देते हैं। ऐहिक जीवन के कुष्कर्म का भी प्रतिफल यहीं है, इसलिए कहने वालों ने कहा है कि नरक स्वर्ग यहीं है। तुम्हारे सामने तुम्हारे बेटे को फाँसी हो, यह एक माँ के लिए भयंकर नारकीय यातना है। तुम्हें धैर्य धारण करना चाहिए और इसे बुरे कर्मों का फल समझ कर भोगना चाहिए। भगवान तुम्हें शान्ति और धैर्य दे।

माँ कुछ बोले इसके पहले ही अरविंद वहाँ से चल पड़ा।

हथकड़ियों से जकड़े और निराश पूर्णसिंह को एक बार अरविंद ने फिर देखा और समीप जा कर वह बोला, "तुम निर्दोष नहीं हो अत

दण्ड भोगने को तयार हो जाओ। यदि अपने आप को निर्दोष समझते हो तो ईसा मसीह की तरह शांत हो कर कहो, 'प्रभु इन सब का अपराध क्षमा कर देना। यदि मृत्यु का दण्ड असह्य लगे तब क्षुब्ध हो कर कहना, 'प्रभु प्रलय प्रभंजन से इनका विनाश कर दो। सच्चे दिल की विनती कभी व्यर्थ नहीं जाती समझे ?'

अरविंद अदालत के बाहर हो गया।

* * *

१६

आकाश के प्रासाद में टिमटिमाते असंख्य दीप जल चुके थे। रात्र कुमार चन्द्र किरणों के रथ पर आरूढ़ हो कर प्रासाद में विचरण कर रहा था।

जीवन की महत्वाकांक्षा मृग मरीचिका की भाँति अनन्त फैली हुई है। इस मरीचिका के पीछे प्राणी उन्मत्त मृग के सदृश बतहाशा भागा जा रहा है। कुलाचें मारते-मारते थक जाता टूट जाता है।

आदमी और मृग !

अरविंद महत्वाकांक्षा की व्याख्या ही भिन्न करता है। संसार की परिभाषाओं से वह सहमत नहीं है। वह नेपोलियन बोनापार्ट की तरह कर्मठ है। जीवन में असम्भव समझता ही नहीं। वह एक रोज महान् बनेगा, जरूर बनेगा।

अरविंद अपने ही विचारों पर हँस पड़ा। फिर भी वह चंचल था। अपने मन के एक भाव को ढाढ़स देने के लिए सुन्दर शब्दावली की सृष्टि करके अपनी आत्मा के पाप और कलुष को सांत्वना दे रहा था।

घुर्डसिंह के लिए मैंने आज झूठी गवाही दी। यह अक्षम्य पाप है। राक्षसी कृत्य है। मैं औरों को मानवता और मानवीय गुणों की रक्षा के नारों को बुलन्द करने की प्रेरणा देता हूँ और खुद ? वह

गम्भीर हो गया, 'धमराज युधिष्ठिर ने भी अश्वत्थामा हतो, नरो वा कुजरो कह कर किसी को मरवाया था। दानवीर कर्ण से लहूलुहान कवच का दान लेते हुए ब्राह्मण वेश में इन्द्र को भी आत्म-ग्लानि नहीं हुई थी। महर्षि दधीचि की हड्डियों पर देवताओं की विजय मुस्कराई थी। कूटनीतिज्ञ श्री कृष्ण ने सवस्व समपण करने वाले अर्जुन को नीति धम कम का पाठ पढ़ा कर महाभारत की अग्नि का और प्रज्वलित कर दिया था। फिर मैं अपने लिए, अपनी उन्नति और प्रगति के लिए परम्परा से प्रचलित साधन अपनाऊ तो क्या बुरा है? महान् प्राणियों के कुकम भी नीति बन जाते हैं। तत्ववेत्ता उनका विश्लेषण करके नए सत्य की स्थापना करते हैं।

अरविंद शांत होकर बिस्तरे पर सो गया।

किसन खाना लेकर कमरे में प्रविष्ट हुआ। मेज पर खाना रख कर वह विनीत स्वर में बोला, अरविंद बाबू, खाना तयार है खा लीजिए।

अरविंद उठा और खाना खाने बठा।

किसन टकटकी बाँध उसे देखता रहा। अरविंद कौर निगलते हुए बोला, कुछ कहना चाहते हो?

'जी।'

'कहो डरो नहीं जो कहना चाहते हो नि सकोच कहो।" अरविंद न एक पल के लिए उस पर अपनी जलती हुई दृष्टि डाली और भोजन करने में निमग्न हो गया।

किसन ने रुकते रुकते कहा, आप ब्याह करेंगे?"

'क्या कहा?" वह चौंक पड़ा।

"मेरे ध्यान में एक बहुत ही अच्छी लड़की है।'

'यह काम कब ■ करने लगे। आदमी को इतना जलील नहीं होना चाहिए। अरविंद का स्वर कठोर हो गया। क्रोध से चेहरा लाल।

वह मेरी बहन है। किसन बड़ी मुश्किल से बोल पाया।

'तो वह तुम्हारी बहन है? अरविंद ने लम्बे स्वर में कहा।

'हाँ।' यह कुछ स्वस्थ होता हुआ बोला 'आपका अपहृत महिलाओं के प्रति भाषण सुन कर मेरी यह हिम्मत हुई।'

अरविंद गंभीर हो गया।

'वह अपहृत है?"

जी।' अपराधी की तरह उसकी आँखें लज्जा से झुक गईं।

"तुम्हारी सगी बहन है?"

'नहीं तो।

'फिर कौन है?'

'लाला सतराम की बेटी है।"

'सतराम?

'वे कहते हैं कि मैं अपनी सारी सम्पत्ति अपनी लड़की के शौहर को दे दूंगा।'

सारी सम्पत्ति?

'हाँ उनके पास चालीस-पचास हजार रुपए हैं।

'उसकी लड़की पढ़ी लिखी है?" उसने बात बदलते हुए कहा।

'हाँ चार या छह जमात पढ़ी है।'

एक काम कर सकते हो?

हाँ।'

उस लड़की से मिला सकते हो।

"क्यों नहीं।' उसने उत्साह से कहा।

"पर उसके पिता को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए।"

'नहीं चलेगा।' वह विश्वास के साथ बोला।

'फिर कब लाओगे?

'मैं अभी भी उसे अपने साथ लाया हूँ।

साथ लाए हो? अरविंद एकदम गंभीर हो गया।

जड़ और अचल।

किसन कातर स्वर में बोला वह बड़ा दुखी है। आपका भाषण

सुन कर आपको देवता स्वरूप समझने लगी हैं। कहती हैं मैं उनकी दासी बन कर ही रह जाऊँगी। उन्हें बड़ा सुख दूँगी।

'अकेली को भेज दो।'

किसन चला गया।

अरविंद कमरे में चहल कदमी करने लगा।

उसके उठते हुए बोझिल कदम श्रोता को नापित कर रहे थे।

गुलाब की मछली-सी चंचल आँखें कमरे में घुसते ही झुक गईं। शरीर में एक अजीब स्थिरता आने लगी। वह चुपचाप खड़ी हो गई।

'बैठिए।'

वह बैठ गई।

अरविंद कुछ देर मौन रहा। इधर-उधर देखा और बाद में बोला, 'आप का नाम?

गलाब।

मैं पूछूँगा वह आप सच-सच कहेंगी?

' ।'

आप अपने पिता जी को बहुत चाहती हैं।'

जी।

'और वे?"

'वे भी बहुत। तभी सारा रुपया देने को तयार हैं।"

देखिए' उसने एक वकील की तरह कहा अभी विवाह करने का मेरा विचार कतई नहीं है पर आपके लिए और एक दुखी बाप के लिए मैं सब कुछ करने को तयार हूँ। मैं केवल भाषण ही नहीं देता बल्कि मेरे सिद्धान्त जीवन में भी उतरते हैं। अब मैं कुछ बातें आप से स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। अकसर स्त्रियाँ मूर्ख गँवार और गर्वीली होती हैं। वे अपने पति के मनोभावों को बिना समझे ही उनसे संघर्ष शुरू कर देती हैं। उनके व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करती हैं जिनसे उनके पतियों का जीवन नीरस और स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। मैं

राजनीति का छात्र हू समाचारपत्र वाले मुझे नेता कहते हैं। मैं पत्नी की उपेक्षा नहीं करूगा लेकिन मैं उसे भरपूर पारिवारिक सुख भी नहीं दे सकूगा '

"मैं आपकी दासी बन कर रहूँगी।' उसन रुकते रुकते कहा।

'रहना तो पडेगा पत्नी बन कर ही। क्योंकि पारिवारिक प्रम ही सवश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि होता है। और उस प्रम से मैं वचित रहना नहीं चाहता। कम से कम इतना तो अभागा मैं नहीं बनना चाहता। आखिर मैं इन्सान हूँ जीवन लालसा और उसक सुनहरे पखों के प्रति मेरा भी सम्मोह है।

लेकिन । यह कुछ-कुछ कहती कहती रुक गइ।

अरविंद इस पर स्वच्छन्द हसी हस कर बोला 'आप समझती हैं कि विवाह और आप की सम्पत्ति हडप करन के बाद मैं आपको चरित्र हीन या दुश्चरित्रा कह कर सताऊगा। आप एसा ख्याल ही मन में मत लाइए। हर नारी चम स्पर्श से अपवित्र नहीं होती उसक पापाचारों एव अनतिक चर्चाओं की भिन्न भिन्न कल्पनाओं में एक दिव्य ज्योति जलती है। यह दिव्य ज्योति ही सन्मार्ग दिखाती है। उसकी पावनता को अखण्ड रखती है। मैं आप में तथा अन्य अपहृत महिलाओं में उसी पावनता का दशन करता हू। तत्कालीन विवशता से भी मैं अपरिचित नहीं हूँ। फिर आप रोन लगीं ? रोना अच्छा नहीं। हस कर दुख को भुला देना ही जिन्दगी है।

'फिर आप का फसला ?

'आप अपन पिता जी को कहिए हमारा विवाह १५ अगस्त '४८ को होगा। दहेज में कुछ नहीं लूँगा। लेकिन मैं एक बात आपको बताना अति शुभ समझता हूँ वह यह कि दुबल चरित्र वाले प्राणी अपने भ्रष्ट जीवन को उपभोग करन के लिए बार-बार लालायित हो उठते हैं। उन्हें केवल अनुकूल परिस्थिति की आवश्यकता रहती ह।'

गुलाब ने बस इतना ही कहा "मैं इतनी सहिष्णु और शालीन रहूंगी जितनी एक सवर्गहिणी रह सकती हूं।"

'फिर आप जा सकती हैं।

गुलाब चली गई।

अरविंद सोचता रहा, 'आर्थिक संकट से मुक्त मैं राजनीति के अखाड़े में अपनी महत्वाकांक्षा को निर्भय हिरण की भांति छलांगें भरने के लिए स्वच्छन्द कर दूंगा।'

इस घटना ने राजनीति क्षेत्र सामाजिक क्षेत्र एवं प्रगतिशील तत्वों में भारी हलचल फैला दी। यह पहला अवसर था जब कि एक विशिष्ट व्यक्ति अपहृत महिला से विवाह कर रहा था। कांग्रेस के कार्यकर्ता मिनिस्टर यहां तक कि मुख्यमंत्री तक ने उसके इस क्रान्तिकारी कदम की सराहना की। उन्होंने अपने संदेश में लिखा—"यह क़दम हमारी हजारों मां बहनों का उद्धार करेगा। मैं श्री अरविंद जी को धन्यवाद देता हूं और देश के युवकों से अपील करता हूं कि वे भी रूढ़िग्रस्त समाज के पुराने बन्धन तोड़ने में समर्थ हों।'

कम्युनिस्ट पार्टी से लेकर समाजवादी नेताओं तक ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की साथ में उसके द्वारा बार-बार हिन्दू और हिन्दुत्व चिल्लाने के विचार को संकीर्ण एवं विश्व के लिए घातक कहा।

अरविंद [illegible] विवाह के चार दिन पहले एक प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया। इस प्रेस कान्फ्रेंस में उसने घोषणा की, 'मैं जानता हूं कि यदि व्यक्ति समाज की रूढ़ियों को दूर करना चाहे तो वह आसानी से दूर कर सकता है। सहस्रों अपहृत महिलाएं देश में हैं और देश में लाई जाएंगी। अब हमें अपनी उदारता और विशाल हृदय का परिचय देना पड़ेगा। सोचिए—पांच पाण्डवों की द्रोपदी एक थी। पांचों की पत्नी हो कर भी हुई पवित्र थी। इस प्रसंग से यह सिद्ध होता है कि नारी महान है।' उस घोषणा में उसने अपने भाई चांद का भी सन्देश सुनाया 'तुम एक अपहृत युवती से विवाह कर रहे हो मैं बहुत ही प्रसन्न हूं।

नारी मांगल्य की मूर्ति होती है। मैं तुम्हारी वधू को आशीर्वाद देने अवश्य आऊंगा।'

अन्त में उसने दृढ़ता से कहा, 'मैंने अपने भगतर के पिता जी से स्पष्ट शब्दों में कहलवा दिया है कि विवाह बिल्कुल सादगी से होगा। दहेज में मैं एक तिनका भी नहीं लूंगा।'

प्रेस कान्फ्रेंस की समाप्ति के बाद उसने प्रसिद्ध पत्रकारों को व्यक्तिगत रूप में निमंत्रित किया और उन्होंने अपने प्रचार प्रसार का महा प्रसाद पाया।

दूसरे दिन प्रायः सभी समाचार पत्रों में अरविंद के चित्र छपे और नीचे उसकी घोषणा।

अरविंद सारे पत्रों को सम्मुख रख कर गर्व से फूल रहा था। सोच रहा था कि मेरा देश कितना सरल और भोला है।

* * *

२०

१५ अगस्त १९४८।

बड़ी सादगी के साथ अरविंद का विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह में शहर के सभी गण्यमान्य व्यक्ति और समाज-सुधारक उपस्थित थे।

उसका भाई चांद और उसकी भाभी सोना उस रोज विशेष उत्साहित दीख रहे थे। अरविंद सोना को देख-देख कर खूब ही प्रसन्न हो रहा था। नमक की तरह खारी और फटे ढोल की तरह अप्रिय स्वर में बोलने वाली यह नारी कितनी सरल और मीठी हो गई थी।

अपनी सीमन्त रेखा से खिसकते हुए आंचल को सम्भालती हुई सोना बोली "वह हजारों में से एक लाख हो, देवर जी गुलाब सचमुच गुलाब है।'

'तुम्हें पसन्द है ?

'बहुत, और निम्मू तो पल भर के लिए भी अपनी चाची को छोड़ने को तयार नहीं है।'

'भाभी सच-सच कहना चाची से अच्छी है या ।

बीच में ही भाभी लांछना भरे स्वर में बोली, 'सोने को पीतल से तुलना नहीं हो सकती। मुझे वह चाहिए तितली नहीं।

पर न जाने अरविंद की आखें क्यों तरल हो गई? उस तरलता में एक व्यथा थी दर्द था। एक अव्यक्त वेदना थी।

सप्ताह बीत गए।

अंशुमाली की प्रथम किरण पर्वत को गगन चुम्बी श्रेणी का मधुर आलिंगन ले कर धरती पर अवतरित हुई। छितराई हुई रश्मियों का दृश्य अत्यन्त मनोरम लग रहा था। कुछ नादान किरणें खिड़की की राह रात की मधुर स्मृति में मग्न अरविंद के कपोलों पर नृत्य करने लगी थीं। अचानक उनका नृत्य रुक गया और उसे ऊष्मा का अनुभव हुआ जिस से उसने अपने नेत्र खोल दिए।

सम्मुख सद्य यौवना मुस्कराती खड़ी थी। उसकी मुस्कान में वशीकरण था। निश्छलता थी। पवित्रता थी।

अति स्नेह से बोली 'नमस्ते जी।

अरविंद ने उसको पकड़ कर अपने समीप बिठा लिया और उस की ठोड़ी को अपनी उंगलियों से पकड़ कर बोला "गुलाब! अपनी पखुड़ियों में मुझे समेट लो।"

गुलाब ने फिर मुस्करा दिया।

अरविंद ने उसके झीने आंचल में अपना मुंह छिपा कर कहा यह आँचल कितना प्यारा है? जी चाहता है कि इसमें समा जाऊं?'

तभी निम्मू आ गई।

गुलाब लज्जा के मारे हठात उठ खड़ी हुई। निम्मू चपलता से बोली, चाचाजी, चाची के । कह कर वह वापस मुड़ गई।

'धत् पगली। गुलाब ने उसे पकड़ कर अपने सीने से लगा कर

कहा 'अच्छी बिटिया ऐसी बातें नहीं करती। उठ कर अपने चाचाजी का मन बहला मैं चाय ले कर आती हूँ।'

सुनो तो। अरविंद ने जाती हुई गुलाब को पुकारा। गुलाब ने मुस्कान भरी दृष्टि अरविंद पर फेंकी। अरविंद ने कटाक्ष किया। निम्मू गुब्बारा फुलाने में मग्न थी, कटाक्ष वह देख नहीं पाई।

'गुलाब! भाभी और भैया को भी यहीं बुला लाना।'

गुलाब चली गई।

फटाक।

गुब्बारा फट गया।

अरविंद चौंक पड़ा।

उसको चूमते हुए बोला 'बड़ी नटखट है।'

आप से भी?

क्या कहा?'

आप भी तो चाची के आँचल।

चाची को देख कर निम्मू चुप हो गई। फटे हुए गुब्बारे को देखने लगी।

"निम्मू क्या शिकायत कर रही थी मेरी?

कुछ नहीं। कह रही थी कि गुब्बारा फट गया। चाचीजी ने कल ही खरीदा था पूरे एक आने में।

मुँह क्यों उतार रही है?' चाय बनाते हुए गुलाब ने कहा फट गया है तो नया दिलवा दूँगी।'

अरविंद इतनी देर हँसी मुँह में छिपाए हुए था। अब हँस ही पड़ा।

'आप क्यों हँसे?

इसलिए कि एक बच्ची तुम्हें किस तरह बनाती है?'

चाय का प्याला अरविंद के सामने बढ़ा कर गुलाब सतरदए स्वर में बोली "मुझे हर कोई बना सकता है। मैं बहुत ही भोली हूँ। छल फरेब और उपहास-परिहास को मैं थोड़ा भी नहीं जानती। मैं इस घर में

सब को प्रसन्न कर के पतिव्रता कहलाने आई हूँ। जिन्दगी का कलंक धोने आई हूँ। अहिल्या का पाषाण बनी हूँ। ठोकर से उद्धार होने की प्रतीक्षा में हूँ। आप राम हैं। तुलसी के युगपुरुष, मर्यादापुरुषोत्तम। मुझे विश्वास है इन्द्र के द्वारा छली गई अहिल्या की विवशता को आप जरूर जानते होंगे? अहिल्या की तरह मैं भी शापित हूँ। शाप से मुक्त होने के लिए तपस्या की जरूरत है। यह बनना और बन कर खुश रहना ही मेरी तपस्या है।" गुलाब का गला भर आया।

अरविंद ने ढाढ़स देने की एवज में दो ही शब्द कहे "गुलाब तुम्हारी यह तपस्या जरूर सफल होगी। ममता, मय, पति और परिवार की सेवा ही तुम्हारी सच्ची तपस्या है।"

चाय समाप्त हो गई।

गुलाब चली गई और उसके साथ निम्मु भी।

अरविंद खुद नहीं उसका मन चला गया शची के साथ।

शची जिसे वह अपने जीवन का महादान देना चाहता था। बचपन से ले कर आज तक अरबों की तरह जो अपनी औरतों को अपने अन्दर में छिपाए रखते है वह भी अपनी प्रयसि को अपने सीने में छिपाए हुए था। वह अब सोच रहा था कि उसका जीवन अधूरा चुका है। सामाजिक परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। अब वह उसे कैसे प्राप्त कर सकेगा? गुलाब वास्तव में पूर्ण नारी है लेकिन उसकी पूर्णता में भी मुझे पूर्ण सन्तोष क्यों नहीं मिलता? शची! आज शची होती तो मेरी योग्यता का सही मूल्यांकन कर के बाग-बाग हो जाती। पर शची कहाँ चली गई? वह मुझ से बिलकुल नाराज है। जीवन-चक्र भी कैसा है? विषम और विकट।

याद न आते हुए कहा, "शची कहाँ चली गई। घमंड और क्रोध के झोंके उसे तिनके की तरह उड़ा कर ले गए।

कोई बात नहीं। कभी न कभी अरविंद शची को जीतेगा ही। यह विवाह उसके जीवन और प्रगति के लिए श्रेयस्कर है। बिना पस आज

की नेतागिरी भी पंगु है। सफल नेता वही व्यक्ति बन सकता है जो या तो बिल्कुल फक्कड़ होता है या जिसकी तिजोरियों में चाँदी के सिक्के नाचते हों।

चाँदी के सिक्के!

गुलाब!

जीवन का महाप्रश्न!

द्वन्द्व!

संघर्ष, विकट मानसिक-संघर्ष! अरविंद ने मुँह ढँक लिए।

* * *

२१

'बन्धन बहुत तरह के होते हैं परन्तु प्रीति का बन्धन न्यारा ही होता है। भौंरा लकड़ी को काट सकता है किन्तु वह कमल-कोष में प्रीति के कारण शक्ति होते हुए भी कुछ नहीं करता। गुलाब! कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम ही सब शक्तिमान है मनुष्य मात्र को प्रेम में रम जाना चाहिए। प्रेम में अपने आपको आत्मसात करने के बाद प्राणी समस्त दुखों से मुक्त हो जाता है।' अरविंद लेटा हुआ सोच रहा था। उसका मुख उदास था।

गुलाब फर्श पर बिछी दरी पर बैठी-बैठी चादर के बेल-बूटे निकाल रही थी। तिरछी निगाह करके बोली, 'भैया और भाभी के जाने के बाद तुम उदास रहने लगे हो। सारे दिन न मालूम किस विचार में खोए रहते हो। प्रेम प्रेम प्रेम ! न जाने आजकल प्रेम पर उपदेश देना तुम्हें क्यों अच्छा लगता है।'

अरविंद पलंग से उतर कर उसके समीप बैठ गया। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर सहज भाव से बोला "तुम ठीक कहते हो कि राजनीति जैसे नीरस और विवादास्पद विषय का खिलाड़ी प्यार को इतनी

महत्ता क्यों दे रहा है ? राजनीति की मीमांसा करने वाले विद्वज्जन सदैव यह भूल जाते हैं कि जिस राजनीतिक सत्ता का पेट भर जाता है उसके अन्तर का प्यार भी जाग जाता है। मेरा प्यार भी जाग चुका है।"

"तो क्या मैं आपको सतुष्ट नहीं कर सकती ?' गुलाब ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़े प्यार से उसे सहलाने लगी।

'तुम देवी हो सन्तोष सुख और शांति, यह तीनों तुम्हारे रोम रोम में बसे हुए हैं। एक पत्नी जितनी प्रवीण और पवित्र होनी चाहिए, उतनी तुम हो। गुलाब ! पर तुम में उस नारी की तरह वह आग और तूफान नहीं है जो आदमी को पिपासा को मरने नहीं देती। एक शची थी, न मालूम वह बेचारी आजकल कहाँ है ? अरविन्द ने देखा कि गुलाब का चेहरा मलीन हो गया है। चाँद से सलोने मुख को राहु की दशा लग गई है। कमलायत नयनों में गहरा विषाद घुमड़ने लगा है। अत वह अपनी दृष्टि को विश्वामित्र और मेनका के चित्र पर जमाता हुआ बोला, मनुष्य बहुत दुर्बल है और उसकी वासना अत्यन्त प्रबल। युगों की तपस्या और साधना वासना के प्रथम झोंके में समाप्त हो जाती है। वासना के सैलाब को यदि वह रोक सकता है तो केवल पतिव्रत धर्म। और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारी अखंड पति-परायणता मुझे कभी भी नरक के खौलते कुण्ड में नहीं गिरने देगी।

'बाबू जी !' नौकर मनसुख ने किवाड़ की ओट से पुकारा।

'क्या है ?' अरविंद सभलता हुआ बोला।

'ठाकुर साहब आए हैं।'

'उन्हें बैठक में बिठाओ मैं अभी आया।

जब अरविंद बैठक में पहुँचा उस समय ठाकुर नरेन्द्र सिंह दोनों हाथों से अपने सिर को पकड़े हुए थे।

'जय माता जी की।

'आइए अरविंद बाबू !' ठाकुर साहब सतर्क हुए। एक जम्हाई लेते हुए बोले "सूरसिंह को फांसी की सजा हो गई है।

"फिर खुशी मनाइए।

'खुशी क्या मनाऊं इस कांड में मैं तो लुट गया। मुझे कुछ रुपया चाहिए।

"रुपया!" वह इस तरह बोला कि ठाकुर हतप्रभ रह गया।

'मुझे दस हजार रुपए चाहिएं।

"दस हजार!

'अरविंद बाबू मेरी इज्जत आपके हाथ में है। इसे बचा लीजिए।

'बिना जर और जमीन के रुपया नहीं मिल सकता।

'तो क्या हम चोर हैं?

"चोर! वह जोर का अट्टहास कर उठा। ठाकुर जल भुन उठा। अरविंद उसके कन्धे को हिलाता हुआ बोला "ठाकुर साहब! पूंजीवादी युग का सबसे बड़ा महामंत्र यही है कि किसी का विश्वास न करो। देन लेन बाप-बेटे में होता है। न बाप अपने बेटे में एक पाई छोड़ता है और न बेटा अपने बाप का एक पाई के लिए लिहाज करता है। यदि वह ऐसा करता है कि तब आप समझ लीजिए कि वह पक्का व्यापारी नहीं है।

'फिर! ठाकुर की आंखों में प्रश्न नाच उठा।

अपना डेरा बेच डालिए।

डेरा! खानदान का रुतबा!

ठाकुर की आंखें भर गई।

"या अपनी बीवी का जेवर लाइए।

और कोई उपाय ?

'व्यर्थ में उलझना बुद्धिमानों का काम नहीं। जर और जमीन हो तो रुपया दिला सकता हूं समझे।

समझ गया। ठाकुर उठा और चला गया।

अरविंद बोला गया कहाँ था। मनसुख !

'क्या है बाबू जी ?'

"बीबी जी को कहो कि चाय यहीं ले आए।

'बहुत अच्छा।" वह बाहर गया और उसी पग वापस आ कर बोला एक बुढ़िया आप से इसी समय मिलना चाहती है।

"आने दो।

अरविंद समाचार-पत्र के पन्ने उलटने लगा। लगभग पचास वय की वृद्धा। काली-कलूटी और कठोर। चेहरे पर भयानक झुर्रियाँ और कमर झुकी हुई।

आते ही हाथ जोड़ कर बोली, बेटा ! मुझ पर दया करो। तेरी कीर्ति मैंने बहुत सुनी है। सुना है कि तुम देवता की तरह दीन हीन पर दया करते हो ?

'माँ ! आदमी देवता पल भर में बन सकता है इतना जान लो। पर तुम अपनी बात कहो, तुम्हें क्या कष्ट है ?

"कष्ट ? वह क्षण भर के लिए चुप रही। जैसे दुख का सुलगता हुआ शोला उसके मन में भड़क रहा हो। देखते-देखते उसकी आँखों में आँसू छलक आए। विनीत स्वर में बोली मेरा बच्चा सख्त बीमार है। घर में एक पैसा भी नहीं है ।

'मनसुख ! अरविंद ने पुकारा।

'जी बाबू जी।'

बीबी जी से पच्चीस रुपए लाकर इस माँ को दे दो। और माँ जब तुम्हारा बेटा अच्छा हो जाय तो उसे मेरे पास भेजना।'

बुढ़िया भावातिरेक हो उठी। रोती रोती बोली वाकई तुम देवता हो। भगवान तुम्हें चिरायु करें।

बुढ़िया चली गई। अरविंद कुछ देर तक विचारता रहा। देश का व्यक्ति अभाव में जल रहा है। अभाव की पूर्णता ही शासन की सफलता है लोक प्रियता का सही साधन है।'

गुलाब ने चाय लिए हुए कहा "यह नेतागिरी तो बहुत ही बुरा रोग है। सूरज उगने पर उसका दौरा शुरू होता है और नक्षत्र डूबने तक नहीं रुकता।

'जनता की सेवा आसान नहीं है गुलाब। चाणक्य अपने आप को होम नहीं करते तो चन्द्रगुप्त सोना नहीं बनता। ईसा कीलों से नहीं बिंधते तो ईसाई धर्म मर्म हीन ही रह जाता। तथागत अपनी पत्नी और पुत्र का मोह नहीं छोड़ते तो अहिंसा का साम्राज्य स्थापित नहीं होता, सम्राट अशोक की क्रूरता ही नहीं मिटती। बनाने के पहले मिटाना पड़ता है। मिट कर जो बनता है वह अमिट और अजय हो जाता है। यह दुख ही हमें सुख की सत्ता से विभूषित करेगा।

मैं लक्चर सुनते-सुनते तंग आ गई चाय पीजिए।

"गुलाब नाराज हो गई। उसका स्वर दर्द से भर उठा "तुम्हें क्या दुख है?'

"दुख! तुम मुझे प्यार करते हो उसे मैं अत्याचार समझती हूँ। मैं इतनी नासमझ नहीं हूँ कि आपके मन की बात ही न समझूं। आप किसी और को चाहते हैं प्यार करते ओह! उसने अपने मुंह को अपनी हथेली में छिपा लिया। मैं यह क्या कह गई? अपने पति के बारे में मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए। वे देवता होते हैं। आप मुझे माफ कर दीजिए। मैं सीमाहीन हो गई थी।'

अरविंद अविचलित रहा। हंस कर बोला, बात-बात में उग्र होना अच्छा नहीं है। कदाचित तुम इस बात से अपरिचित हो कि मुझे कितनी दुश्चिंताएं एक साथ रखनी पड़ती हैं। तुम्हारा आरोप है कि मैं किसी और को प्यार करता हूँ। हो सकता है किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम पर अत्याचार करता हूँ। गुलाब मेरे हृदय की विशालता और पवित्रता पर संदेह करके मुझे कष्ट मत पहुँचाओ। एक दिन था कि मैं शची को बहुत प्यार करता था। लेकिन मैंने बाद में महसूस किया कि मैं उसे प्राप्त नहीं कर सकता। जो अप्राप्य है उसके लिए

शक्ति व्यय करना हमारा काय नहीं। इस पर तुम नाधी से रूप-गुण में कम भी नहीं हो। फिर मैं अपने को क्यों पीड़ित करू ?

"फिर आप कभी भी परिवार और दाम्पत्य-सुख पर चर्चा क्यों नहीं करते ? क्या जीवन में इतन बड़े दायरे में उनका कोई स्थान नहीं ?

'दाम्पत्य-सुख जिस व्यक्ति के समक्ष साकार खड़ा हो, उसके लिए चर्चा का क्या महत्व हो सकता ? व्यय कल्पनाओं का वितान बुनना भी श्रेयस्कर नहीं।'

"रात को आप अलग रहते हैं, उसे मैं क्या समझूं ?

मैं रात को दस बजे के बाद अध्ययन करता हूँ। विभिन्न मतों धर्मों, नीतियों और शास्त्रों का गम्भीर चिंतन मनन ही मुझे सफलता शृङ्ग की ओर अग्रसर कर रहा है। गुलाब यह निश्चित है कि मैं चाहता तो सुन्दर स सुन्दर और गुणी से गुणी युवती से विवाह कर सकता था, फिर तुम्हीं बताओ कि तुम जसी अपहृत महिला और अशिक्षिता से ब्याह करन का कारण क्या हो सकता है ? सिर्फ कर्त्तव्य की पालना। कत्तव्य के समक्ष सब गौण है। तुम, मैं और हमारे आचार विचार व्यवहार बर्ताव।

गुलाब एकदम शांत हो गई। वह अपहृत ह, यह विचार उसके मस्तिष्क में धुआं बन कर उठने लगा। वह कांपने लगी। वह अपन उस पति पर खामखा ही सन्देह करती ह जो इतना महान् ह जितना ईश्वर। जो इतना उदार ह जितना कण।

वह गद्गद होकर बोली मैं औरत हूँ। शक मेरी नस-नस में बसा हुआ ह। मैं भूल जाती हूँ कि आप महान हैं। आपक सामन बड़ी कठिनाइयाँ हैं। आप मुझे क्षमा कर दीजिए।

'क्षमा !" उसन गुलाब को अपन सीने से लगा कर कहा, 'क्षमा पति अपनी पत्नी को क्षमा नहीं कर सकता है। अधिकार समझ कर अनजान में किया अपराध अपराध नहीं होता। लेकिन जिन्दगी सुख से बसर करना चाहती हो तो आम से ऐसे सवाल न किया करो। वे मेरे

मन को बड़ी तकलीफ पहुँचाते हैं। मुझे अवाग और क्रोधित कर देते हैं। गुलाब ! साजन की प्यारी सजनी वही हो सकती है जो पति को परमात्मा मान कर पूजे। उसकी इच्छा को पूर्ण करे, चाहे वह इच्छा बुरी से बुरी क्यों न हो। हमारे प्राचीन साहित्य में एक ही महासती की कथा आती है जो अपने अपाहिज पति को कन्धे पर बिठा कर वेश्या के घर पहुँचाने जाती थी और सवेरे वापस लाती थी। साध्वी सीता का वनवास जाना इस बात का प्रतीक है कि स्त्री के लिए श्रेष्ठतम पति की आज्ञा है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में तुम आदर्श पत्नी बनने की कोशिश करोगी।

गुलाब रोने लगी थी। उसके छलकते हुए आँसुओं को पोंछता हुआ अरविंद विगलित स्वर में बोला 'प्रायश्चित्त कर रही हो गुलाब ! तुम्हारे बहते हुए अश्रु तुम्हारे पाप का पश्चात्ताप हैं। पश्चात्ताप के उपरान्त आदमी निर्मल हो जाता है—ठीक बादल छट जाने के बाद आकाश की तरह शुभ्र। सुनो गुलाब राजनीति के अखाड़े में अनेक मोड़ आएंगे। लोग मुझे चोर, उचक्का, डाकू व्यभिचारी महान् देवता प्रभु दाता और अन्नदाता कहेंगे। लेकिन तुम्हें सिर्फ इतना ही मानना है कि उपमाएं इन्द्रधनुष की तरह क्षणिक हैं पैदा हुई हैं मिट जाएँगी। सत्य रह जाएगा—तुम्हारा पति केवल अरविंद !

गुलाब चरण-स्पर्श करके चली गई।

अरविंद ने सोचा 'जब तक इस पर पूर्ण आतंक नहीं जमा लिया जाएगा तब तक नाची मिल भी जाएगी तो भी अपने पास नहीं रख सकता। मैं नाची को लाऊँगा ही। नाची के बिना मैं अपूर्ण हूं। अपूर्णता लेकर मनुष्य सुख नहीं पा सकता।

'गुलाब !' उसने पुकारा 'मैं गर्म पानी से नहाऊँगा जल्दी से पानी गर्म कर दे।'

वह स्नानघर जाने के लिए तैयार होने लगा।

*　　*　　*

३० जनवरी १९४८ !

हत्या !"

किसकी ?'

'महात्मा गांधी की।

'नहीं रे !"

"अभी-अभी रेडियो बोला है कि राष्ट्रपिता बिड़ला भवन की सीढ़ियों से उतर रहे थे कि अचानक किसी हिन्दू ने उनके सीने में तीन गोलियाँ दाग दीं। बापू का वहीं प्राणान्त हो गया।'

अरविंद की आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे विश्वास नहीं हुआ कि युग पुरुष की छाती को भी छलनी करने वाला शैतान क्या जीवित है ? तब उसके समक्ष अतीत चलचित्र की भाँति घूम गया। प्रजा में जागृति और समृद्धि लाने वाले व्यक्तियों का अंत इसी प्रकार वेतन को मिला है। वह कुछ देर तक व्यथा में डूबा रहा।

अंत में उसने इस मृत्यु का राजनीति की दृष्टि से मूल्यांकन करना शुरू किया। उसने सोचा—हिन्दू महासभा का सूर्य दिन प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है। हिन्दुत्व की स्थापना के नाम पर इस सभा के नेता केवल अपना नेतृत्व कायम रखना चाहते हैं। न इनके पास कोई सही दर्शन है और न कोई सिद्धान्त—जो इस स्वतन्त्र देश में नयी और नए शासन की स्थापना कर सके। मैंने अपनी राजनीति की पहली क्लास पूरी कर ली। धर्म प्रधान देश में धार्मिक नेता बन कर ही चंद दिनों में लोकप्रिय बना जा सकता है। मैं लोकप्रिय हो गया। प्रजा से सम्पर्क स्थापित हो गया। अब मुझे यदि इस स्वतन्त्र देश का शासक बनना है तो मुझे तुरन्त इस संस्था से पृथक हो जाना चाहिए। कई बार प्रदेश कांग्रेस के मन्त्री और अध्यक्ष मेरे पास आए थे। पद का प्रलोभन और भविष्य की आशा दोनों देने को तैयार थे, पर उचित अव

अरविंद पल भर के लिए रुका और भावनाओं में बहता हुआ करुण स्वर में बोला "उन्होंने छोटे छोटे नादान बच्चों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन कर के उनके सरल मस्तिष्क में जहर भरना शुरू किया। देश में फैली बेकारी का फायदा उठा कर उन्होंने अपना आर्थिक पहलू हल किया। धर्म के नाम पर अपना असली उद्देश्य छिपा कर उन्हें प्रजातंत्र के खिलाफ किया और अन्त में अपनी डिक्टेटरशिप स्थापित कर के सारे विश्व को युद्ध की विनाश आग में झोंक दिया। उस युद्ध की पृष्ठभूमि में भिन्न भिन्न नारे थे। जर्मन अपने को विशुद्ध आर्य कहते थे। स्वस्तिक का निशान भी राजनैतिक उल्लू सीधा करने का साधन मात्र था। इसी प्रकार यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू और हिन्दुत्व के नारे के पीछे हमारी महान् आत्माओं को नष्ट कर हमारी स्वतंत्रता को खतरे में डाल सकता है।

'अन्त में मैं इतना ही कहूंगा कि सरकार ऐसी हिंसात्मक प्रवृत्तियों का दमन करे उन पर प्रतिबन्ध लगाए और उनको पूर्ण रूप से कुचलने का प्रयास करे।

भाषण समाप्त हो जाने के बाद जिलाध्यक्ष, ठाकुर मोहनसिंह एवं कई अन्य वक्ताओं ने बापू को श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

*   *   *

२३

रात हो गई थी।

वातावरण में अजीब सन्नाटा छाया हुआ था। प्रकृति उदास और समाधिस्थ थी। पवन की सांय-सांय वृक्ष का सत्कार कर रही थी। सड़कें शून्य और प्रजा निस्तब्ध थी।

गुलाब खाना बनाने में व्यस्त थी।

अरविंद किसन को समझा रहा था 'सुनो किसन तुम्हारा पहला

काम होगा कि जितन भी शरणार्थी है तुम उनमें यह खबर तुरन्त फला दो कि यह हत्या सघ द्वारा की गई है। अच्छा तो यह होगा कि तुम घर घर जाकर इस बात का प्रचार कर दो।"

किसन ने विश्वास दिलाया 'यह काम बड़ी चतुराई से पूरा हो जाएगा।

"यह लो दस रुपय।" उसने अपनी जब से दस का एक नोट निकाल कर कहा कल से तुम्हें शुद्ध खादी पहननी होगी। अब इस तरह काम नहीं चलेगा, हर जाति और हर वर्ग में अपना एक विशिष्ट व्यक्ति रखना होगा। अब हमें हमेशा राज्य और प्रजा के कर्त्तव्यों को ही केन्द्र बिन्दु मान कर भाषण देने होंगे व विज्ञप्तियाँ प्रसारित करनी होंगी। राज्य में शांति स्थापना, सुव्यवस्था न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज-सुधार आर्थिक समानता के नारे लगाने होंग। अब हमें अपना दायरा बहुत ही विस्तत करना होगा।

किसन श्रद्धालु शिष्य की तरह अरविंद की सभी बातें सुनता रहा। जब बातें समाप्त हुई तब वह चला गया।

अरविंद घटों सोचता रहा। उसके समक्ष कई पार्टियाँ थीं। शोषित और गरीबों का प्रतिनिधित्व करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी। उसन कई बार मथन चिंतन और मनन में इस महान सत्य को समझा है। मार्क्स और एजल्स की सब से बड़ी एतिहासिक देन यह है कि उन्होंन संसार के सभी देशों के मजदूरों को उनके अपन कर्त्तव्य और उनको अपनी भूमिका बताई और उनसे कहा कि उन्हें सबसे पहले उठ कर पूंजी के खिलाफ क्रांतिकारी लड़ाई शुरू करनी चाहिए और इस लड़ाई में सभी मेहनतकशों और शोषितों को अपने साथ एकत्रित करना चाहिए। अरविंद देख रहा है कि अब उन महान् समाजवादियों की भविष्यवाणी पूरी हो रही है। हैदराबाद का सामन्तवाद विरोधी किसान आन्दोलन जिसन विशेषत तेलगाना में अपना उग्र रूप धारण कर लिया है। क्योंकि वहाँ की कांग्रेस का प्रतिनिधित्व पूंजीपति वर्ग एवं सामन्त करते हैं जिन्हें जनता कसई

नहीं चाहती। तभी यहाँ एक संघर्ष शुरू हुआ, और हिन्दुस्तान के इतिहास में पहली बार जनता की सत्ता स्थापित हुई। इसी भाँति अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी अपने नेतृत्व में सामन्ती राजाओं, जमींदारों पूँजीपतियों और विदेशी साम्राज्यवादियों के खिलाफ जनता को संगठित करके उन्हें अपना सही अधिकार दिलाने में संघर्षरत एवं प्रयत्नशील है। सर्वहारा के उत्पीड़न के मर्म को समझकर "दुनिया के मजदूर एक हो" का नारा बुलन्द करने वाली यह जनवादी संस्था एक दिन धन की विषमता मिटा कर विश्व में मजदूरों एवं किसानों की सार्वभौमिक सत्ता स्थापित करने में अवश्य सफल होगी। लेकिन अभी परिस्थिति इनके अनुकूल नहीं है। आधुनिक रूस के लहलहाते खेत और सुखी जीवन जारशाही के अमानुषिक उत्पीड़न की भयंकर खूनी प्रतिक्रिया है लेकिन भारतवर्ष में इसके ठीक विपरीत स्थिति है। अभी तो किसान और मजदूर अपने अधिकार क्या हैं यह भी देर से समझेंगे और मैं उतनी देर तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। तब ? तब मुझे अपनी महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने के लिए कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित हो जाना चाहिये। कांग्रेस के कार्यकर्ता चाहते भी हैं कि मैं कांग्रेस में सम्मिलित हो जाऊँ। पर साथ में मेरी एक शर्त यह भी रहेगी कि मैं कांग्रेस में तब सहर्ष सम्मिलित होऊँगा, जब वह मुझे आगामी चुनाव में अपना टिकट देगी।

तीसरे दिन प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी थे। इस बैठक में कई महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ यह भी निश्चय किया गया कि अरविंद को कांग्रेस में सम्मिलित कर लिया जाय। क्योंकि इसके साथ एक भारी जनमत कांग्रेस में सम्मिलित हो जाएगा और कुछ विरोध उत्पन्न करने वाले जमींदार भी।

भारतवर्ष की सबसे समृद्ध इस संस्था का यह रवैया सदा से रहा है कि प्रतिक्रियावादी तत्वों से समझौता करके जनता के सही प्रतिनिधित्व से वंचित रहना। यही मुख्य कारण है कि जनता दिन प्रतिदिन इससे दूर होती जा रही है।

काफी सोच विचार के बाद अरविंद ने खादी पहन ली। उसके साथ ठाकुर मोहनसिंह, ठाकुर नरेन्द्रसिंह और कुछ अन्य सेठ-साहूकारों ने भी अपना चोला बदल लिया।

एक पूरा का पूरा प्रतिक्रियावादी दल अपने निहित स्वार्थों को लेकर कांग्रेस में सम्मिलित हो गया।

दूसरे ही दिन सभी नये सक्रिय सदस्यों ने आम सभा में यह घोषणा की कि राष्ट्रपिता गांधी जी की हत्या के बाद साम्प्रदायिकता का कुपरिणाम हमारे सम्मुख आ गया है। अत हम रामराज्य की कल्पना करने वाले, मानवता-पोषक, अहिंसा, शान्ति और प्रेम के इच्छुक बनकर तिरंगे झंडे के नीचे आते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सच्चाई, सेवा भावना और जन-कल्याण की प्रेरणा से हम कार्य करेंगे। जनता भी हमें अपना सेवक समझ कर हमें पूर्ण सहयोग देगी।

* * *

२४

देश में प्रजातन्त्र हुआ।

प्रजातन्त्र देश का प्रथम निर्वाचन।

देश की विभिन्न पार्टियों ने अपने-अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। ज्यों-ज्यों निश्चित तारीख समीप आ रही थी त्यों-त्यों चुनाव की सरगर्मियां बढ़ती जा रही थीं। जैसा कि प्रजातान्त्रिक शासन में प्रजा का सही प्रतिनिधित्व करने के लिए उम्मीदवार योग्य शिक्षित गम्भीर, निर्भीक और राजनीति का अनुभवी होना चाहिए वहां उम्मीदवारों का निर्वाचन दलों के कार्यकर्ताओं ने अपने निहित स्वार्थों को मद्देनजर रख कर किया। चाहे वह उम्मीदवार सिद्धान्तत त्यागी लोभरहित, नैतिक और चारित्र की सबलता रखता हो न हो।

प्रत्येक पार्टी के बड़े बड़े घोषणापत्र एवं विज्ञप्तियाँ नित्य प्रकाशित

की जाती थीं। उन में जनता के प्रति अपने भावी कार्यक्रमों और मौजूदा नीतियों का उल्लेख होता था। शासन-सत्ता सम्हालने के बाद जनता की सुख-समृद्धि के सुनहरे सपनों का ओजपूर्ण शब्दावलियों में अंकन होता था।

अरविन्द कांग्रेस का टिकट ले कर खड़ा हुआ था। उस का एक विरोधी तो कोई ईमानदार प्रजासमाजवादी पार्टी का उम्मीदवार था और दूसरा रामराज्य परिषद का कोई जमींदार।

उन को पराजित करने के लिए अरविन्द यन्त्र की भाँति काम करता था। वह समझता था कि यही विजय उसके जीवन के दूसरे मोड़ की महान विजय है।

उसने उन्हीं दिनों एक बुलेटिन का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। इस बुलेटिन द्वारा वह अधिक से अधिक मतदाताओं को अपने साथ कर रहा था। उस बुलेटिन में उसने महात्मा जी के सिद्धान्तों और सम्पूर्ण राम राज्य का नक्शा खींचा था। देश की बेकारी और युवकों को देश की प्रगति और उन्नति में सहयोग देने का आह्वान किया था।

चुनाव तिथि के तीन दिन पहले मलाय को ज्वर आ गया था। उस की हालत ठीक नहीं थी पर अरविन्द अपने समय का 'श्रेष्ठ-तम' अपने मतदाताओं के घरों के चक्कर लगा रहा था। वह सारे दिन एक-एक घर जाता और उन्हें आश्वासन देता कि मैं आप के दुख-दर्दों को दूर करने में तन और मन लगा दूँगा। आप का मत तभी रंग ला सकता है जब आप उस दल को ही मत दें जिस दल का इस देश में जनमत हो। आज जनमत कांग्रेस का है इस लिए आप अपना वोट कांग्रेस को दे कर उसे सबल बनाएं। उस ने सारी-सारी रात अपने कार्यकर्त्ताओं के साथ वे पोस्टर चिपकाए जिन में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था— देश का नाविक किसान और किसान की शक्ति बैल और बैल हमारा चुनाव चिह्न है। अतः कांग्रेस उम्मीदवार श्री अरविन्द कुमार को वोट दो। उस ने एक नया पोस्टर बनाया था। उसमें उस ने निम्न भाव पर ... री

देवताओं के चित्र अंकित करा कर यह नारा सिखाया था कि कांग्रेस धार्मिक स्वतन्त्रता की पक्षपाती है अत कांग्रेसी उम्मीदवार श्री अरविन्द कुमार को वोट दो।

मतदान का समय आया।

अरविन्द की ओर से ठाकुर मोहनसिंह एव ठाकुर नरेन्द्रसिंह मोटरें दौड़ा रहे थे। वधानिक और अवधानिक जितने भी तरीके सम्भव हो सकते थ, वे प्रजातन्त्र देश के प्रथम निर्वाचन में उपयोग किए गए।

परिणाम निकला—अरविन्द भारी बहुमत से विजयी हो गया।

इस चनाव से कांग्रेस के सही सगठन का खाका सबके सम्मुख स्पष्ट हो गया। विशेष कर स्वतन्त्रता सग्राम के प्रमुख सेनानी भूतपूर्व मुख्य मन्त्री को भारी मतों से रामराज्य के उम्मीदवार से पराजय। यह पराजय कांग्रेस के लिए असह्य थी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के माननीय अध्यक्ष को मुख्य मन्त्री की पराजय प्रान्तीय कांग्रेस की हार मालूम हुई।

* * *

२५

राजनीति का चक्र चलता रहा।

कल का धीर, गभीर और उदात्त युवक आज विधान सभा का सदस्य बन गया। सुनते हैं कि चुनाव लड़न के तरीकों के लिए उसन शहर के एक अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि वकील से सलाह ली थी, जिसका परिणाम यह निकला कि रूढ़िवादी जनता न आ अब भी राजतंत्र में विश्वास रखती थी जो अपने राजा को वोट देने को दृढ़ प्रतिज्ञ था ने भी उसे वोट दिये। क्योंकि एक साथ ससद और विधान सभा का चनाव हुआ था और अरविंद का चनाव चक्र अत्यन्त सुदृढ़ था।

इस सफलता की बधाई के रूप में वकील को पूरे एक हजार रुपए मिले।

नयी मिनिस्ट्री स्थापित हो गई। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी की सलाह से उचित पात्रों का चुनाव किया और समस्त मिनिस्टरों की लिस्ट केन्द्रीय हाई कमाण्ड के सम्मुख अन्तिम निर्णय के लिए भेज दी गई।

शपथ ग्रहण करने के पश्चात अरविंद ने गृह मंत्री के रूप में प्रेस प्रतिनिधियों के समक्ष घोषणा की, मैं इस पद को ग्रहण करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हूं और साथ ही शंकाकुल भी। शंकाकुल इस लिए कि लोक हित लोक-कल्याण और प्रदेश की सर्वोत्तम उन्नति में मैं कहां तक सफल होऊंगा यह भविष्य के गर्भ में है। यह पद व्यक्तिगत मान प्रतिष्ठा पर चार चांद लगाने के लिए नहीं है अपितु प्रदेश के सामूहिक विकास में अपनी समस्त शक्ति होम करने को है। मैं पत्र प्रतिनिधियों के समक्ष प्रार्थना करूंगा कि वे हमें कभी दुर्बल और पथभ्रष्ट न होने दें। हम जब जब पद के मोह में उन्मत्त होकर गलत धारणा, गलत योजना और गलत कार्य करने को उत्तेजित हों, तब-तब वे हमें सावधान करें और सही आदेश दें। मुझे विश्वास है कि आप हमारा पथ प्रदर्शन करेंगे।

अरविंद बोलते-बोलते भाव विह्वल हो गया था। आँखों की सजलता में आत्मा का सत्य इस प्रकार चमक उठा जैसे घनघोर घटाओं में बिजली। सब पत्रकार उससे प्रभावित हो गए। दूसरे ही दिन समस्त पत्रों ने उसके भाषण को विशिष्ट रूप से प्रकाशित किया।

गृह मंत्री के पद पर आसीन होने के बाद अरविंद सरकार द्वारा प्रदत्त बंगले में चला गया, पर उसे पूरे दो सप्ताह गुलाब से बात करने तक का अवसर नहीं मिला। उसका जीवन इतना व्यस्त हो गया कि केवल राजनीति की अटकलबाजियों के अलावा उसे कुछ भी नहीं भाता था। अपनी प्रबुद्ध बुद्धि के सहारे वह रात दिन बड़े-बड़े नेताओं से सांठ-गांठ करता रहता था। क्योंकि प्रान्तीय कांग्रेस के संगठन में जो प्रति क्रियावादी तत्व मिल गए थे उनसे जागरूक रहना कर्तव्यनिष्ठ नेताओं का काम हो गया था। सब से पहले उसने उन्हीं जागरूक नेताओं में

अपनी प्रगतिशील विचारधारा का विश्वास बिठाया। ताकि भविष्य में जब कभी भी मिनिस्टरी में परिवर्तन हो तो उसका पद पूर्ववत् कायम रहे।

जब मुख्यमन्त्री भारत के प्रधानमन्त्री से भेंट करने चले तो अरविंद भी उनके साथ योंही घूमने चला गया। लेकिन जाते समय उसने अपनी तिकड़म-उत्पादक बुद्धि का परिचय दिया। अपने बंगले पर सब पत्रकारों को एकत्रित कर के उसने कहा कि हम दोनों प्रधानमन्त्री से प्रांत की राजनीति पर वार्तालाप करने जा रहे हैं।

दिल्ली पहुंचने पर प्रधान-मन्त्री कई विभिन्न मामलों में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने मुख्य मन्त्री से बातचीत करने में सर्वथा असमर्थता प्रकट कर दी और कहा कि हो सके तो आप दो सप्ताह के बाद मिलें।

मुख्य मन्त्री का चेहरा उतर गया।

लेकिन अरविंद हताश नहीं हुआ। वह विकट से विकट स्थिति में भी अपने धैर्य को नहीं खोता था। काफी देर तक विचार कर उसने बड़े ही नम्र व शिष्ट शब्दों में प्रधान मन्त्री के प्राइवेट सेक्रेटरी से निवेदन किया कि आज उनका क्या प्रोग्राम है? यदि सम्भव हो सके तो आप माननीय मन्त्री जी से निवेदन कीजिए कि वे मुझे सिर्फ पन्द्रह मिनट दें। मैं पराजित मुख्य मन्त्री के पुनः चुनाव पर उनसे गम्भीर वार्तालाप करना चाहता हूँ।" उसने बड़ी चतुराई से अन्त में यह वाक्य और जोड़ दिया "यदि आप की कृपा हो तो यह कार्य बड़ी सफलता से हो सकता है। मैं आप का सदैव कृतज्ञ रहूँगा।"

अरविंद इस बात से बिलकुल परिचित था कि मनुष्य का अहम् जब जाग जाता है तब वह बहुत दीन बन जाता है। सेक्रेटरी साहब का अहम् जाग गया। वे विनीत हो कर बोले 'खेद है कि आज प्रधान मन्त्री का कार्यक्रम इतना व्यस्त है कि एक क्षण के लिए भी उन्हें मिलना सम्भव नहीं है।

"क्या आप मुझे उनके कार्यक्रम के बारे में जानकारी दे सकते हैं ? अरविंद ने पूछा।

क्यों नहीं ?' और उन्होंने दिन भर के कार्यक्रम अरविंद को सुना दिए।

कार्यक्रम सुन कर अरविंद ने कहा, क्या आप मुझे चीन के राजदूत को दी गई पार्टी का निमन्त्रण पत्र दिलवा सकते हैं ? मैं राष्ट्रपति भवन में उपस्थित हो जाऊँगा और उनके दर्शन कर लूँगा।

निमन्त्रणपत्र मिल गया।

निमन्त्रण प्राप्त कर के अरविंद मुख्यमंत्री के निवास स्थान की ओर गया जहाँ वे ठहरे हुए थे। संयोग से वे कांग्रेस हाई-कमान से गम्भीर वार्तालाप करने में व्यस्त थे। अरविंद वहीं पर बैठ गया। उसके हाथ में स्टीफन ज्वग' की पुस्तक 'जोजफ फूशे' थी। राजनीति का यह चतुर खिलाड़ी विषम से विषम परिस्थिति में कितना धीर और गम्भीर रह कर प्रस्तुत आपत्तियों एवं संकटों को निवारण करता था। कुरूप दुबला रक्तहीन निस्तेज प्रभावहीन दीखने वाला यह व्यक्ति अधीर से अधीर होने पर भी उन्मादित नहीं होता था। मृत्यु-षडयन्त्र बनते देख कर भी यह अपने वाक्-कौशल का परित्याग नहीं करता था। यही साधारण व्यक्ति एक दिन अपनी कुशाग्र बुद्धि असीम मनोबल, प्राचुर्य आत्म-बल के कारण फ्रांस का महान् राजनेता बना।

अरविंद विचार रहा था एक सार्वजनिक कार्यकर्त्ता अथवा नेता को उतना ही चतुर होना चाहिए जितना कि कौवा, कि वार करने के लिए शिकारी के उठे हुए हाथ को देख कर उड़ जाय, इतना सजग जितना कुत्ता जो आहट मिले कि जग जाय, इतना मिष्टभाषी जितनी कोयल कि सब पर अपने सम्मोहन का जादू डाल सके।

वह विचार ही रहा था कि इतने में मुख्यमंत्री पधार गए। आते ही बोले 'मैं कांग्रेस अध्यक्ष से वार्तालाप कर आया हूँ अभी एक

एम एल ए का जो देहांत हुआ है उसी क्षेत्र से भूतपूर्व मुख्यमंत्री को उप चनाव लड़न का आदेश मिल गया है।"

"यह तो आप ने बड़ी खुशखबरी सुनाई। चलो अच्छा हुआ, झंझट मिटा कह कर अरविंद कुछ देर तक अनमना-सा खड़ा रहा देखिए मैंन प्रधान मंत्री से मिलन का समय निश्चित कर लिया है। बड़ी मिन्नतों के बाद उन्होंने सिर्फ पन्द्रह मिनट का समय दिया है। कोई आप का विशेष संदेश हो तो सुना आऊँ।'

मुख्यमंत्री का सम्मान जैसे कुंठित हो गया। अत्यन्त बलशाली अजगर की भांति उन्होंने एक लम्बा साँस लिया। चोट खा कर जिस तरह साँप कुंडली मार कर बैठ जाता है ठीक उसी प्रकार के हिंस्र भाव मुख्यमंत्री की आँखों में चमके। उस हिंस्र भावों में एक विचित्र दीनता और कातरता थी। वे बोले 'क्या आप मुझे किसी भी तरह अपने साथ नहीं ले जा सकते?'

यह सम्भव नहीं है पर पब्लिसिटी आपकी और हमारी साथ-साथ ही होगी, आप चिंता न करें।" हालांकि अरविंद चाहता तो मुख्यमंत्री को अपने साथ ले जा सकता था लेकिन वह जानता था कि यदि मैं अपना प्रभुत्व इन सब पर स्थापित करना चाहता हू तो इन्हें सदैव इस भावना से पीड़ित करना होगा जिस स य अपने को मुझ से हीन समझें। ये यह अनुभव करें कि मैं राजनीति का प्रवीण नेता हूँ मेरे हाथ में बड़े से बड नेताओं की कुंजी है। मेरी बात कांग्रेस क अध्यक्ष से ले कर साधारण कार्यकर्ता तक मानता है।

ठीक पाँच बजे अरविंद राष्ट्रपति भवन पहुँचा।

अभी तक प्रधानमंत्री नहीं आए थ। वह इधर उधर अपनी जान-पहचान का कोई व्यक्ति ढूँढने लगा। अरविंद को उस उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ कि एक राज्य क गृहमंत्री का क्या अस्तित्व है? जसे एक कुटिया के निर्माण में एक तिनके का होता है सागर में एक लहर का होता है। ठीक यही

अस्तित्व गृहमंत्री अरविंद का था। उसे इतनी उपस्थिति के बावजूद भी अकेलापन महसूस हो रहा था वह सकोच से अभिभूत हो उठा। ग्लानि के मारे उसके भाल पर स्वेदकण उभर आए। वह प्रस्तर की तरह अचल हो करे उद्यान के एक कोन में बैठ गया।

अचानक किसी ने उसे पुकारा, 'हल्लो मिस्टर अरविंद !"

अरविंद अचकचा उठा। देखा अंग्रेजी दैनिक 'प्रभात' का विशेष प्रतिनिधि मिस्टर आप्टे है। कंधे पर कैमरा लटकाये वह मस्ती में घूम रहा है।

अरविंद के तन और मन में शक्ति का संचार हो गया। वह हठात् उठा और अपनी खद्दर की टोपी को व्यवस्थित करता हुआ उत्साह से बोला, हल्लो, डियर आप्टे, हाऊ डू यू डू ?'

ओ के !" आप्टे ने हाथ मिला कर छोटा-सा उत्तर दिया।

'आप यहाँ कैसे ?' अरविंद ने मुस्करा कर पूछा।'

'संपादक जहाँ भी ड्यूटी तैनात कर दे बंदे को वहीं हाजिर होना पड़ता है। पर आप ?' जैसे आप्टे को ख्याल आया कि अरविंद मित्र के अलावा एक राज्य का गृहमंत्री भी है और गृहमंत्री का यहाँ मुझे अभूतपूर्व स्वागत करना चाहिए। बहुत ही शिष्टता से बातचीत होनी चाहिए।

'क्या करूँ मिस्टर आप्टे, प्रधानमंत्री का आदेश ठहरा। जब उन्होंने निमन्त्रण-पत्र भिजवा दिया, तो फिर आना ही पड़ा। बड़े ठसके से अरविंद बोला तुम तो जानते ही हो कि हमारे राज्य की राजनीति बड़ी उलझी हुई है। सामन्त और राजा लोग रूढ़िग्रस्त जनता व अंधविश्वासों को उभार कर कांग्रेस जैसी प्रगतिवादी संस्था को खोखला करने में संलग्न हैं। हमारे भूतपूर्व मुख्य मंत्री की पराजय इस बात का प्रमाण है कि हमारे प्रांत में प्रतिक्रियावादी तत्व पनप रहे हैं। मैं इन्हीं सब विषयों पर प्रधानमंत्री एवं अखिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी के महामंत्री और अध्यक्ष से वार्तालाप करने आया हूँ।' इतना कह अरविंद ने गहरी सांस ली।

आप्टे प्रसन्न मुद्रा में बोला 'आइये आप का सब से परिचय करा दूँ।"

आप्टे साहब आप स्थायी रूप से जयपुर क्यों नहीं आ जाते भाई? रात दिन जनता के हित के लिए दौड़ा करते हैं पर कोई उन कार्यों का उचित मूल्यांकन करने वाला भी नहीं है।"

"हम तो हैं, कह कर आप्टे हंस दिया।

इसके उपरांत आप्टे ने बड़-बड़े महानुभावों से गृहमंत्री का परिचय कराया और कई चित्र उतारे।

साढ़े पाँच बजे प्रधानमंत्री पधारे।

आप्टे प्रधानमंत्री से कई बार मिल चुका था। उसने अरविंद का प्रधानमंत्री से परिचय कराया। प्रधानमंत्री न मुस्कराते हुए कहा "आप तरुण हैं आप को बहुत ही मुस्तदी और ईमानदारी से काम करना चाहिए। हुकूमत चलाने क लिए बड़े परिश्रम की जरूरत है और बड़ा परिश्रम जवानी में ही किया जा सकता है।'

अरविंद प्रधानमंत्री के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण मौन रहा। फिर गम्भीरता से बोला ' हम आप के बच्चे हैं, आप का आशीर्वाद मिलता रहा तो हम देश को समुन्नत बनाने में अपने खून का आखिरी कतरा भी लगा देंगे।

"यही उत्साह होना चाहिए।" प्रधानमंत्री ने उसके कन्धे को थप थपाया। आप्टे ने स्नप लिया। अरविंद हँस पड़ा।

प्रधानमंत्री न कहा मैं इधर काफी बिजी हूँ आप लोगों स फिर शीघ्र ही बातचीत करूँगा।

अरविंद तुरन्त बोला हमारे सामन काफी समस्याएं हैं। इन समस्याओं के समाधान में हम जसे राजनीति के छात्रों क लिए आप

बुजुर्गों का सहयोग वांछनीय है। हम आशा करते हैं कि आप हमें शीघ्र ही दिल्ली बुलाएंगे।'

'जरूर जरूर !' कह कर प्रधानमंत्री वहाँ से आगे बढ़ गए।

इस साधारण बातचीत को भाग्य की मदद से अरविंद ने इतना महत्त्वपूर्ण रूप दिया कि जब अरविंद पुनः जयपुर लौटा तो उस समय सभी मंत्रियों ने उस से अलग-अलग वार्तालाप किया और उसने उत्तर में सिर्फ इतना ही कहा कि मुझे और मुख्यमंत्री को माननीय प्रधानमंत्री फिर शीघ्र ही राजधानी बुलाने वाले हैं। इधर जो उनसे बातचीत हुई वह काफी संतोषजनक रहा। मेरा विश्वास है कि कुछ दिनों के लिए कांग्रेस हाई कमान के दो चार पदाधिकारी भी यहाँ का दौरा करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि अरविंद का जो फोटो विभिन्न समाचार पत्रों में प्रधानमंत्री के साथ प्रकाशित हुआ था उसने प्रांत के मंत्रियों के मस्तिष्क में गहरी प्रतिक्रिया उत्पन्न की और अरविंद के सम्मान में चार चाँद भी लगाए।

किसी किसी मंत्री ने तो यह भी अनुमान लगा लिया कि उच्च सत्ता अरविंद से अत्यन्त प्रभावित है।

और महत्वाकांक्षी अरविंद प्रत्येक मंत्री की कमजोरियों का पता लगा लगा कर उनको अपने हाथ का यंत्र बना रहा था। अरविंद जानता था कि राज्य का मंत्रिमंडल कभी भी पूर्णरूपेण अस्थिरता से मुक्त नहीं हो सकता। क्योंकि इसकी खास वजह थी कि जो प्रतिक्रियावादी तत्त्व कांग्रेस में खादी पहन-पहन कर चार आने के सदस्य बन रहे हैं वे अपने स्वार्थों को कभी भी तिलांजलि नहीं दे सकते। ऐसे समय वही व्यक्ति सुयोग्य नेतृत्व कर सकता है जिसका नाम, जिसका आतंक, जिसका प्रभाव अधिक से अधिक विधान सभाइयों पर और कांग्रेस की विशिष्ट मशीनरी पर होगा।

अतएव वह अपनी मधुरता में सदव चिंतातुर रहता था।

अपनी आगामी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए उसने

निश्चय किया कि उसे प्रवासी पूँजीपतियों से साँठ गाँठ रखनी चाहिए। अत: वाणिज्यमंत्री, जो अरविंद के हाथ की कठपुतली था, के साथ उसने कलकत्ता और बम्बई का दौरा करने का कार्यक्रम बनाया।

उसने वाणिज्य मंत्री से अपने निवासस्थान पर लगभग एक घंटे तक बातचीत की और संयुक्त विज्ञप्ति निकालने का निश्चय किया।

*   *   *

२६

"मनुष्य को अपने कर्तव्य से कदापि विमुख नहीं होना चाहिए। जो होता, उसे हार्दिक शांति प्राप्त नहीं होती। अरविंद बिस्तर पर बैठा बैठा इसी बात का चिन्तन कर रहा था। उसे याद आया कि एक बार गुलाब ने अति दीनता से कहा था, "पति कितना ही कठोर हो, नीच हो, घृणित हो किन्तु पत्नी उसे अपने अन्तःकरण में उसी तरह बिठाती है जिस तरह आराधक अपने आराध्य को, फूल की पखुड़ियाँ मधुप को, और धरती अपने बीज को। क्योंकि पृथ्वी नभ और आकाश से भी विशाल पत्नी का हृदय होता है जो पतिभक्ति में सदा, सर्वत्र, सर्वस्व लीन और विसर्जित है।

अरविंद अपने आपको प्रतारणा देता है, कोसता है, दुत्कारता है।

प्रभात हो गया है।

दिनकरकी नन्हीं-नन्हीं बाल किरणें प्राची के प्रांगण में स्वच्छन्दता से क्रीड़ा कर रही हैं। छोटे-छोटे मेघखंड बाल किरणों की अनुपम क्रीड़ा में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। मधुमय समाँ है।

"मनसुख ! अरविंद ने पुकारा।

'जी, बाबू जी !'

'आज हमारे लिए चाय नहीं बनी क्या ?'

'बन रही है।

काल बल की आवाज—घरर ऽ ऽ ऽ

"जाओ, पूछो कि कौन है ?'

नन्दसुख ने तुरन्त आकर कहा, सेठ प्रीतम चन्द !"

'जाकर कह दो कि बाबू जी की तबियत खराब है आज वे दिन भर आराम करेंगे। आप कल सवेरे आएंगे।

अरविंद इतना द्रवित हो गया कि उसके लोचन तरल हो गए। घनीभूत पीड़ा मृत्यु की सी उदासी पराजित पुरुष की निराशा ! विरस जीवन ! जैसे आज अरविंद के भीतर छिपा 'गुलाब का अरविंद' तड़प रहा है कसमसा रहा है।

गुलाब चाय लेकर आई।

अरविंद को विश्वास नहीं हुआ कि उसकी गुलाब, यह आगन्तुक नारी है या कोई और। स्वप्नाविष्ट व्यक्ति की भांति उसने अपनी आँखों पर हाथ फेर कर अपने भ्रम का निवारण किया। कितना परिवर्तन हो गया है गुलाब में ? गुलाब की तरह हंसता हुआ चेहरा मुरझाए हुए फूल की तरह निष्प्रभ हो गया है। जिसके सलौने चेहरे पर खून टपकता था आज उसके चेहरे पर पीलापन झांक रहा है। जिसके मुस्कान पर सन्ध्या के डूबते हुए सूरज की अन्तिम रेखा स्मरण हो उठती थी, वह मुस्कान रोग की गहरी अंधकार पूर्ण कन्दराओं में डूब चुका है। वह भावों में लिप्त होता गया और यदि गुलाब उसे चाय के लिए न कहती तो कदाचित वह रो उठता।

"आप आज भी उदास हैं। आद्र कंठ से गुलाब ने पूछा।

' नहीं, अपने अपराध का दंड भोग रहा हूँ पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हूं। गुलाब ! इन्सान को उतना ही मिलना चाहिए जितने की उसे जरूरत है। जरूरत से ज्यादा मिल जाने पर आदमी आदमी की सत्ता से हट कर देवता बन जाता है। यह भ्रमात्मक विचार उसे पथ भ्रष्ट कर देता है। तब वह इन्सान अपने आपको सर्वाधार सर्वनियन्ता, सर्वज्ञ मानने लगता है। यही भ्रम उसकी वास्तविक प्रगति, उन्नति

प्रवत्ति और सघप में अभेदय चट्टान ला खड़ी करता है। गुलाब! यदि मैं मत्री नहीं बनता तब क्या तुम्हारी यह दशा हो जाती?

"यह मेरी तस्वीर की बात है।"

"तस्वीर सच्ची तसवीर पर पर्दा नहीं डाल सकती। मन मिनों में यह भूल गया था कि मेरे एक चन्द सी गोरी नार है जो तारों के आगमन पर समपण और मिलन की भावना लिये चकोरी-सी आकुल होकर प्रतीक्षा करती है और सूरज के उदय होने के साथ निराश हो कर गरम आहें छोड़ देती है। गुलाब!" अरविंद ने उसे खींच कर अपन पास बिठा लिया। मुझे "माफ कर दो।'

गुलाब ने अपने आपको अरविंद के सीने में छिपा लिया। वह सिसक पड़ी। दुख का रुका हुआ ज्वार बांध तोड कर पलक-पुलिन की राह से प्रवाहित हो उठा। अरविंद अधीर हो गया, 'भविष्य में मुझसे ऐसी गलती नहीं होगी। जो नेता अपनी पत्नी को चन नहीं दे सकता, वह नेता क्या अपन शहर, क्या अपने राष्ट्र को चन देगा? रो मत गुलाब अब मैं सदा अपन कर्तव्य के प्रति जागरूक रहूंगा।'

अपनी भीगी पलकों से गुलाब ने अरविंद को देखा। वह मुस्करा पड़ी। अरविंद भी मुस्करा पड़ा। गुलाब ने विह्वल होकर अरविंद के मुंह को अपने दोनों हाथों में ले लिया और उसके कपोलों पर चुम्बनों की बौछार लगादी।

नारी जाग गई थी। नारीत्व उमड पड़ा था। नर विमूढ़-सा नारी के पवित्र स्पर्श में अतर्हित हो रहा था, ज्ञानशून्य हो रहा था, एकाकार हो रहा था।

* * *

"अब तो चाय पिलाओ। गुलाब सकोच के मारे पानी-पानी हो गई। एकान्त का यह मधुर अदभरा उपहास गुलाब की धमनियों में शिथिलता भर गया। वह निढाल-सी आराम कुर्सी पर पसरती हुई बोली, 'अब मुझसे कुछ नहीं होगा।'

क्यों ?" अवाक सा रह गया अरविंद।

'मूड नहीं।'

'तो मैं मनसुख को पुकारता हूं। अरे ओ मन ।"

गुलाब ने उसके मुंह पर अपना हाथ रख दिया "इस एकांत को कायम रखने के लिए मैं ही तुम्हें चाय बनाए देती हूं।'

अरविंद मुस्करा पड़ा।

* * *

२७

प्रीतमचन्द चिन्तित हो कर व्यग्र स्वर में बोले 'हड़ताल, हड़ताल हड़ताल, यह क्या बात है मंत्री साहब ? पूरी तनख्वाह पूरी छुट्टियां और पूरी सहूलियत, फिर वे आखिर हम से चाहते क्या हैं ?

सेठ की गोल गोल उल्लू सी आंखें अरविन्द पर जम गई। अरविन्द रूखी मुस्कान हंस कर बोला पूंजी की विषमता मिटा कर नई समाजवादी व्यवस्था का निर्माण!

फिर! वजनदार विचारों का तात्पर्य न समझ कर वह सेठ मूर्ख की भांति अनायास प्रश्न कर बैठा।

आप घबराइए नहीं। शान्ति और सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है। मजदूरों और कर्मचारियों के उचित अधिकार आप को देने ही पड़ेंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि आप के कारखाने में पांच-पांच साल से काम करने वाले कर्मचारी (क्लर्क) आखिर दैनिक वेतन पर क्यों ? इसके विपरीत आप के अफसरों के भाई भानजे जो अयोग्य हैं उन्हें आते ही स्थायी नौकरी दे दी जाती है यह क्यों ? आखिर इस प्रकार की धींगा धींगी आप कितने दिन और चलाएंगे। फिर आप सरकार के सम्मुख शांति और सुरक्षा का नारा बुलन्द करते हैं। अब राष्ट्र परतन्त्र नहीं

गणतन्त्र है। हम और आप सब अब प्रजा के सेवक हैं नौकर हैं। ऐसी हालत में हमें प्रजा के हितों की रक्षा करनी पड़गी।

सेठ जी य तो , पर जीवन का गहरा अनुभव उन को नस-नस में समाया हुआ था। तनिक तीव्र स्वर में बोले "फिर आप हमें और हमारे उद्योग को लूट क्यों नहीं लेते ? इधर हमारी सम्पत्ति देश के उद्योग को पनपा रही है और उधर कुछ कम्युनिस्ट हमें लूटना-खसोटना चाहते हैं। आप चुप हैं, और उल्टा उनका पक्ष लेते हैं ऐसा क्यों? देश का सचालन हम उद्योगपति करते हैं या य मजदूर ?"

बात कठोर थी। यह आक्षेप अरविन्द पर नहीं सारी सत्ता पर था। वह जरा अधिकारपूर्ण स्वर में बोला, "शासन सचालन में किसी व्यक्ति विशेष का हाथ नहीं होता उसे सारी प्रजा चलाती है। देश का कानून नागरिकों को जीविका का पर्याप्त साधन देता है और यह भी कहता है कि आर्थिक साधनों का स्वामित्व और नियन्त्रण इस प्रकार किया जाय कि उस में सब को लाभ मिले। आर्थिक व्यवस्था की मशीन इस प्रकार न चले कि सम्पत्ति सारी एक जगह एकत्रित हो जाय और आप सभी को हानि पहुँचे। इसलिए आप को यह नहीं मानना चाहिए कि जैसा आप कह देंगे वैसा हो जाएगा। समस्या को सुलझाने का एक ही तरीका है और वह है समझौता। आप नतृत्व करने वाली संस्था के लीडरों एवं यूनियन के पदाधिकारियों से मिल कर एक उचित निर्णय कर लें। उनका उचित हक उन्हें दे दें।"

'आप का मतलब यह है कि हम हार मान लें। इस प्रकार उद्योग पति हार मानते रहें तो एक दिन मजदूर-वर्ग हमारे स्वामी नहीं बन जाएँगे

कौन कहता है कि आप हार मान लें ? व्यापार में हार-जीत का तो प्रश्न ही नहीं उठता। प्रश्न उठता है हानि-लाभ का। अत आप कुछ उनकी शर्तें और कुछ अपनी शर्तें रख कर एक मध्यम तरीका अपना लें। हम गांधीवादी समझौते में पूर्ण विश्वास रखते हैं। मूल को आधी

रोटी डालने से उसके अन्तर का विद्रोह दब जाता है। वह शांत हो जाता है। दमन की नीति शोषित-वर्ग को और उग्र बनाती है इस लिये उचित यही होगा कि आप कुछ स्वयं ही रास्ता निकाल लीजिये।' उसने एक गहरी स्वाँस लेकर कहा 'केन्द्र में सूचना देने का मतलब है कि सेंवर कमीशन बठेगा और सेंवर कमीशन जो भी फसला करेगा, उसे आपको मानना पड़ेगा। यदि उसका निर्णय कर्मचारियों के हक में नहीं होगा तो कहा नहीं जाता कि उसे भी असफल होकर लौट जाना पड़े।'

सेठ का मुह उतर गया।

'निराश होने की बात नहीं है सेठ जी। हमारी सरकार किसी के अहित की कामना नहीं करती। हमारा एसा कोई भी सिद्धांत नहीं है कि आपको नुकसान पहुँचे। आप मेरा कहना मानिये और ठीक सा समझौता कर लीजिये।

सेठ कुछ विचार कर बोला,' आपके फसले को मैं मान लूँगा ।

' आप जाइये।

प्रीतमचन्द चला गया।

सूर्य का उत्ताप सृष्टि पर छा चुका था।

गुलाब न मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया।

"क्या बात है, तुम मुस्करा क्यों रही हो ? अरविंद ने ललाट को मसलते हुए कहा जैसे उसके सिर में दर्द है।

मेरा बच्चा आ गया है।'

"तुम्हारा ? उसने विस्मित होकर पूछा।

'जी, मेरा, आओ बेटा।'

एक आठ-दस साल का लड़का। सुन्दर और भोला।

आते ही अरविंद को प्रणाम किया। गुलाब उसे अपने सीने से चिपकाती हुई बोली 'यह गरीब है। खान ■ ठिकाना नहीं है। काम चाहता है। कहता है कि मेरी माँ और बाप मर चुके हैं। केवल दादी है जो सूत कातती है। मैंने उसे साफ उत्तर दे दिया है कि अभी मुझसे

नहीं देख गए। जब रोते रोते उसने मुझे यह उलाहना दिया कि यदि मेरी माँ जिंदा होती तो मुझे कभी इस तरह नहीं रोने देती। इस पर मैं उत्सुकता पूर्वक पूछ बैठी कि तुम्हारी माँ कैसी थी? वह हठात् बोला कि आप जैसी? आज से यह हमारे यहाँ काम करेगा।"

"कोई बात नहीं लेकिन इस प्रकार की करुणा एक मंत्री की पत्नी के लिए अच्छी नहीं है। इस रवय स देश की सारी भुखमरी यहाँ घस आएगी। बात को बदलते हुए अरविंद ने कहा "खाना तयार हो गया?

'जी।'

फिर जल्दी से ले आओ।'

खाना खाकर वह सीधा मुख्यमंत्री की कोठी पर पहुँचा और वहाँ से वाणिज्यमंत्री के पास।

हड़ताल के मामले को उसने इस खूबी से तय किया कि उस क्षेत्र में उसकी वाह वाह हो गई। न सेठ नाराज हुआ और न मजदूर।

अरविंद सोच रहा था कि उसकी हर सफलता के पीछे उसकी लोकप्रियता सन्निहित है

* * *

२८

चाँद अरविंद के पास आया हुआ था। मनसुख और गुलाब गुलाब ने चरण स्पर्श करके पूछा टोटी को नहीं लाए?

वह आने में असमर्थ है। कई दिनों से उसकी तबियत ठीक नहीं है।

'क्यों?' उसने आँखें फाड़ कर यह पूछा 'आपने किसी चिट्ठी में जिक्र तो नहीं किया। क्या आपने हमें गैर समझ रखा है? वह कुछ नाराज सी हो गई।

'नहीं बेटा, परसों के बाद वह फिर माँ बनने वाली है। पूरे दिनों

मठी है। गुलाब प्रसन्नता के मारे एकदम गदगद् हो गई। भावातिरेक हो कर बोली फिर मैं भी चलूंगी आपके साथ?"

अरविंद को कौन सभालेगा?'

वे भी एक माह के लिये कलकत्ता जा रहे हैं।

तब जरूर चलना। सोना का भी मन बहल जाएगा।

आप स्नानादि से फारिग होइये। मैं ताजा खाना बनाए देती हूँ। और निम्मू कसी है?

'मज में है। पढ़ती और खनती है।' फिर इधर-उधर की बातें होती रहीं। तत्पश्चात चांद गसलखान की ओर चला।

रात के लगभग दस बज अरविंद और चांद निचले कमरे में गम्भीर वार्तालाप कर रहे थे। हरी बत्ती का धुधला प्रकाश कमरे में फला हुआ था। छोटा सा पखा धीरे धीरे चल रहा था।

चांद न बहुत ही धीमे से कहा पचास हजार सेठ चंदूलाल न दिये हैं।

'शष रकम? अरविंद न भारी भरकम आवाज में कहा।

सठ न कहा है कि माल पाकिस्तान पहुँचन पर मिल जाएगा।

तुम बनारसीदास को इस बात की हिदायत दे देना कि कहीं सठ की नादानी से हम न मारे जाएँ। अपनी तो इतनी ही जिम्मेदारी होनी चाहिए कि सेठ का माल हिन्दुस्तान की सीमा से हिफाजत क साथ बाहर चला जाय।"

अरे अरविंद बनारसीदास बहुत चलता-पुर्जा है। नीचे से लेकर ऊपर तक उसने सभी व्यक्तियों को पसे से खरीद रखा है। जहाँ से हमारा माल गजरता है वहाँ क सभी सिपाहियों और सैनिकों को चंदूलाल से अलग से तनखाह दिला रहा है।"

अरविंद हस पड़ा भया! इस भूख के साथ ईमानदारी नहीं आ सकती। मैं धन का लोभ नहीं छोड़ सकता। गरीबी के खूंखार पज में

देख चुका है। जान चुका हूँ कि पैसे का अभाव जिंदगी को जहर बना देता है।"

'लेकिन कभी यह रहस्य ।'

"असम्भव है और जब प्रकट हो जाएगा तब देखना ।'

चाँद चुप हो गया। उसके मुख पर उदासी की रेखाएं ऐसी छाई जैसे कोई भूली सुस्मृति एकाएक जाग उठी हो।

अरविंद कहने लगा, 'मैं अपने देश का सब से बड़ा दुश्मन हूं। भगवान से हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि अन्त में वह मुझे फांसी की सजा दे। गद्दार की जितनी घृणित मृत्यु हो सकती है वही मेरी हो। पर मैं जानता हूं कि इस देश के अनेक करोड़पति केवल निजी सुख के लिए राष्ट्र का बड़ से बड़ा अहित कर रहे हैं। योजनाओं का खोखलापन ठेके में रिश्वत का दौर और नौकरियों में गलत मान-दंड क्या यह सब अपराध नहीं हैं? इन्हें हम सब जानते हैं लेकिन हम चुप हैं। सभी के स्वार्थ लोहे की जंजीर की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कब और कहाँ विस्फोट हो जाय और हम सभी पाप के पुतलों का अन्त आ जायगा—अरविंद का व्यथित स्वर चाँद के चेहरे को प्रभावहीन कर रहा था। जीवन के इतने भयकर परिणाम से उसका रोम रोम कांप उठा। वह सोच रहा था कि आदमी इतने बड़े सत्ताव को सम्मुख देख कर क्यों निश्चित बठा है? जानता है कि उसके दुष्कृत्यों पर एक दिन प्रकृति कुपित हो जाएगी, दबी हुई नफिरयां फ्रांस की राज्य-क्रांति की भांति वध-यंत्र 'गुलाटिन' का निर्माण कर लेंगी और एक एक ओर लुटेरे देश के दुश्मन और शोषकों को मार गिराएगी। तब फिर आदमी अपने को सावधान क्यों नहीं करता? क्यों यह जनता और राष्ट्र का अहित करता है?

चाँद आशंका रहित हो कर स्पष्ट स्वर में बोला तुम जानते हो कि बुरे का परिणाम बुरा ही होगा तब तुम ऐसा कार्य करते हो क्यों हो जो तुम्हें सदा दुश्चिंता की ओर अग्रसर करता रहे। फिर तुम्हें अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

अरविंद के होठों पर सूखी मुस्कान नाच उठी, 'मनुष्य के कुछ ऐसे स्वार्थ और मोह होते हैं जिन्हें वह चाहते हुए भी छोड़ नहीं सकता। पूंजी का मोह और महान् बनने की महत्वाकांक्षा आदमी के मन से कभी नहीं जाती। इसके विपरीत मैं भक्त रांका नहीं बन सकता। प्रभु ने भक्त नामदेव के अनुरोध पर रांका की गरीबी दूर करना चाहा। इस उद्देश्य से प्रभु ने रास्ते के बीच सोने की मोहरों की एक थली रख दी। रांका ने उसे देखा। देख कर उपहास भरी हंसी हंसा और फिर धूल उठा कर उसे ढकने लगा। तभी उनकी पत्नी आ गई। पति को किसी चीज को ढकते देख पूछ बैठी 'क्या कर रहे हैं नाथ?' रांका ने कहा, 'सोने को धूल से ढक रहा हूं ताकि मन में लोभ पैदा न हो।' पर उनकी पत्नी बांका खिलखिला कर हंस पड़ी। बोली 'धूल को धूल से ढकने से क्या लाभ?' पत्नी का यह त्याग और निर्मोह की भावनाएँ देख कर रांका गद्गद् हो उठा। भैया! देश के कर्णधारों में त्याग का यही विराट रूप होना चाहिए। त्याग का यही विराट रूप विनाश विश्व का कल्याण कर सकता है।

चांद चिन्तित हो कर आतुरता से बोला 'जीवन-मुक्ति के गहन तत्त्व को समझते हुए तुम स्वयं क्यों पथभ्रष्ट हो रहे हो और साथ में हमें भी कर रहे हो? केवल तुम्हारे लिए हमें भी पाप करना पड़ रहा है।

भैया की नासमझी पर तरस खाता हुआ वह सम्य स्वर में बोला "भैया! इस धरती का नर न तो 'रांका' बन सकता और न आज की नारी उसकी पत्नी 'बांका'। सभी की इच्छाएँ चौकड़ी भरते हुए मृग की भांति छलांगें मार रही हैं। पूंजीपति और नेता बनने की एक दौड़ लग रही है। आदमी बदहवास हो कर भाग रहा है परिणाम से अनजान और चिंता रहित हो कर। मैं राम हूं, सीता मेरे पास खड़ी है। सामने ऐसी सुन्दर मृग खड़ा है। सीता कह रही है मुझे इस मृग का चर्म चाहिए। इतना सुन्दर और प्रिय चर्म और कहाँ मिलेगा? राम कहता है कि अचानक ऐसे अदभुत मृग का मिल जाना, इस वन में जरूर रहस्य

है। पर सीता कहाँ मानती है? त्रिया हठ की पुनरावृत्ति होती है। मग के पीछे राम की सीता भी चली जाती है। सीता के लोप होने के बाद राम विलाप करता है। यही विलाप आज हमारे अंतर में है। बस जरा परिणाम से टकरा जाने दो हमें, सब ठीक हो जाएगा। मनुष्य का विवेक फिर भटकेगा नहीं।"

चाँद निर्वाक रहा। अरविंद के शब्दों की गहराइयाँ उसके पल्ले नहीं पड़ रही थीं।

चुप्पी!

चाँद लक्ष्मण रेखा बनाने में असमर्थ रहा। लक्ष्मण रेखा बना कर सीता के पाँवों का अवलोकन मात्र करने वाले लक्ष्मण ने नारी की मर्यादा की रक्षा की, तो क्या चाँद एक ऐसी रेखा का निर्माण नहीं कर सकता जो अरविंद के भ्रष्टाचार को सीमित कर दे? कर सकता था लेकिन चाँद की भी वासनाएं अभी तक जीवित थीं। अतृप्ति का साम्राज्य उसके चारों ओर मकड़ी के जाल की तरह तना हुआ था। राजर्षि विश्वामित्र की तरह उसकी साधना और तपस्या थी। उन्हीं गरीबी के दिनों में अरविंद को भाई की सचाई के प्रति गर्व था लेकिन आज वह गर्व कहाँ? विश्वामित्र मेनका को देख कर अपनी आसक्ति पर नियंत्रण नहीं रख सका। इससे स्पष्ट होता कि अभाव में त्यागी बन जाना सहज है। यह जगत अभाव का पुजारी है, तपस्वी है। सम्पत्ति में विरक्ति की सम्भावना दुर्लभ है।

चाँद ने मौन भंग किया — मेरा विचार एक सुंदर और अच्छा बंगला बनवाने का है।

अरविंद भाई के इस प्रश्न पर हँस पड़ा, 'सीधे आदमियों को यही तो दुश्चिन्ता है कि पैसा आ जाए तो उसे सम्हालें कैसे? भया! सेठों की तरह पैसों को बचाना सीखो। इन पचास हजार रुपयों का सोना खरीद लो। नोट बदल सकते हैं पर सोना कभी चाँदी और लोहा नहीं होगा।

* * *

'तुम्हारी ऐसी भयानक बातें सुन कर मेरा हृदय काँप जाता है।" गुलाब ने अरविंद को अस्थिर दृष्टि से देख कर कहा मेरा विचार है कि आप अपने काम से काम रखिए। मैं खड़ी खड़ी आप की और भमा की बातें सुन रही थी।

अरविंद बिस्तरे पर लेट कर बोला नारी जब नर के कामों में दखलंदाजी करने लग जाती है तब उसका बड़ा गर्क हो जाता है। वह तनिक देर मौन रहा, जसे कोई निर्णय कर रहा हो। फिर परिस्थिति का अवलोकन कर के बोला, नारी नर की सम्पत्ति बना रहे तो कितना अच्छा हो? तुम गुलाब उपभोग की अत्यन्त सुन्दर वस्तु हो। सप्राण हो, चहकती हो महकती हो फदकती हो। प्रभु ने तुम्हें उवरा धरती बनाया है। यदि तुम अपनी कोमल भावनाओं का परित्याग कर वज्र बनने का प्रयास करोगी तब तुम अपनी स्वाभाविकता को विस्मृत कर बठोगी। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम उन बातों को सुनो भी नहीं जो कठोर होती हैं जिनमें परिवर्तन और विनाश का नारा होता है।'

उसकी जलती हुई आँखों में अपनी आँखें डाल कर गुलाब स्नेहसिक्त स्वर में बोली जो कुछ भी हो पर आप का शुभ मैं हमेशा चाहूँगी।'

"कौन कहता है कि तुम न चाहो। मैं कहता हू कि यदि तुम्हें मेरे बदले प्राण भी देने पड़ें तो दो। रात दिन यह कामना करो कि मेरा पति देवता की तरह निष्पाप और सर्वशक्तिमान बने। उसने एक श्वास छोड़ी, 'लेकिन मैं सत्यवादी हरिश्चन्द्र बन कर अपने वचन के पालन हेतु अपनी बीवी बच्चे, भाई और भाभी की सरे-आम बोली नहीं लगा सकता। मैं जुए में अंधा हो कर धर्मराज (युधिष्ठिर) की तरह द्रौपदी को दाँव पर नहीं लगा सकता। राम की भूल को मैं दोहराना नहीं चाहता। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि मेरी पत्नी केवल गृहस्थी की

पतवार बने और मेरी श्रान्त-क्लांत मनरूपी तरणी को मद-मद गति स सुख-सागर में ले चल। समझी ?'

बात की गम्भीरता क तूल पा जान के भय से गुलाब न उनके समीप जाकर कहा, 'मैं आपको एक बहुत ही अच्छी खबर सुनाना चाहती हू।

अरविंद कटाक्ष करके बोला, तुम्हारे पास केवल दो समाचार हो सकते हैं। पहला यह कि मेरे बाप न अपनी सारी जायदाद मेरे नाम या तुम्हारे नाम कर दी है, और दूसरी यह कि मैं बाप बनने वाला हू।

उसने लाज से गर्दन नीचे झुकाली और अपने दायें हाथ के नाखून को दांतो से काटती हुई धीमे से बोली, यह आपन कसे जाना ?

अपन हाथ से उसकी ठोडी पकड़ते हुए वह प्यार से मुस्करा कर बोला 'भारतवर्ष की जमीन बड़ी उपजाऊ है। कहीं भूले भटके भी बीज पड़ गया तो अंकुरित हुए बिना नहीं रहेगा। वह सावधान होता हुआ बोला, 'हां अब एक बात का ख्याल रखना जरा हिफाजत स रहना। चित्त को स्वस्थ और प्रसन्न रखना। चक्रव्यूह-सी उलझी बातों में मत उलझना। मैं मता हूँ। देवता बनने क चक्कर में कहीं दस्य बन जाऊँ तो फिक्र न करना। समझ लेना कि यह राजनीति ह जहाँ हमेशा नई धार एाए बनती हैं। और यह सभावना वहाँ और अधिक होती है जहाँ बुद्धिहीन व्यक्ति अधिक हों।

'लेकिन आज की बातों से मैं डर गई थी।'

'गुलाब ! वह तनिक झुझला उठा तुम्हारे पास रामायण है ?

हाँ !'

सीता में सब से बडा गुण क्या था ?"

'पति की आज्ञा का पालन करना।

और मैं तुम में भी इसी गुण की बहुलता देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हू कि तुम चाणक्य क शिष्य की तरह हो जाओ। इतना ही ध्यान रखो कि मैं तुम्हारा पति हूँ। केवल पति और इससे अधिक और कुछ नहीं। इस पर भी तुम पख फलाओगी तो विवश हो मुझे काटना पड़ेगा।

पथ में कोई पाथय बन कर आय तो उसे मैं ग्रहण करता हू लेकिन जो चट्टान बनने की कोशिश करता है, उसे मैं चकनाचूर कर देता हूँ।"

उसने जलती आँखों से गुलाब की ओर देखा।

गुलाब की आँखों से दो मोती टपक पड़े।

* * *

३०

कलकत्ता के कई बड़े-बड़ उद्योगपतियों से साँठ-गाँठ करके जब अरविंद एक पार्टी में चौरंगी से गुजर रहा था तब उसकी आँखों में एक युवती समा गई। एक पल के लिए उसने वस्तु स्थिति से अलग होकर ड्राइवर को मोटर रोकने के लिये कहा फिर पद प्रतिष्ठा का ख्याल करके कहा चलो। साथ में बैठे सेठ रतनलाल न अनुनय से पूछा भी कि कोई काम हो तो गाड़ी रुकवा लीजिय।

' भ्रम ही गया था एक जाता हुआ व्यक्ति अपना परिचित जान पड़ा, पर दरअसल वह कोई और ही था।

पार्टी में आज अरविंद का मन नहीं लग रहा था। उद्विग्नता और अतृप्ति की प्रतिक्रियाएँ उसके मुख पर आ-आ रही थीं। जैसे-तैसे उसने भाषण समाप्त किया। आ कर वह सेठ रतनलाल के 'रत्न हाउस' के एक कमरे में अंधेरा कर के सो गया। दरबान को कहला दिया गया कि मिलने वालों को कह दिया जाय कि साहब की तबियत आज अच्छी नहीं है।

लगभग आध घंटे तक वह अंधेरे के विस्तृत दायरे में अपने विचारों को दौड़ाता भगाता रहा पर जो अभाव आज उसके मन में घर कर गया था उसने उसको इतना अचैन और पीड़ित कर दिया था कि वह दम भर के लिए भी अपने अंतर में उठते हुए व्यथा के सागर को रोक नहीं सका।

उसके अवचेतन मन के गहरे सूने साम्राज्य में नीली साड़ी, नीला ब्लाउज और नीली सफ्लि नाच रही थी। एक परिचित तसवीर उसकी विस्मृति के गहन-गह्वर से धीरे धीरे उभर रही थी। यह तसवीर उसके भौतिक जीवन की सब से मधुरतम और विपाक्त प्रेरणा थी। वह उसे कितना भी व्यस्त होने पर भी नहीं भूल सका। उसकी स्मृति फूल के साथ कांटे की तरह लगी हुई थी।

खट खट।

"कौन है?" उसने टूटते हुए स्वर में पूछा।

"मैं हूं रतनलाल।"

उसने द्वार खोला।

"रात के बारह बज हैं। सब सो चुके हैं। तुम मेरे दोस्त हो बचपन के साथी हो। मुझ से तुम्हारे नाज-नखरे नहीं उठाए जाएंगे, मुझ से तुम्हारा इस तरह तड़पना नहीं देखा जाएगा। मैंने सब प्रबन्ध कर लिया है।"

अरविंद ने अपने ललाट पर चमकते स्वेदकणों को पोंछा। बत्ती जलाई। आंतरिक अधीरता के कारण वह अब भी कुछ समझ नहीं रहा था कि रतनलाल के कहने का क्या तात्पर्य है? वह अपने मस्तिष्क को दोनों हाथों से पकड़ते हुए बोला 'तुम कहना क्या चाहते हो?'

"मैं कहना चाहता हूँ कि मन की और तन की थकान को मिटाने के लिए दो पग ह्विस्की के चढ़ा लो और ...,' यह कहता-कहता चुप हो गया।

"और क्या?" वह कुछ झल्ला कर बोला।

"और एक औरत ...।"

"रतनलाल!" वह तपाक से बोला। उसकी आकृति भयंकर हो गई। स्वर में आक्रोश आ गया "तुम ने मुझे क्या समझ रखा है? क्या मैं वाणिज्यमंत्री हूं कि अपना चरित्र दो पग पर बेच दूं? मैं मनुष्य जरूर हूं पर मैंने अपनी सारी वासनाओं और सारी दुर्बलताओं पर काबू पा

लिया है। कर्तव्य के सम्मुख सब को तुच्छ समझता हूँ अपने आप को भी।'

यह सुनते ही निपोरता हुआ बोला अरे भाई, मंत्री बन गए हो तो जरा एण्ट भी ।

अरविंद को इतना क्रोध आया कि रतनलाल के दोनों गालों पर जो भर भर चाँटे रसीद करे पर उसने बड़ी कठिनता से अपनी उग्रता पर काबू पाया, 'यह उन मंत्रियों से कहो जो मंत्री भवन को एक घाँस समझते हैं। और घाँस समझ कर वे अपने कर्तव्य पर छुरी चलाते हैं। चोर डाकू की तरह जनता के पसीनों को लूट कर अपने घर को भरते हैं। मेरा विश्वास है कि कुर्सी मुझ नहीं छोड़ सकती है, मैं कुर्सी को छोड़ सकता हूँ। जनता मुझे नहीं भुला सकती मैं जनता को भुला सकता हूँ। जिस व्यक्ति में एसी कठिन भावना हो वह क्या अपना प्रभुत्व, कर्तव्य गतव्य को इस तरह बचता रहेगा? मैं हराम समझता हूँ—इन सब कामों को। बोलते-बोलते उसकी आँखें सजल हो उठीं। अर्से से संचित व्यथा का ज्वालामुखी फूट पड़ा। विगलित स्वर में बोला, तुमने मित्र होकर मित्र की आत्मा को बहुत कष्ट पहुँचाया है। उसका गरत पर कीचड़ उछाला है। मैं तुम्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता। मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा। लेकिन तुम एक बात का ख्याल रखना कि इसमें मेरे और तुम्हारे व्यापारिक सम्बन्ध नहीं टूटेंगे।" वह बाहर निकलते हुए बोला 'मैं कल ही अपने वाणिज्य मंत्री के यहाँ चला जाऊँगा। आज रात भर गाँव में ठहरूँगा।

रतनलाल ने बहुत विनती की पर अरविंद जानता था कि यहाँ ठहरने का मतलब है कि इसके प्रार्थी मन की विजय और इस के इस गर्व की तुष्टि कि अन्त में मैंने इसे मना ही लिया। अतः यहाँ से चल ही देना मेरे लिए श्रेयस्कर है।

"जरा मैं उस औरत को देखूँ तो!' उसने जाते जाते पूछा।

यह औरत अपनी फ्रेंड है।

"फ्रेंड [illegible]!'

प्रतीक्षा-गृह में बैठी हुई एक औरत।

नीली साड़ी, नीला ब्लाउज और नीली सैण्डिल।

एक झटका अवलोकन और अदला!

'अरविंद! यह मेरी फ्रेंड है।' उसने अपने वाक्य को दोहराते हुए कहा, बहुत प्रगतिशील है आधुनिक विचारों की पुजारिन। जीवन और समाज दोनों के बन्धन नहीं मानती। दिल लगा लेती है तो सब कुछ दे डालती है।'

अरविंद की आंखों में आंसू आ गए।

रुद्ध कंठ से बोला तुम बड़े भाग्यशाली हो रतन, सहज में सब कुछ पा लेते हो।

'तुम ?'

रतनलाल ने अरविंद की ओर देखा। अरविंद की आंखों में अंगारे दहक रहे थे। होंठ तड़प रहे थे। चुप हो गया।

मैं प्लांट जा रहा हूँ यह भव सदा ही भव रहे। समझे?

अरविंद एक व्यथित इन्सान, कार पर आ बैठा।

रतन कह रहा था, 'मैडम! यह आदमी आदमी नहीं देवता है।

आवागमन अब भी सड़क पर चालू था।

अरविंद की कार दौड़ रही थी।

उसके मन में क्या-क्या विचार उठ रहे हैं इससे वह स्वयं अनजान था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे चिन्मय मन धीरे धीरे शून्य हो रहा है। उसके सारे ज्ञान-तन्तु शिथिल हो रहे हैं। नसों में खौलता हुआ खून ठंडा पड़ रहा है। वह बरबस हो गया। उसने नेत्र मूंद लिए। धीरे-धीरे बुदबुदाया सब छोड़ दूँ और अदला ही भाग जाऊं, दूर, सुदूर निर्जन में या आज की अज्ञात अपूर्णता के परिताप में अपने को जला दूँ विकल मन के उत्तप्त सागर में डूब कर अपने आप को मिटा लूँ आत्महत्या कर लूँ। उसे अपना इतना महान जीवन बंध्या धरती की तरह लघु लगा। क्या गलाब क्या चांद, क्या सोना क्या निर्मल और क्या

मनोरंजन ? व्यर्थ केवल जीने का बहाना, केवल जिन्दगी के प्रपंचपूर्ण आडंबर !

*　　　*　　　*

३१

ग्रांड होटल का कमरा।

कमरे का चिकना फर्श। नीरवता और कदमों की होती और मिटती आहट।

व्यग्र मन का संताप और संताप में तप्त हृदय का जलना। अश्रु प्रवाह ! मानव का उग्रतम रूप !

किवाड़ों का धीरे धीरे खुलना। अनुपम-उदास आकृति का प्रवेश। क्रोध का विस्फोट !

'तुम !' अरविन्द ने होंठ चबाते हुए कहा।

'हाँ मैं !' आकृति ने काँपते हुए स्वर में उत्तर दिया।

'साथ में जहर लाई हो ?'

'उसकी जरूरत नहीं समझी।'

'इतनी निर्लज्ज हो गई हो ?'

'बन गई हूँ।'

"चुप। अरविंद झुँझला उठा।

आकृति चुप हो गई। निश्चल और निस्पन्द !

अरविंद कहता रहा "नीची ! मैंने तुम्हें कहा था न कि एक दिन तुम अपने रूप को लेकर वासना के बाजार में आओगी तब तुम्हें पता चलेगा कि पूँजी के पुत्र तुम्हारे रूप का मूल्यांकन इस तरह करेंगे जैसे तुम एक सुन्दर साड़ी हो। स्त्री और साड़ी, यही इस समाज का नया मापदंड है। साड़ी का उपयोग करते-करते वह घिस जाएगी मैली हो जाएगी खोटा हो जाएगी तब उसे वह समाज फेंक देगा और नए रुपयों

से नई साड़ी खरीद कर ले आएगा। इस नियम की पुनरावत्तियाँ होती रहेंगी और कुछ एसे भी शौकीन मिलेंगे जो नित्य नई साड़ी के उपयोग में ही अपनी शान समझेंगे।" उसका कंठ बिलकुल आर्द्र हो गया। अपना मुह दूसरी ओर घुमाते हुए बोला "शची! मैं तुम्हारा एक दिन इतना ही पतनशील रूप देखना चाहता था ताकि तुम्हें रूप के भ्रम का परिज्ञान हो जाए। लेकिन आज स्थिति नितांत ही विपरीत हो गई है। तुम्हारे पतन की कामना करने वाला यह अरविंद आज तुम्हारा पतन देख कर क्षुब्ध और संतप्त हो उठा है। दारुण दुख में जल रहा है। मनुष्य भी कितना विचित्र है कि पहले जिसकी कामना करता है पीछे उसी के लिए दुख करता है। इस परिवर्तनशील वचित्र्य को कदाचित् मानवी-दुर्बलता की संज्ञा देते हैं। शची! एक दिन आवेश में तुमने कहा था कि मैं तुमसे भीख माँगने नहीं आऊंगी। उस दिन मेरे मन को आघात लगा था। मैंने केवल यह समझा था कि मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध सदैव के लिए टूट गए। लेकिन मैं उन सम्बन्धों को तोड़ना नहीं चाहता था और तोड़ना भी मेरे लिए सहज नहीं था। मैं तुम्हें बचपन से प्रेम करता आया हूँ, प्रेम! पर अहम् प्रेम से भी प्रबल तम है। अहम् ने मेरे प्रेम को पराजित कर दिया। धीरे धीरे मुझे तुम्हारा स्वाभिमान भान लगा। गुलाब जो एक अपहृत लड़की थी, उससे ब्याह करके और देश की सेवा में अपना सर्वस्व लुटा कर मैं तुम्हें सर्वथा विस्मृत कर बैठा। इस विराट जीवन में तुम अकिंचन का ध्यान ही नहीं रहा। और जब कभी तुम्हारी स्मृति मानसपट पर उभरती, उस दिन मैं बहुत बेचैन हो जाता था। उस दिन मुझे मेरे सारे सुख शेषनाग के सहस्र फनों से लगते थे। दुखाभिभूत हो कर मैं चेतनाहीन हो जाता और वे सहस्र फन मेरे जीवन में जहर घोलते जाते। शची! प्रीत इसी तरह पीड़ा देती है। तभी मीरा दर्द में पागल होकर गा उठी थी कि घायल की गत घायल जाने और न जाने कोय। तुम्हीं मेरे दर्द को जान सकती थी पर तुम जानकारी से दूर थी। सूफी कवि संत

अरविंद कह उठा हवा का रुख उसकी ओर है। सुख का सैलाब अविलम्ब उसकी ओर बढ़ा आ रहा है।

*   *   *

३२

कलकत्ते के जीवन में अरविंद और वाणिज्यमंत्री ने कई महत्वपूर्ण काम किए। राज्य के विकास के लिए सहायता और वहाँ जाते ही परिवर्तनों के लिए सुदृढ़ मोर्चा।

पराजित मुख्यमंत्री पुनः किसी तरह विजयी होकर विधान सभा में आ गए थे। उनमें इतना त्याग नहीं था कि वे अपना पद छोड़ दें। हाईकमान में उनकी अच्छी पहुँच थी। विधान सभा के कांग्रेस का बहुमत उनकी ओर था। ऐसी विकट स्थिति में प्रवासी व्यापारियों की दिलचस्पी को जान लेना जरूरी था। वे किसको चाहते हैं? उसने कई सेठों से बातचीत की और उनके हृदय के रहस्य के जानने में पूर्ण सफल भी हुआ। प्रायः सेठों का मत पुराने मुख्यमंत्री की ओर ही था। अतः उसने भी अपना मत पुनः पुराने मुख्यमंत्री को सत्ताधीन बनाने के पक्ष में देने का निश्चय किया। वाणिज्यमंत्री ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

लौटने पर अरविंद ने एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। उसमें उसने नई मिनिस्टरी के निर्माण के बारे में एक भी समाचार प्रकाशित नहीं किया। अरविंद की सुतीक्ष्ण बुद्धि इस प्रकार का कोई भी गलत कदम नहीं उठा सकती थी जिसके परिणाम से वह अपरिचित हो। वह सभी सदस्यों की राय जानने के लिए उनसे मिला। उनसे यह तय किया कि वे अपना मत भू० पू० मुख्यमंत्री को ही दें। इधर भू० पू० मुख्यमंत्री के समस्त समर्थक इस गम्भीर बात को तरह उगल रहे थे जिस छोटे-छोटे बच्चे जिनके पेट में कोई बात नहीं पचती।

कांग्रेस-अध्यक्ष से गम्भीरता पूर्वक बातचीत करने के उपरान्त उसने घोषणा की, जनता और प्रवासी व्यापारियों की आखें भू० पू० मुख्य मन्त्री की ओर ! इसके बाद उसने संस्मरणात्मक नालों में एक पूरा लेख लिख डाला।

भू० पू० मुख्यमन्त्री इस नए मन्त्री से बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें जब यह पता चला कि यह नया गृहमन्त्री कांग्रेस के सदस्यों में अपना अत्यंत प्रभाव रखता है तब उन्होंने उसे बुला कर यह आश्वासन दिया कि तुम्हारे पद की सुरक्षा हमारे हाथ में रहेगी। तब फिर क्या था ? अपने पद की सुरक्षा देख कर अरविंद ने एसा उग्र वातावरण उत्पन्न किया कि विवश हो कर वर्तमान मुख्यमंत्री को अपना त्यागपत्र स्वेच्छा से देना पड़ा और भू० पू० मुख्यमंत्री फिर अपनी गद्दी पर आसीन हुए और अरविंद गृहमंत्री ही बना रहा।

अब वह अवसर मुख्यमंत्री की तारीफ करता रहता था।

उसने अपनी लोकप्रियता के लिए के कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया। गाँवों और कस्बों में घूमा और उनको यह आश्वासन दिया कि सरकार शीघ्र ही आप को सकटों से मुक्त करेगी। भूदान की भी परम्परा डाली गई। प्रथम भूदान में उसने अपने मित्र ठाकुर मोहनसिंह से १०० एकड़ भूमि का दान कराया। इससे भी जब वह सन्तुष्ट न रहा तब उसने एक कलेण्डर कम्पनी द्वारा एसे चित्र का निर्माण कराया जिस में उसने अपने आप को भारतमाता के लाडलों में नेहरू, पटेल राजेन्द्र के बराबर बताया। इस कलेण्डर को उसने मुफ्त इस ढंग से वितरण कराया कि एक बहुत बड़ा समूह उसका प्यारा बन गया—उससे परिचित हो गया।

सोने में सुहागा मिलाने के लिए शची भी आ गई। शची को उसने शहर के स्कूल में अध्यापिका बना दिया और घर में आन-जाने के लिए उसे गुलाब का टयूटर रख दिया। उस से वह बहुत कम बोलता था। एक मर्यादा की रेखा उसने अपने और उसके मध्य खींच

ली थी पर यह सत्य था कि अरविंद ने गाधी पर विजय प्राप्त कर ली और गांधी ने अरविंद को देवता मान लिया।

'सेठ प्रीतमचंद रंगे हाथों पकड़ा गया।' यह समाचार ला कर चांद ने अरविंद को घबराए हुए स्वर में कहा।

अरविंद विचलित नहीं हुआ। उसकी गहरी आंखों में निश्चलता पूर्ववत थी। वह शांत स्वर में बोला 'पकड़ा गया बहुत बुरा हुआ। वैसे कोई अपराध महान नहीं है लेकिन यदि उसने हमारा नाम ले लिया तब बहुत अहित हो सकता है। विरोधी दल के पत्र तिल का ताड़ बनाएंगे। भीतर ही भीतर मेरी बढ़ती हुई शक्ति को कुचलने के लिए तत्पर कांग्रेसी घातक वार करने का प्रयास करेंगे। हमें फूंक-फूंक कर कदम उठाना चाहिए।'

चांद ने समझाते हुए कहा 'पिछले सप्ताह वह मुझे पचास हजार रुपए और दे कर गया है'

'अच्छा तुम जाओ। इसका मैं अच्छी तरह प्रबन्ध करा दूंगा। ख्याल रहे कि तुम्हें दिल्ली हो कर जाना पड़ेगा। इस समय तुम्हारा मुझ से मिलना भी अच्छा नहीं है। और हां सुनो ! भाभी टिम्मू और नए मुन्ने को प्यार। भाभी से कहना कि शायद पांच दस दिन में मां बन जाएगी। फिर तुम्हें आना ही पड़ेगा।

चांद चला गया।

थोड़ी ही देर में अरविंद के बंगले पर प्रांत के आई० जी० पी० आए। अरविंद से काफी देर तक बातचीत चलती रही और अंत में एक निर्णय लिया गया। उनके चले जाने के बाद अरविंद के साप्ताहिकपत्र के सम्पादक पधारे। उनको उसने कहा कि कल प्रकाशित हो रहे अंक में जो पाकिस्तान कपड़ा भेजने वाला सेठ पकड़ा गया है उसके बारे में बहुत ही उग्र समाचार प्रकाशित होना चाहिए।

चांद के चले जाने के बाद गुपाल ने मनसुख के हाथ अरविंद को बुलाया। अरविंद झुंझला उठा। उसके समीप आ कर गर्म स्वर में

बोला, तुम्हें बार-बार मेरी आवश्यकता क्यों पड़ती है ? तुम गृहमंत्री की बहू हो, खुद अपनी जरूरत पूरी क्यों नहीं करतीं ?'

गलाब सिसकने लगी। वह सोचने लगी यह व्यक्ति कितना हृदय हीन है। हर दूसरी स्त्री से प्यार और सहानुभूति से बोलता है और घर वालों से बात करने की भी इसे फुर्सत नहीं। क्या नया बनना परिवार के लिए अभिशाप है ? वह रुकते रुकते बोली मेरे पेट में दर्द है।

'दर्द है ?' वह झुंझला उठा। उसने हस्पताल फोन कर के कहा लेडी डाक्टर आ रही है अभी देख लेती है।

अरविन्द चला गया। वही एकांत और वही विचारों का संघर्ष ! आधी रात तक वह सो नहीं सका। फिर उस की उनींदी आँखें हौले हौले बन्द होने लगीं।

प्रभात होते ही अस्पताल से समाचार आया कि उसके लड़का हुआ है। और चाँद के यहाँ से तार आया था कि सेठ प्रीतमचन्द का हार्ट फल हो जाने से हवालात में मृत्यु हो गई है।

यह समाचार पढ़ कर अरविन्द के अधरों पर क्रूर मुस्कान तलवार की धार की तरह चमक उठी। वह उठा और अस्पताल गया। अस्पताल से जब वह लौट रहा था तब उसे नर्स मिल गई। नर्स ने उसे मुस्करा कर सलाम किया।

बंगले में घुसते ही उस ने आज सिवाय बहरे दरबान के सभी को छुट्टी दे दी। उन्हें पाँच-पाँच रुपए दे-दे कर कहा 'जाओ आज खुशियाँ मनाओ तुम्हारे घर 'नया इन्सान' आया है।

एक भयंकर समस्या सुलझाने के कारण वह अपने मस्तिष्क की दाद दिए बिना नहीं रह सका। प्रीतमचन्द की मृत्यु ने इस समस्या को ही समाप्त कर दिया अन्यथा अरविन्द जैसा राजनीति निपुण व्यक्ति कलंकित हो जाता !

उसके साथ ही उसके साप्ताहिक में प्रीतमचन्द के विरुद्ध उग्रतम

शब्दावली में समाचार प्रकाशित किया गया था और उस में यह भी कहा गया था कि विश्वस्त सूत्र से यह भी पता चला है कि वह कांग्रेस का सदस्य है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को चाहिए कि वह राष्ट्र के घातक, इस प्रकार के गर जिम्मेवार व्यक्तियों का कांग्रेस में सम्मिलित करके उस को भ्रष्टाचार से परिपूर्ण न करे।

वह विचारों में निमग्न पेट के बल लेटा हुआ हो था कि शची आई। शची गलाब की गदआइन थी, अत दरबान भी उसक साथ अदब से पेश आता था। शची न कमरे में प्रवेश करते ही कहा आज बहुत खुश नजर आ रहे हो?'

'जानती नहीं मैं बाप बन गया हूँ। वह हठात कह गया और इस के बाद उसन देखा कि उसक इस कथन से शची का चेहरा उदास हो गया है।

शची उसक समीप लेटते हुए बोली 'कदाचित् मैं उस समय सम्हल जाती तो यह हक मुझ प्राप्त होता।'

निस्सन्देह यह हक तुम्हारा ही था, पर उस समय यौवन अन्धा हो कर तुम्हारी नस-नस में समाया हुआ था। धरती की ओर देखता भी नहीं था।

शची बिल्कुल चुप रही।

'शची!" अरविन्द न अपनी उगलियों को शची क बालों में उलझाते हुए कहा 'जब तुम पास में रहती हो तभी मैं राजनीति के दुषय सकट से मुक्त हो पाता हूँ। अपन आप को नता की सत्ता से अलग कर प्रम का पूर्ण मानव समझन लगता हू। अन्यथा मुझ कभी-कभी एसा लगता है कि राजनीति क दाँव-पेच क बोझ से मैं इतना दब जाऊँगा कि फिर वापस नहीं उठ सकूँगा।'

शची न उसक सिर पर अपना मुँह रख कर कहा, मेरी एक सलाह मानो तो इस राजनीति से अब सन्यास ले लो।

वह सकपका उठा यह क्या कहती हो?

वह मुस्करा उठी, "तुम ने सब कुछ पा लिया। चींटी से हाथी बन गए हो फिर चाहते क्या हो?'

"इस प्रश्न का उत्तर मेरे लिए तनिक कठिन है। मनुष्य की लालसा और वासना का पेट देखा है? कभी उसके पेट की गहराइयों का अन्दाज लगाया है? नहीं लगाया तभी कहती हो कि सन्तोष धारण कर लो सन्यास ले लो अन्यथा ऐसा नहीं कहती। यह पेट अगम्य है सीमाहीन है। जितना सब करना चाहोगी, उतना ही विराट होता जाएगा। इस लिए जहां तक हो सकता है, इसके विराट की थाह पाने की चेष्टा करनी चाहिए। मैं ऐसा मनुष्य हूं कि गर्दन नीची करके जी नहीं सकता। और जब तक ऊंची रहेगी, जीता रहूंगा।

"तुम्हें जीतना असम्भव है।' उसने उसके हाथ को छूते हुए कहा 'अरविन्द! वास्तव में तुम ने मुझे पा लिया तुम सच्चे साधक हो। तुम्हारे शब्दों में इतना प्रभाव है कि तुम जिसे चाहो अपनी ओर कर सकते हो।

'देखो शची झूठी प्रशंसा अच्छी नहीं लगती। मैंने तुम्हें कई बार कहा न कि मुझे तू चाहिए तेरा शरीर नहीं। अब प्रश्न खड़ा होता है तुम्हारी उदारता का। शची! हर विजेता की विजय में नारी का सम्मोह छिपा रहता है।"

शची अचल सी उसको एक टक देखती रही।

अरविन्द नेत्र मूंद कर पड़ गया।

*　　　*　　　*

३३

चांद ने अरविन्द को एक पत्र लिखा कि हम तुम से दो अक्तूबर को शहर की नई पाठशाला का उद्घाटन कराना चाहते हैं। यह पाठशाला महात्मा गांधी के सर्वप्रिय प्यारे बन्धु हरिजनों के लिए होगी। जातीय

भदभाव से रहित यह पाठशाला यहाँ के लिए श्रेष्ठ आवश्य है। यदि तुम उद्घाटन करने की हाँ भर लो तो हमारा यह उत्सव अत्यन्त सफल हो सकता है। क्योंकि यहाँ जितने गांधीवादी हैं वे खद्दर और टोपी तक ही सीमित हैं और उन का गांधीवाद वस्तुतः कला तक ही प्रचारित प्रसारित हुआ है। जब तुम आ जाओगे तब इनकी असलियत प्रकट हो जाएगी।

अरविंद ने अपनी स्वीकृति दे दी।

दो अक्तूबर को अरविन्द पत्नी और पुत्र को ले अपनी जन्मभूमि पहुँचा। उस धरती पर कदम रखते ही उसकी आत्मा प्रसन्नता से विभोर हो गई। पुलिस-दल और अपार कांग्रेसी बड़ी-बड़ी मालाएँ लिए खड़े हुए थे। वह उतरा तो दमड़ी प्रसाद 'दिनकर' ने लपक के हाथ मिलाया और दो स्लव लिए। आजकल दमड़ी प्रसाद 'दिनकर' के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र दिनकर 'साप्ताहिक दिनकर' हो गया था। अध्यक्ष, मंत्री, प्रचार मंत्री और जितने भी तथाकथित नेता थे आज स्टेशन पर उपस्थित थे।

कांग्रेस के अध्यक्ष इतनी उपस्थिति देख कर हैरान थे क्योंकि जब कभी भी कांग्रेस की ओर से कोई सार्वजनिक सभा होती तब इन में से एक-चौथाई भी नेता दृष्टिगोचर नहीं होते थे। तत्काल ऐसा मालूम होता था कि ये सभी नेता दौरे पर गये हुए हैं।

अरविन्द ने उत्साह से कहा 'वर्षों के बाद मैंने उस मिट्टी का स्पर्श किया है जिस मिट्टी में मेरा बचपन विचित्र अनुभूतियाँ लिए हुए निहित है। और इस उपस्थिति में सभी मेरे आदरणीय हैं पूज्य हैं, साथी हैं। मैं सभी से प्रार्थना करूंगा कि वे गांधीजी के सिद्धान्तों पर चल कर अपना पथ प्रशस्त करें।' और तब अरविन्द ने जोर से महात्मा गांधी की जय जयकार की। इस के बाद जनता-जनार्दन गांधीजी की जय-जय करती-करती अरविन्द का जयकार करने लगी।

मोटर में अरविंद गमला और जिलाध्यक्ष बैठे।

उसकी अगली सीट पर ड्राइवर क साथ दो पत्रकार। क्योंकि अरविंद आज के युग में पत्रकारों क महत्व को जानता था।

सध्या के छह बजे उद्घाटन समारोह था अत अरविंद ने एक बजे से लेकर तीन बजे तक सबसे छुट्टी माग ली। उसने इस बात को भी मानने से इन्कार कर दिया कि वह सेठ सम्पत्तिलाल के बगले में ठहरेगा। उसने गम्भीर होकर निवेदन किया, गांधी जी हरिजन बस्ती में ठहरते थ और मैं भी वहीं ठहरना चाहता हू लेकिन यहाँ मेरा अपना घर है अत मैं वहीं ठहरूगा।

चार बजे प्रदेश और जिला कांग्रेस कमेटियों क कार्यकर्ताओं की गुप्त सभा रखी गई थी।

अरविंद न घर में प्रवेश किया।

चाद न घर की अच्छी तरह से मरम्मत करा ली थी। ऊपर के कमरे में चांद रहता था और नीचे के कमरे में अनरायी भाभी। खाना साथ ही पकता था। सुन्दर परिवार था।

गुलाब सोना क बच्चे को गोद में लेकर चमे ही जा रही थी और सोना गुलाब क बच्चे को लेकर हाथों स झूला रही थी। निम्मू से यह सब नहीं सहा गया। वह रोने के स्वर में कड़क कर बोली, 'चाचा के मुन्न को मुझ दो।

चाचा के मुन्न को गोद में लेकर निम्मू नाच उठी। नाचती-नाचती बोली माँ! मुन्ना बिलकुल अरविंद चचा जसा है?'

सोना मुँह बिचका कर बोली 'मैं कहती हूँ कि नहीं है।

वह रुक कर बोली 'जरा नाक देखकर कह तेरे चाचे की है या चाची की।'

नाक? नाक चाची की है।'

गुलाब आ गई थी। निम्मू क गाल का चुम्बन लेती हुई बोली, तेरी भी नाक भया जसी है।'

मैं तो सारी की सारी भया जसी हू। वह तेज स्वर में बोली।

खाना न कहा, जान भी लीजिए निमला जी पहले आप भोजन कर लीजिए। रोटियाँ आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।'

सभी चले। वीरेन्द्र के बच्चे भी आगए थ।

अनुराधा और अरविंद बच्चों के भविष्य पर बातें करते-करते शची पर आ गए थ। अनुराधा कह रही थी कि 'अरविंद भया! अपने देश में शिक्षिकाओं का स्तर बड़ा निम्न है। नैतिकता और सम्पन्नता दोनों दृष्टि से वे हेय समझी जाती हैं। मैं कहती हू कि यदि वह तितली स भारी बन गई है तब उसे कोई अच्छी पोस्ट दिला कर गृहस्थिन क्यों नहीं बनवा देते?'

मैं भी यही सोच रहा हूँ। अगले साल में उसे प्रोफेसर बना रहा हूँ। शिक्षामंत्री को मैंन कह दिया है। एक बात से अड़चन उत्पन्न हो रही है कि वह एम ए० नहीं है। इस साल वह एम० ए० की परीक्षा दे रही है। उत्तीर्ण होते ही वह प्रोफेसर बना दी जाएगी और उसका ब्याह भी मैं एक एसे सुयोग्य बेकार व्यक्ति से कर दूँगा जो उसे जीवन में काफी सतोष दे सकेगा।'

बेकार से? अनुराधा न चौंक कर पूछा।

'उस मैं इसी शर्त पर प्रोफेसरी दूगा कि वह शची से विवाह करे।"

"इससे उनका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं हो सकता।'

क्यों नहीं हो सकता? मैं उस व्यक्ति को यह महसूस ही नहीं होन दूगा। आजकल वह इतना तंगी में है कि रोटियों के लाले पड़ रहे हैं। मैं अपने यहाँ उसे बुलाऊंगा शची से परिचय कराऊंगा, दोनों में आकर्षण बढ़ेगा गरीबो उसे शची को प्राप्त करने के लिय उत्कण्ठित और बचन करेगी और शची एक सुन्दर वर पा जाएगी। तब मैं उस नौकरी दिलवाऊगा।

अनुराधा हस पड़ी।

अरविंद गम्भीर हो गया।

सध्या को चार बज कार्यकर्ताओं की जो गुप्त बैठक हुई उसमें कई

कायक्रम रखे गये जिन्हें अरविंद की सुतीक्ष्ण अवसरवादी बुद्धि ने बहुत अच्छे तरीकों से सम्पन्न किया। अंत में कायकर्त्ताओं के आपसी वमनस्य और फूट पर आकर विवाद बहुत ही गम्भीर हो गया। क्योंकि यहाँ के प्राय सभी कार्यकर्ता वतमान मुख्यमंत्री के विरुद्ध थ। अरविंद उनके विरोध का उग्र रूप देखकर सशंकित हो गया और मुख्यमंत्री के समथन में जो वह कहना चाहता था, उसे अपने मन में ही रख लिया। क्योंकि वह जानता था कि प्रजातंत्र प्रजा की शक्ति पर जावित है। और यदि उसे प्रजातंत्र में सदव शक्तिशाली बन रहना है तब उसे प्रजा के रवय के अनुसार अपन आपको ढालना पडेगा। पथ-परिवर्तित करते समय अपनी बुद्धि की उस विलक्षणता का परिचय देना पडेगा जो उसे सदा समथक दल का ही हितैषी समझे। जब विवाद गर्मागम होकर ठंडा हुआ तब उसने इतना ही कहा कि हमें प्रत्येक कदम वधानिक रूप से उठाना चाहिए। असतोष को इस तरह उगल देन का तात्पय यह है कि हम अपन जोश को कम कर रहे हैं, हम अपन आन्तरिक विद्रोह को वाक्य सघष द्वारा शांत कर रहे हैं। हमें जनतंत्र प्रणाली ने यह शक्ति प्रदान की है कि हम सरकार बना और मिटा सकते हैं। जब हमारे पास इतनी महान शक्ति है फिर हमें कदापि सत्य से किनारा नहीं करना चाहिए। अनर्गल सवाद और निराधार चर्चाएं हमारे सगठन पर आघात करती हैं। अत यदि आपको किसी प्रकार के दोष मौजूदा मशीनरी में नजर आते हैं तो आप को प्रांतीय कांग्रेस सभा के अध्यक्ष को लिखित शिकायत पत्र देना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार के मौखिक भ्रमात्मक प्रचार से आप किसी का कुछ भी नहीं बिगाड सकते। हर सही बात के लिए युक्तिसगत साधन भी होना चाहिए। यदि आप जनतन्त्र के नागरिक होकर जागरूक नहीं हैं तो आप देश का बहुत बडा अहित कर सकते हैं।

अरविन्द ने तथाकथित नेताओं को सम्बोधित करके कहा "मैं ने सुना है कि यहा चन्द स्वार्थी व्यक्ति क्षद्र को काय-साधक रूप में अपनाते हैं यह बहुत बुरी बात है। मैं उन से प्रार्थना करूँगा कि वे यदि कांग्रेसी

चलते हैं तो गांधी-वादी सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से पालन करें।

सन्ध्या की सभा में उस ने महामानव गांधी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, 'जिस युग पुरुष ने भारत जैसे दलित पीड़ित देश में राजनैतिक सामाजिक आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया जिस अद्वितीय पुरुष ने जन-जन में समता एकता और प्रेम का संदेश फूंका, उस विश्ववन्द्य बापू को हम नमस्कार करते हैं और उस मनीषी के निर्धारित अहिंसा के मार्ग पर चलने की शपथ लेते हैं।'

उस दिन सभा में शहर के प्रतिष्ठित गण्यमान्य व्यक्तियों के अलावा वे भी व्यक्ति थे, जो नौकरशाही के रोगी के नाम से पुकारे जा सकते हैं। ये रोगी खद्दर और गांधी के नाम से चिढ़ते हैं। कांग्रेस के साथ उन की जो प्रभुता विलासिता और प्रशंसा चली गई है उस से ये मन ही मन बड़े क्षुब्ध हैं। लेकिन आज ये राष्ट्रीय पोशाक में बगुला भक्तों की तरह प्रार्थना कर रहे थे। अरविन्द उनके मनोभावों को ताड़ रहा था। उसे इन निरीह प्राणियों पर दया आ रही थी जो राष्ट्रीयता से अपनी वैयक्तिक विलासिता को अधिक महत्व प्रदान करते हैं।

दो दिन तक अरविन्द का प्रोग्राम काफी व्यस्त रहा। यहां भी उस ने अपनी लोकप्रियता की धाक जमा ही दी। उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि यहां के निवासी अधिकतर ब्राह्मण हैं और ये ब्राह्मण अत्यन्त संकीर्ण मनोवृत्ति, धार्मिक निष्ठावान मूर्तिपूजक एवं कट्टर स्वधर्माव लम्बी हैं। अतः यहां उसने बड़ी चतुरता से धर्म निरपेक्षता की नीति अपनाई। किसी धर्म की उसने कटु आलोचना नहीं की, बल्कि उनके प्रति अपनी सदाशयता ही प्रकट की।

*   *   *

३४

अपनी विजय-यात्रा से अरविन्द उस समय प्रांतीय राजधानी में पहुंचा जब वहां की राजनीति एक विषम समस्या में बिंध गई थी।

इस बार वह अकेला था अतः वह निर्विरोध हो कर छिपी हुई राजनीति को पुनः स्वतन्त्र कराने के लिए कटिबद्ध हो गया। जिस मुख्य मन्त्री को बार-बार पराजित होने के उपरान्त भी प्रांत की बागडोर सम्हाल कर उसके मान को प्रतिस्थापित किया गया था वही मुख्यमन्त्री जब अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगा तब सभी सदस्य सावधान हुए। मुख्यमन्त्री की प्रतिस्पर्द्धा की जलन दिन प्रतिदिन चरम सीमा की ओर पहुंचने लगी। देखते-देखते उसकी स्पर्द्धा घृणा का रूप धारण करने लगी। मन्त्रियों में उसके विरुद्ध एक सगठन बनने लगा। वे कांग्रेस अध्यक्ष को बार-बार कहने लगे कि मुख्यमन्त्री सामन्तों से गुप्त सन्धि करके राज्य के लोकतन्त्र को अयोग्य व्यक्तियों के हाथों सौंप देंगे। वे सभी शान्ति सुरक्षा व्यवस्था और कानून की समाप्ति का नारा बलन्द करने लगे। अरविन्द अभी तक चुप था और जब उसने देखा कि यह नारा अतीत की पुनरावृत्ति और पिष्टपेषण नहीं बल्कि विद्रोह की सच्ची आग है तब वह भी एकदम मुख्यमन्त्री के विरुद्ध हो गया। जैसा वह सदैव करता आया था और उसने एक-एक सदस्य के घर जा कर इस बात की मन्त्रणा की कि हम सभी इस मुख्यमन्त्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास करके इसके मन्त्रि-मण्डल को भंग करा दें।

उसने तुरन्त अपनी भाषण कला का जादू जमींदारों पर चलाया और उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके हितों की पूरी तरह रक्षा करेगा, यदि वे उसे मुख्य मन्त्री बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर सकें तो? सांठ-गांठ सफल हो गई। कल का महान प्रतिक्रियावादी युवक आज प्रांत की बागडोर सम्हालने के लिए तत्पर हो गया। गत दिनों से वह प्रत्येक सदस्य के घर जाता है और उन्हें भी आदर भरी शब्दावली में यह विश्वास दिलाता कि वह आप के संकेत की सदैव प्रतीक्षा करेगा। अन्त में उसने अपनी विजय का अन्तिम अस्त्र फेंका। उसने प्रत्येक सदस्य को कहा कि मुख्यमन्त्री मैं बनूंगा और राज्य-संचालन आप करेंगे। साधारण सदस्य को और क्या चाहिए? केवल मताधिकार

के बदले में मुख्यमंत्री की मर्केस आती है तो क्या कम है ? यह सौदा हानि का नहीं था।

और एक दिन सत्ता के घमण्ड में मदान्ध मुख्यमंत्री का त्यागपत्र देने के लिए कांग्रेस कार्यकारिणी विवश कर देती है। राजनीति उस राजनेता का साथ छोड़ देती है। प्रजा सोचने लगती है कि अब इस मुख्यमंत्री का पतन उसे किस दशा में पुनर्जीवित करेगा ?

राजप्रमुख अरविन्द को मंत्रिमण्डल निर्माण का निमन्त्रण देता है।

अरविन्द मुख्यमंत्री बन जाता है।

प्रधानमंत्री तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के पास जब वह पुन मंत्रि मण्डल निर्माण की सूची ले कर जाता है तब उस तरुण को देख कर प्रधानमंत्री अत्यन्त प्रभावित एवं प्रसन्न होते हैं। अरविन्द महसूस करने लगता है कि उस में एक अदृश्य शक्ति है, एक स्थिर विकासशील प्रवृत्ति है।

मुख्यमंत्री के पद पर अरविन्द विश्वास से आसीन हो गया।

सब से पहले उसने समस्त राज्य का दौरा किया। इस दौरे में उसने प्रत्येक नगर में अपने पक्ष के तीन चार ऐसे व्यक्ति नियुक्त किए जो उसके बारे में संतोषजनक वातावरण तैयार करें और बनाए रखें तथा उसके छोटे से छोटे काम की जानकारी सर्वसाधारण में करा दें। उसने भ्रष्टाचार को रोकने के लिए एक अलग महकमा बनाया और स्कूलों पाठशालाओं के   की मांगों पर ध्यान रखते हुए उसने उनकी फीस भी कम कर दी। एक बार शची के पूछने पर अरविन्द ने हंस कर कहा 'मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करता जिसका परिणाम मुझे ज्ञात न हो। बस तुम्हारी गाथा। अब तुम सोचोगी कि इस बन्धन में मुझ अरविन्द बांध कर सदा के लिए प्रगति-अवरुद्ध कर देगा, पर मैं जानता हूं कि इससे तुम्हारी मुझ पर की गई उदारता कितनी निःशंक और स्वतन्त्र हो जाएगी। यह बन्धन ही मुझे सदा के लिए बन्धनहीन कर देगा।'

शची ने व्यंग्यपूर्ण हँसी हँस कर कहा, अब मैं तुम्हें आसानी से गिरगिट कह सकती हूँ न ?

"नहीं, गिरगिट नहीं इन्द्रधनुष, और इससे भी सही उपमा है मेरे लिए समझदार महत्वाकांक्षी !'

"अब तुम क्या बनना चाहते हो ? शची ने हठात प्रश्न किया।

अरविंद हठात सम्हल गया। शची की हथेली को मलता हुआ गम्भीर स्वर में बोला 'राष्ट्र की सेवा ! शची एक बात बताऊँ।

"हाँ !'

"तुम ने प्रेमचन्द की कहानी 'पंच परमेश्वर' पढ़ी है ? उस कहानी में पद के सत्य का रूप चित्रित है। बताया गया है कि मानव हृदय न्याय का तराजू ले कर इंसाफ का गला नहीं घोंट सकता। मैं भी अपने हृदय में उसी सत्य की श्रेष्ठ अनुभूति के रहस्य का ज्ञान पा रहा हूँ। मेरे अन्तस्तल का सत्य मुझे कह रहा है कि तू चिन्तनशील है और न्याय तेरी चेतना की कसौटी है। मैं अब प्रजातन्त्र शासन व्यवस्था की इस कसौटी में बिलकुल खरा उतरना चाहता हूँ ताकि आने वाली पीढ़ी मेरी स्वच्छाचारिता की चर्चा न कर के मेरी कर्त्तव्य परायणता और देवत्व की सराहना करे।'

शची का अस्थिर चित्त इस गूढ़ बात का अर्थ स्पष्ट रूप से नहीं समझ सका। वह बोली, 'यदि कभी भी किसी भी प्रजा के किसी भी व्यक्ति को हमारे सम्बन्ध के बारे में पता लग गया तो ?

अरविंद के होठों पर क्रूरता भरी मुस्कान नाच उठी। वह स्थिर और निश्चल हो कर बोला यदि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध के बारे में तनिक भी सन्देह हो जाएगा तब मैं तुम्हें अपनी इस चारदीवारी में प्रवेश नहीं करने दूंगा। मैं प्रजातन्त्र देश के एक प्रदेश का मुख्यमन्त्री हूँ। हमारे मुल्क में एक पत्नीव्रत ही आदरणीय है। नपोलियन की तरह अधिकार के अहंकार में डूब कर विभिन्न सुन्दरियों का उपभोग करना हमारे यहाँ पाप समझा जाता है। जो पाप है उसे मैं

फलक के रूप में अपने अंग से नहीं लपेट सकता। शची के मलीन और तप्त मुख पर अपनी दृष्टि जमा कर वह शांत स्वर में पुनः कहने लगा 'मैं जानता हूँ कि मेरे स्पष्ट विचारों से तुम्हारे कोमल मन पर आघात लगेगा। तुम्हारे विचार भंवर की तरह फुत्कार कर के यह भी कह उठें कि मैं दुराचारी हूँ पर मैंने कभी भी दुराचार को प्रश्रय नहीं दिया। मैं यह चाहते हुए भी नहीं कर सकूंगा कि गुलाब मन ही मन में यह संदेह ले कर जलती रहे कि तुम उसकी सौत हो उसके सुख में आग लगाने आई हो और मैं तुम्हारे यहाँ आने पर प्रतिबन्ध न लगाऊँ? यदि ऐसा नाक हो गया तो मैं तुम्हारे आगमन पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगा दूँगा।'

अरविंद काफी देर तक मौन रहा। शची की आखें सजल हो उठीं। उसकी सिसकी सुन कर अरविंद बोला महान व्यक्तियों के चरित्रों के बारे में प्रजा के कान बड़े सतर्क रहते हैं। उन्हें केवल प्रतिध्वनि सुनाई पड़नी चाहिए वास्तविक ध्वनि को वे अनुमान से स्वतः ही पकड़ लेते हैं। यदि यह तथ्य मिथ्या होता तो महान पुरुषों के उदात्त चरित्रों के कलंकित पृष्ठ सदा प्रच्छन्न रह जाते।

अरविंद दूसरे कमरे में चला गया।

शची ने दुःख ग्लानि और घृणा से तड़प कर कहा धूर्त कहीं का।

* * *

३५

अरविंद अब राजनीति और प्रभुता में उन्मत्त नहीं हुआ। राज्य की सम्पूर्ण सत्ता के उन्माद में उसकी आकांक्षाएं अनुचित तरीके से आगे नहीं बढ़ीं। वह पूर्ण स्थिर और धीर गम्भीर रहता था। उसने इतनी संलग्नता और तत्परता से राज्य की कार्य प्रणाली में परिवर्तन करना आरम्भ किया कि मन मंत्रिमंडल के तत्वावधान में सचिवालय व अन्य कार्यालयों में जो निष्क्रियता आ गई थी उसका अंत हो गया। उसने सभी छोटे

मोटे कर्मचारियों में कार्य करने की क्षमता का आह्वान किया और किसी के प्रति अनुदारता का भाव न दिखला कर समन्वय नीति से काम ले कर एक समझौते की सुमधुर भावना का परिचय दिया।

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत संचालित योजनाएँ परियोजनाएँ परिकल्पनाएँ एवं सामुदायिक विकासों की जानकारी उसने छोटे से छोटे गाँव में पहुँचाने की व्यवस्था की।

राज्य के पत्रकारों को जो राष्ट्र के प्रति ईमानदार और स्वस्थ जनमत के हिमायती थे उन्हें उसने आर्थिक सहायता देनी प्रारम्भ की, नाव को वह अपने कुचक्र के वमन से हानि पहुँचाने का रास्ता ढूंढ़ने लगा।

वह खुद अपने कर्मचारियों पर कठोर परिश्रम करने की महत्ता का प्रभाव डालने के लिए सभी उपलब्ध सुख-सुविधाओं का त्याग कर निरन्तर श्रम किया करता था। काम करने की इस क्षमता और दक्षता का सीधा प्रभाव यह पड़ा कि जो निष्क्रिय एवं कामचोर व्यक्ति थे वे सतर्क हो कर काम करने लगे। उन्हें भय होने लगा कि कब यह दानवी मुख्यमंत्री स्वयं काम का निरीक्षण करने आ जाय?

भूस्वामी आन्दोलन ने एक बार अरविंद को धर्म संकट में डाल दिया। वर्षों से धरती के बेटों का जोंक की तरह खून चूसने वाली रक्त-पिपासु जाति ने मुख्यमंत्री की उदारता का अनुचित लाभ उठाने की चेष्टा की।

भूतपूर्व मुख्यमंत्री के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पास करके अरविंद को इस पद पर आसीन कराने का श्रेय इन प्रतिक्रियावादी नेताओं को भी काफी था। उन्हें वे दिन अभी भी कल से जान पड़ते हैं जब अरविंद कटने वाली गाय की तरह दयनीय होकर उनके पास आया था गिड़गिड़ाया था और अपने पक्ष में अपना मत देने के लिए उनसे अनुनय विनय की थी। अरविंद ने तत्काल प्रतिज्ञा भी की थी कि वह उनके हितों और सुख साधनों का ख्याल रखेगा।

और आज जैसे ये जागीरदार और जमींदार अपने उस उपकार का प्रत्युपकार के रूप में वापसी चाहते हैं।

वह मनाओं ने मुख्यमंत्री से भेंट की और मुख्यमंत्री ने बड़ी स्पष्टता से उन्हें कहा, मैं देश की प्रगति में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकता। देश के सर्वांगीण विकास में नई कुत्सित परम्परा डाल कर मैं साधारण प्रजा का अधिकार मगरमच्छ की भाँति नहीं हड़प सकता। मुझे आप से व्यक्तिगत सहानुभूति है और आपके हितों के प्रति सजगता भी है। लेकिन जिस बात से कांग्रेस के नाम पर बट्टा लगता है वह बात मेरे अधिकार में ही नहीं है।

ठाकुर मोहनसिंह से लेकर अन्य जागीरदार-जमींदार निर्वाक रह गए। यदि मुख्यमंत्री के समक्ष निष्ठता का प्रश्न नहीं होता तो वे कदाचित उसे यह सुनाने में देर नहीं करते कि वह दिन भूल गए हो जब तुम एक भिखारी की तरह हमारे पास अपने उत्थान की भीख माँगने आए थे। उन सभी शिष्टमंडल के सदस्यों को हैरत तो इस बात की थी कि अरविंद यह सब कहते तनिक संकोच भी नहीं करता तनिक अधीर नहीं होता।

वे नाराज हो गये।

राज्य की राजधानी के लिए सभी भूस्वामियों का आन्दोलन को व्यापक रूप देने के लिए आह्वान किया जाता है। रक्त पिपासुओं की हिंस्र जिह्वा एक बार फिर लपलपाती है। मानवता के औचित्य पथ के स्वस्थ और सौरभमय वातावरण में विरोधी तत्व फिर पतनशील और विपाक्त वायु की सर्जना करते हैं।

उस दिन अरविंद रामबाण में शर की भाँति बहादुर। उसने इतिहास का विश्लेषण करते हुए कहा जब प्रातःकाल हुआ था। हम ने देखा विपन्न जनार्दन मार्ग में राष्ट्र को कराहते हुए। वर्षों से जनता पर लोमहर्षक अत्याचार करने वाले सिंहासन के पतनोपरांत सूखी भूखी पर मुस्कान लिए प्रजा को। उस प्रजा को जिसे सुख विलास नहीं चाहिए,

जिसे सत्ता और शासन नहीं चाहिए, जिसे चाहिए केवल एक अधिकार— जीने का अधिकार जीने के लिए काम करने का अधिकार और जितना वह उत्पन्न कर सकता है उसे पाने का अधिकार। आज यह भूस्वामियों का प्रतिक्रियावादी और राष्ट्र के लिए घातक तथाकथित जो आंदोलन चल रहा है वह साधारण भूस्वामियों के विकास को रोक देगा, उनकी उन्नति और प्रगति को मिटा देगा। सिर्फ चंद निहित स्वार्थ राज्य में अशांति और विकासशील राजपूत जाति को गुमराह कर रहे हैं। राजपूत इन तथाकथित नेताओं की असलियत पहचानें और अपनी स्थिति का अवलोकन करते हुए अपनी शक्ति का अपव्यय न करें। क्योंकि यह अमिट सत्य है कि इतिहास पीछे नहीं जाएगा वह आगे ही बढ़ेगा।'

लेकिन चंद दिनों के लिए धरने का सोना खाना और पीना इन भूस्वामियों ने हराम कर दिया। लेकिन फिर धीरे धीरे यह आधारहीन आन्दोलन शांत हो गया।

धरने के आंदोलन के शांत होते ही सभी विधान सभा के कांग्रेसी सदस्यों से मिला और भविष्य में उत्पन्न विकट स्थिति से उन्हें अवगत कराया। उसने उन तमाम सदस्यों को सावधान किया कि अब भूतपूर्व मुख्यमंत्री इन प्रतिक्रियावादी तत्वों की अशांति का लाभ उठाने की असफल चेष्टा करेंगे। वे यह भी भरपूर प्रयत्न करेंगे कि मेरे प्रति अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाए, लेकिन मुझे आप सबका पूर्ण विश्वास है कि उनकी कूटनीति यहाँ नहीं चल सकती।

आंदोलन की असफलता के बाद उससे ठाकुर मोहनसिंह ठाकुर नरेन्द्रसिंह और कई विरोधी दल के नेता भी मिले और उन्होंने उसे अपने प्रति किए गये विश्वासघात को लेकर दो-चार कड़वी बातें भी सुनाईं लेकिन वह नाराज नहीं हुआ। उसने आत्म विश्वास की भावना से जाग्रत होकर कहा, 'कोई भी जनतांत्रिक शासन अपनी गौरवमयी परम्परा का परित्याग नहीं कर सकता। जिस वस्तु का प्रत्यावर्तन असम्भव है उसके प्रति चेष्टा करना सर्वथा गलती है।

जब वे अपना अनर्गल प्रलाप बन्द कर देते तब वह पुनः विह्वल हो कर बोलता, 'मैं आपका शुभचिंतक और सच्चा हितैषी हूं पर मुख्यमंत्री जनमत के विरुद्ध नहीं चल सकता और यदि चलने की चेष्टा करेगा तब उसका निश्चित रूप से पतन हो जाएगा।'

अरविंद का निर्धारित लक्ष्य पूरा हो गया। कांग्रेस से लेकर दिल्ली के केन्द्रीय शासन तक ने उसके इस रक्त हीन दमन की सराहना की। इस अवसर का लाभ उठाने के ख्याल से वह एक बार फिर दिल्ली के लिए उड़ा। इस बार उसने प्रधानमंत्री से लगभग एक घंटा बात की। कांग्रेस कमेटी के महामंत्री से लगभग दो घंटे वार्तालाप किया और उस सार हीन वार्तालाप को उसने महत्वपूर्ण करार देकर गुप्त रखा। इस प्रच्छन्न प्रक्रिया में उसकी अतिमानवीय प्रगल्भता निहित थी और उसके प्रभाव का प्रकोष्ठ स्निग्ध हो उठा।

कांग्रेस के साधारण सदस्य से लेकर विधान सभाएं एवं राज्य के संसद सदस्य तक उसकी शक्ति के मूल्यांकन को लेकर आतंकित हो गए। इसमें एक और रहस्यपूर्ण बात थी कि इन भेंटों को समाचारपत्रों ने अत्यन्त तूल देकर प्रकाशित किया था।

* * *

३६

मुख्यमंत्री अरविंद का एक व्यक्तिगत पत्र बीच में ही उड़ा लिया गया और जिसकी सूचना भी उसी क्षण अरविंद तक पहुंच गई। उस पदाधिकारी को उसने उसी क्षण अल्प काल के लिए पदच्युत कर दिया और उसे साधारण क्लर्क बना कर राज्य के उस भाग में भेज दिया जहां उसके जीवन के संरक्षण का कोई ठिकाना नहीं था। जहां उसका जीवन का क्रम कछुए की चाल से चलता हुआ अंत में विनष्ट हो जाएगा। यहां भी अरविंद ने बड़ी चतुराई का परिचय दिया। यह

जानता था कि उस पदाधिकारी को सदय के लिए पदच्युत करने का तात्पर्य यह है कि उसके विरोधी दल के व्यक्तियों को कुछ कहने का अवसर देना। अतः उसने धैर्य से इस मामले को सुलझा लिया और इस उदाहरण से उसने एक शिक्षा पाई कि अपने को शत्रुओं से हमेशा दूर रखो।

उसे चाणक्य और बुढ़िया की कहानी याद हो उठी। महामंत्री चाणक्य नंद वंश का नाश कर मगध पर चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा शासित राजतन्त्र की स्थापना कर चुका था। इस विजय के उल्लास में उस का अहम् तनिक अधिक विस्तार पा गया था। एक रोज महामंत्री वन की राह कहीं जा रहा था कि एकाएक एक बुढ़िया को अपना नाम लेते सुन वह निकट की झोंपड़ी के पास गया। उसने सुना कि एक वृद्ध कण्ठ स्वर ममता से परिपूर्ण हो कर कह रहा है, कि बेटा तू तो रोटी बीच-बीच से खा कर मुझे महामंत्री की गलत राजनीति की याद दिला रहा है। बेटा पूछता है कि क्यों माँ महान कूटनीतिज्ञ के बारे में तुम्हारे यह शब्द अशोभनता प्रकट करते हैं व जाहिर करते हैं। वृद्धा अट्टहास कर उठी। लम्बे स्वर में बोली कि जा रे जा जानती हूँ मैं तुम्हारे महामंत्री को। यही उस की कूटनीति है कि मगध को अधीन करके निश्चिंत हो गया। सोचता ही नहीं कि चारों ओर शत्रु आँख लगाए बैठे हैं कि कब अवसर मिले और कब मगध के राज्य को चूर्ण विचूर्ण कर दें।

कहते हैं कि उसी दिन से कौटिल्य ने विशाल सैन्य संगठन कर के मगध की सीमाओं के राज्यों पर आक्रमण बोल दिया।

आज अरविन्द सोच रहा था कि जब तक वह अपने आप को अपने शत्रुओं से एकदम मुक्त नहीं करेगा तब तक उस की सत्ता की नींव सुदृढ़ नहीं हो सकती। उसने धीरे धीरे विरोधी दल के समस्त पदाधिकारियों को चालू मशीनरी से अलग कर दिया। नमी का ब्याह करके उसे भी एक कालेज की प्रिंसिपल बना कर अपने से दूर कर दिया और उस के पति को भी उसी शहर में एक अच्छा पदाधिकारी बना कर भेज दिया

हालांकि उसकी इस नीति से शची के हृदय को आघात जरूर लगा। उस न मन ही मन यह भी सोचा कि यह नींबू के निष्प्रयोजन छिलके की तरह रस निचोड़ कर फेंकी जा रही है पर फिर भी वह चुप रही। उसे यह अन्याय मुस्कराते हुए सहना पड़ा। विरोध की भावना उठने पर भी वह चुप रही। अरविन्द के इस दुष्कृत्य के पीछे छिपी विरक्ति से परिचित हो कर भी वह शांत रही—क्योंकि वह इस कटु सत्य से अच्छी तरह भिज्ञ थी कि अब वक्त उसका साथ दिन प्रतिदिन छोड़ रहा है। इस जीवन यात्रा के सौन्दर्यहीन होते हुए भी यात्री के लिए एक ऐसे पाथय की जरूरत है जो निस्वार्थ भावना से यम समझ कर उसका मरण पर्यन्त साथ दे।

अरविन्द अपने छोटे मोटे सभी शत्रुओं से मुक्त हो कर सत्ता के मद में झूलने लगा। समय उसे कह रहा था कि तुम चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुके हो अब तुम्हारा पतन अवश्यमेव होगा पर यह राजनीति का चतुर खिलाड़ी पतन के परिणाम से परिचित हो कर व्याकुल नहीं होता बल्कि कभी-कभी अपने मन में उत्पन्न होने वाली असंदिग्ध अवस्था पर वह बड़ी प्रवीणता से आधिपत्य कर लेता।

विरोधी दल के व्यक्ति उस से असन्तुष्ट रहते ही थे। और भू० पू० मुख्यमंत्री पुनः देश की हाई-कमान को अपनी भूतपूर्व देश-सेवाओं की दुहाई द्वारा इस बात के लिए बाध्य कर रहा था कि उसे एक बार और अवसर मिले। अविश्वास का प्रस्ताव जो उसके विरुद्ध बहुमत से पास हुआ था वह सिर्फ वर्तमान मुख्यमंत्री की चालबाजी से।

इस बीच अब अरविंद के विरुद्ध एक जनमत और विधान सभा में बहुमत बनाया जा रहा था तभी एक बड़ी गलती अरविंद कर बैठा। शिक्षामन्त्री से उसका झगड़ा हो गया था, क्योंकि शिक्षा विभाग का जो डाइरेक्टर था वह अरविंद का समर्थक नहीं था जिससे अरविंद को कभी-कभी बड़ा परेशान होना पड़ता था। अतः उसने शिक्षामन्त्री को उसे पद से अलग करने को कहा। शिक्षामन्त्री का वह विशेष कृपापात्र

था। कहते हैं कि उसकी नियुक्ति के लिए, सिफारिशों के लिए शहर की कई कुलीन सुन्दरियाँ आई थीं। शिक्षामंत्री ने अरविंद के समक्ष वर्तमान डाइरेक्टर को न हटाने की निष्ठता के साथ विवशता प्रकट कर दी। दोनों में तनातनी हो गई। अरविंद ने क्रोध में उससे इस्तीफा माँग लिया। शिक्षामंत्री ने इस्तीफा देने से इन्कार कर दिया। बस फिर क्या था दोनों में संघर्ष उत्पन्न हो गया।

भूतपूर्व मुख्यमंत्री को इस अवसर का लाभ उठाना ही चाहिये था और उसने उठाया। इस नाजुक परिस्थिति में भी अरविंद ने अपनी धृष्टता को नहीं छोड़ा। वह एक बार फिर अपना कुचक्र चलाना चाहता था पर इस बार वह सर्वथा असफल रह गया।

धीरे धीरे स्थिति बिगड़ती गई पर अभी विरोधी दल के अगुआ शिक्षा मंत्री को इतना बहुमत प्राप्त नहीं हुआ था कि वह अरविन्द को त्यागपत्र देने के लिए विवश कर दे।

अरविन्द इस समय के परिणाम से परिचित हो गया।

उसने अपने तमाम आत्मीयों को अच्छे-अच्छे स्थायी पदों पर भेज दिया ताकि उसके पतन के पश्चात वे सभी उसकी सराहना करें। यह उसकी दूरदर्शिता थी कि वह हवा के रुख को शीघ्र और ठीक-ठीक पहचान लेता था। उसने मन ही मन यह निर्णय सा कर लिया था कि इस बार की पराजय उसे अतिशीघ्र पुनर्जीवित नहीं होने देगी।

वह इस संकट स्थिति में तो था ही, कि अचानक एक करोड़पति महन्त के खिलाफ जनता ने हल्का रोष प्रकट किया। यह रोष छद्म रूप से प्रकट हुआ था अतः उसने अपने बहुत ही निपुण और विश्वास पात्र गुप्तचरों को आदेश दिया कि शीघ्र ही इस रोष के पीछे छिपी प्रवृत्ति का पता लगाएँ।

स्वामीभक्त गुप्तचरों ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि यह महंत धर्म की आड़ में अनाचार और भ्रष्टाचार को घोर प्रश्रय दे रहा है। मन्दिर में अपार धनराशि है और महंत विलास के सागर में इतना डूब गया है

कि उसकी वासना की तीव्र क्षुधा बलवती हो कर प्रत्येक की बहू-बेटी की मांग करने लगी है। महंत धर्म विरुद्ध सभी आचरण करने लगा है जैसे मद्यपान और सुन्दरी भोग।

अरविन्द इस मामले पर कई दिन तक गम्भीरता पूर्वक विचारता रहा। उसके विरुद्ध बन रहे विषाक्त वातावरण की आवाज दिन प्रतिदिन समीप आ रही थी। वह उस आवाज के परिणाम को भी पहचानता था। उसकी कुशीलता और कुरूप सुन्दर साधन निकालने में सिद्धहस्त था। वह किसी उद्घाटन के सिलसिले में उस शहर में जा पहुंचा।

महंत ने उसे निमन्त्रण दिया। अरविन्द ने निर्विकार भाव से उस का निमन्त्रण स्वीकार किया। भोजन के पूर्व वह महंत के कान में अपने गुप्तचरों द्वारा यह बात डालने में सफल हो गया कि आप के विरुद्ध कई शिकायतें पहुंच गई हैं और शीघ्र ही आप की सम्पत्ति यथानिक रूप से हस्तगत कर ली जाएगी।

भोजनोपरांत महंत ने उस से लगभग एक घंटा तक वार्तालाप किया। क्या वार्तालाप हुई इससे सभी अपरिचित हैं। लेकिन अरविंद मुस्कराता हुआ बाहर निकला। ऐसी प्रसन्नता उसके मुख पर तभी हो जाती थी जब वह मनोवांछित फल पाता था।

अरविंद को अब अपने पतन का जरा भी भय नहीं था। उसने वहां से आते ही एक विज्ञप्ति जारी की। उसमें उसने महंत के प्रति प्रजा के रोष को बताते हुए उन्हें अपना शहर न छोड़ने की कड़ी आज्ञा दे दी।

शत्रुओं ने इस रहस्य का पता लगा लिया।

एक दिन विरोधी पत्रों ने विस्तृत रूप का उल्लेख दे कर यह समाचार प्रकाशित किया कि महंत से मुख्यमंत्री ने लाखों रुपए खा कर जनता के प्रति अन्याय किया है। मंत्री प्रजा के सम्मुख स्पष्टीकरण करें।

लेकिन अरविंद ने अपने साप्ताहिक में इस घटना का इतना सबल दस्त जवाब दिया कि सभी चुप हो गए। उसने लिखा "कुछ समाचार

पत्र, जिनका निम्न स्तर, जिनकी कोई नीति नहीं है जिनका भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में कोई योग नहीं, वे पत्र सरकारी विज्ञापन को प्राप्त न कर के इस तरह के भ्रमपूर्ण और निराधार समाचार प्रकाशित करते रहते हैं। इस समाचार में सत्य का और तथ्य का सर्वथा अभाव है। विवेक और गम्भीरताहीन इस समाचार में केवल आक्रोश और रोष झलकता है। मैं प्रजा और प्रजा के कर्णधारों से प्रार्थना करूंगा कि वे इस प्रकार के समाचारों से उत्तेजित और अधीर न हों। यदि इसमें सत्य का आभासमात्र भी है तो मैं प्रत्येक व्यक्ति को ललकारता हूं कि व मुझ पर आरोपित किए गए लांछनों को प्रमाणित करें।"]

पर अरविन्द इतना उतावला और मूढ़ नहीं था कि अपने पीछे कोई भी चिह्न शेष छोड़ देता। विरोधियों ने बहुत प्रयत्न किया पर वह बिलकुल मौन रहा। जरा भी विचलित और अस्थिर नहीं हुआ। इस बार उसकी यह जीत तो हो गई, पर उसने यह तय कर लिया कि उसे शीघ्र ही कुछ दिन के लिए राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए। लेकिन इधर कोई ऐसी गम्भीर चर्चा नहीं हुई थी जिससे उसे अति शीघ्र ही इस्तीफा देना पड़े। उसे यह विदित हो गया था कि एक ज्वालामुखी उसके विरुद्ध भड़कने को तैयार है। अतः उसने बड़ी शान से मंत्री-पद से इस्तीफा देने का निश्चय किया।

एक दिन वह प्रांतीय प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष से मिला और उसे सविनय कहा 'मेरा विचार है कि मैं अपने पद से इस्तीफा दे दूं।

'क्यों? ऐसी स्थिति तो नहीं आई है" उन्होंने चौंक कर कहा। उनके ललाट पर बल पड़ गए।

'आप का कहना है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर ही मैं इस्तीफा दूं। बात यह है कि मैं इस पद पर रहूं या न रहूं मुझे कोई सुख और दुख न होगा लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि मेरे कारण दूसरी पार्टियों वालों को कांग्रेस की आलोचना करने का अवसर प्राप्त हो।

ठीक है भाई !" उन्होंने बजुग की तरह गर्दन हिला कर कहा। तुम्हारा इस तरह इस्तीफा देना भी अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ सकता। अचानक इतने बड़े परिवर्तन के पीछे किसी रहस्य के होने की सम्भावना का अनुमान क्या नहीं लगाया जा सकता ? आप के इस्तीफे को ले कर विरोधी दल वाले भाँति भाँति की अटकलबाजियाँ लगाएँगे, जो आप के और कांग्रेस के लिए सर्वथा प्रतिष्ठाघातक सिद्ध होंगी।

'फिर आप को मेरी ईमानदारी का पूरा समर्थन करना पड़ेगा तथा एक स्पष्टीकरण पत्र प्रकाशित करना पड़ेगा जिसमें अफवाह फैलाने वाले व्यक्तियों को तिरस्कृत किया जाए एवं भविष्य के लिए उन्हें सावधान होने का आदेश दिया जाय।

अध्यक्ष ने यह करने के लिए आश्वासन दे दिया।

इसके बाद वह प्रत्येक सदस्य के पास गया और उनसे अपने इस्तीफे का जिक्र किया ? इस प्रकार अभिनय से उसे इस बात की पूरी पूरी जानकारी हो गई कि कौन कौन उसका समर्थक है और कौन-कौन नहीं ? मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया जाय तो उस क्रिया की यही प्रतिक्रिया हो सकती है कि जो व्यक्ति स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है वह सत्ता का लालची नहीं बेईमान नहीं दम्भपूर्ण स्वेच्छाचारी नहीं। अतः उसने अपने इस अभिनय के फलस्वरूप प्रत्येक सदस्य की आन्तरिक सहानुभूति प्राप्त कर ली। तब वह इस परिणाम पर पहुँचा कि उसे त्यागपत्र देने की कोई जरूरत नहीं है।

विरोधी दल का प्रभावात्मक संगठन उग्र रूप धारण करता गया। उन्हें अपनी सफलता प्राची की ओर प्रभातकालीन उदय होते हुए सूर्य की भाँति लगी। अंत में एक दिन अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाना तय हो गया। उस दिन के ठीक एक दिन पहले अरविंद ने एक बार पुनः अपने पक्ष में मत देने वालों की कोठियों के द्वार खटखटाए, उनसे अनुनय विनय की और उन्हें अपने बच्चे की कसम खाकर यह विश्वास बंधाया कि उस ने भूतकाल में जो गलतियाँ की हैं, उन्हें वह भविष्य में नहीं दोहराएगा।

यदि उसने अज्ञानवश कोई भूल कर दी है तो आप उसे बताइए, मैं स्वीकार करूँगा । गलती का संशोधन करूँगा ।

प्रस्ताव के पक्ष विपक्ष में मतदान होने के पश्चात विरोधी दल को मुँह की खानी पड़ी । अरविंद इस बार भी विजयी हुआ । लेकिन इस बार उसने निपुणता से अपने मंत्रि-मंडल में से दो विरोधियों को बाहर कर दो नये मंत्री सम्मिलित किए, जिनके पीछे कांग्रेस संगठन का बहुमत था । अब वह निश्शंक हो गया था, उसका मंत्रित्व निर्भय हो गया । लेकिन उसके अधिकार की वासना और स्वत्व के प्रति उत्कट लालसा उसे प्रौढ़ रूप में उन्मत्त कर रही थी ।

वह पूर्ण रूप से सत्ताधीश बन बैठा । धीरे धीरे उसका मानस इस सत्य को भी विस्मृत करने लगा कि वह प्रजातंत्र का निर्वाचित शासक है । इतनी उन्मत्त अवस्था में भी उसके मस्तिष्क की स्थिरता पूर्ववत थी । उसकी जागरूकता जीवित थी और यही जागरूकता उसे अपने सहयोगियों की कृपा पात्र बनाए हुए थी ।

* * *

३७

इसके बाद गणतंत्र दिवस आया ।

इस दिवस पर अरविंद ने जो भाषण दिया वह अत्यंत उल्लेखनीय था ।

उसने बड़ी विनम्रता से मंच पर खड़े होकर निवेदन करना प्रारम्भ किया, "माननीय अध्यक्ष भाइयो और बहनो !

सब प्रकार के प्रभुत्व से सम्पन्न भारत के गणराज्य की आज वर्षगाँठ है । स्वतंत्रता प्राप्त किए आज सात वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । सन १९४७ में हमें अत्यंत त्याग और संघर्ष के पश्चात राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई और २६ जनवरी १९५० को अनेक कठिन संघर्षों के पश्चात् हमारा

का आवागमन सुलभ हो जाएगा। तब न सम्पू को बैलगाड़ी की निकासन के लिए भौटिए का मुंह ताकना पड़ेगा और न भौटिए को अपने भाते के लिए अपनी घर वाली का लम्बी देर तक इन्तजार करना पड़ेगा। क्योंकि मान लो रास्ते के बीच कोई वेगपूर्ण बरसाती नाला हो तो वह बेचारी कैसे आएगी ?'

प्रसन्न मुद्रा से अपार जन समूह को एक बार अरविन्द ने देखा। उपस्थिति प्रसन्नता के सागर में डूबी हुई थी। उसने कहा 'इसमें हमारे पूज्य विनोबा भावे के भू दान, श्रमदान, सम्पत्तिदान आदि का बड़ा हाथ है। हम उनके भी कृतज्ञ हैं। सिंचाई साधनों का विकास, औद्योगिक प्रगति शिक्षा विद्युत विकास खनिज सम्पदा चिकित्सा एवं जन-स्वास्थ्य समाज कल्याण कार्य श्रम कल्याण, अल्प आय गृह निर्माण सहायता व पुनर्स्थापन स्वायत्त शासन और अकाल सहायता पर बहुत ही संयत एवं सहानुभूति पूर्ण स्वर में प्रकाश डाला। उस ने जनता की मनोवृत्ति का अध्ययन करते हुए चतुर जननायक की भांति अकाल समस्या पर विस्तृत रूप से कहा। क्योंकि वह जानता था कि यह समस्या इस राज्य में सिर के दर्द की भांति अचानक ही उपस्थित हो जाती है। वह बोला, आकाश में मेघ उमड़ रहे हैं। अमृत बरस रहे हैं। खेतों में लोग उल्लसित हो कर बीज बो रहे हैं। उनकी गृह-लक्ष्मियां एक धारी की चूनरियां ओढ़ अपने खेत में काम कर रही हैं। श्रम देविया श्रम से अभिभूत हो कर गुलाब के फूल की तरह खिल उठी हैं। क्योंकि उनका श्रम साकार रूप धारण कर धरती के गर्भ से पैदा हो रहा है। देखते-देखते बालें झूमने लगती हैं और उन बालों के बीच ढोला मारू और रामू-चनणा के मधुर मिलन लेते हैं। स्वर्ग धरती पर उतर आता है।

"अचानक अमृत के अभाव में जवान बालें मुरझाने लगती हैं। रामू चनणा की आँखें अनन्त अन्तरिक्ष में दूर-दूर तक फैल जाती हैं पर बादल कहाँ ? जीवन के अभाव में जीवन मुरझा जाता है। देखते-देखते श्रम

देवता का माँ सर्पिन की भाँति अपने सहस्रों बच्चों को पौधों को, डसने लगती है। शहर चढ़ता है और पौध झुलस लगते हैं। महामारी और भूख का साम्राज्य छा जाता है। रोटी के अभाव में जन-समूह चारों ओर तूफान की भाँति उमड़ पड़ता है। देश की स्थिति और प्रगति में असंतोष उत्पन्न होने लगता है। हम भी कभी कभी परेशान से हो उठते हैं और इस परेशानी का सदा के लिए अंत करने के लिए ही नवाई, भाखरा और चम्बल की सिंचाई योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। इनके पूरा होते ही राज्य लहलहा उठेगा। गाँव झूम उठेंगे।

उसने बड़े ही उत्साह से कहा।

'हमारे राज्य में और राज्यों की तरह डाकू उपद्रव मचा ही रहे हैं। निसंदेह उनके पीछे बड़े-बड़े जमींदारों तथा ठाकुरों का हाथ है और धीरे धीरे इन हाथों का रूप रंग बदलते-बदलते अन्त में नेताओं तक पहुंच गया है।

हमारे गुप्तचर विभाग ने छान बीन करके यही सूचना दी है कि इन डाकुओं के साथ कोई भी कांग्रेस का नेता नहीं है अपितु ये जन्मजात अपराध की भावना लिए हुए कुछ सैनिक हैं जिन्हें भूतपूर्व अंग्रेजी सरकार ने अवकाश दे दिया था। हाँ, इस बात की जरूर धुंधली झलक प्राप्त होती है कि इनके पीछे कुछ प्रतिक्रियावादी तत्व जरूर काम कर रहे हैं लेकिन वे इतने प्रच्छन्न रूप में हैं कि हम उन पर या उनके प्रोत्साहन पर कार्यवाही नहीं कर सकते।

"पर इसका मतलब यह नहीं है कि हम निष्क्रिय होकर बैठ रहेंगे? नहीं वर्तमान सरकार इन इन्सानियत के दुश्मनों के दमन के हेतु कठोर कदम उठाती आ रही है और कानून और व्यवस्था की स्थिति को संतोष जनक रखने के लिए कितने ही गिरोहों को समाप्त कर दिया है। जैसे हमारे सिपाहियों से डाकुओं की कई मुठभेड़ें हुई जिन में लगभग आधा दर्जन डाकू मारे गए। सकड़ों गिरफ्तार किए गए। उनसे हजारों की सम्पत्ति बरामद कर जनता की उन्नति के हेतु लगाया गया क्योंकि यह

जनता की अपनी ही सम्पत्ति है। कई गिरोहों को एकदम समाप्त कर दिया गया है। हालांकि इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए हमारी देशभक्त पुलिस के कई जवांमर्दों को भी अपनी जान गवानी पड़ी है। डाकुओं को पनाह देने वालों का पूर्णरूप से समाप्त करके उत्पात को रोका गया है। हम उन दिवंगत जवांमर्दों को श्रद्धा से मस्तक झुकाते हैं। अंत में मैं एक बार पुनः गणतंत्र दिवस का अभिनन्दन करता हूं।

इस भाषण की प्रकाशित प्रतियां सम्पूर्ण प्रांत में वितरित कराई गई और वर्तमान उपस्थिति पर उसके भाषण का अत्यंत ही गहरा प्रभाव पड़ा। क्योंकि इसमें उसके विस्तृत ज्ञान का परिचय मिल रहा था। भाषण लिखित नहीं था अपितु कुछ-कुछ मंत्री जिन्हें अपने ही विभाग का पूर्ण ज्ञान नहीं था ये झेंप से गए जिनको अरविंद भलीभांति जान गया।

अरविंद ने बैठे-बैठे सोचा यह भाषण मेरी विजय को स्थिर रखेगा।

* * *

३८

अचानक नावी आ गई थी।

गुलाब अपने बच्चे 'प्रभू' को महला कर कपड़े पहना रही थी। प्रभू उछल-कूद कर अपनी अस्पष्ट भाषा में बोल रहा था। क्या बोल रहा था इसे गुलाब ही समझ पा रही थी।

नावी को देख कर गुलाब विभोर सी हो गई। अपने आंचल को सम्हालती हुई, उसने चरण-स्पर्श करने के लिए झुकी कि दादी ने उसे रोक कर आलिंगन में बांध लिया बस गुलाब बस! कैसी हो?

अच्छी हूं, और आप?'

'मैं बहुत प्रसन्न हूं। मुख्यमंत्री की कृपा के कारण से इतना बच गई हूं कि अब जिन्दगी भर उऋण नहीं हो सकूंगी।'

'देखा जीजी, उन्होंने जिन्दगी में इतना कष्ट और दुख भोगा है कि अब व स्वाभाविक ही करुण हो गए हैं। हर व्यक्ति की सहायता करना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं।'

नाची उद्दाम स्वर में बोली, 'सम्बल अर्चना-सा हो रहा है उनकी दया को प्राप्त किए। गुलाब बहन, इस बार मैं यदि भया के यहाँ भाभी से मिलने गई थी। मैंने देखा कि सारे शहर में उसकी तस्वीरें लगा हुई हैं। लोग अरविंद को बहुत प्यार करते हैं। देवता की तरह पूजते हैं। लोगों का अनुमान है कि एक वही एसा मत्री है जो जनता क दुख को अपना दुख समझता है।

गुलाब गदगद हो गई। श्रद्धा के भाव जसे उसके अन्तःस्तल में उमडने लगा। बोली 'मैं भी एसे देवता को पा कर निहाल हो गई।

नाची जसे जड हो गई।

'जीजी।

हु।'

'आप उदास क्या हो गई?'

'नहीं तो।

''जीजा की याद आ गई क्या?

सावधान होती हुई नाची बोली 'हाँ हाँ, उनकी याद आ गई सोचती हू, कौन उनकी देख रेख करता होगा?

तभी हम लोगों को एक खत भी नहीं लिखा। जीजी इस तरह प्रम में डूबना अच्छा नहीं है।

'क्यों? जसे वह चौंक पडी।

गुलाब के गाल लाल हो उठ। शम से होंठों को दबाती हुई बोली 'दूसरा मेहमान ।" उसने मुस्करा कर अपने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया।

नाची की मुख मालाव का भावना आ लालित हो उठी। भावावेग में

उसने गुलाब के गाल का चुम्बन ले लिया 'तुम सौभाग्यवती हो न, गुलाब! माँ बन कर तुम अपने परलोक को भी सुधार लोगी।

गुलाब ने उपहास से कहा 'अभी तो आप की शादी हुई है जीजी, देखती जाइएगा पूरी फौज तैयार हो जाएगी।'

शची ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सूखी मुस्कान हँस पड़ी।

आप आज उदास क्यों हैं? लीजिए चाय आ गई, चाय पी लीजिए।'

शची चाय पी कर बाहर जाने को उद्यत हुई। गुलाब ने कहा 'खाना कितने बजे खाएगी?

कोई निश्चित टाइम नहीं है।"

शची बाहर चली गई। गुलाब भी विचारमग्न हो गई। वह सोच रही थी कि शची जीजी को क्या दुख है?

वास्तव में यही प्रश्न मेरे उपन्यास के पाठकों के सम्मुख उपस्थित हुआ होगा। पाठकों ने विचार होगा अनुमान लगाया होगा। क्योंकि हमारा मस्तिष्क निष्क्रिय बैठने वाला नहीं है। हमारी बौद्धिक चेतना शान्त नहीं होने वाली और हमारी तार्किक शक्ति अपना कार्य बन्द करने वाली नहीं है।

पाठकों का अनुमान होगा कि शची अरविंद से प्यार करती है? नहीं फिर? शची स्वच्छन्द तितली की तरह समाज रूपी नभ में उड़ानें भरना चाहती है? जी नहीं फिर? शची को एक ही बड़ा दुख है, वह है कि उसका पति शादीशुदा है। उसके एक बीवी है अभी और एक बच्चा है चाँद सा।

शची के दिमाग में एक कहानी उठती है। उसका पति एक अप राधी की भाँति उसके सामने खड़ा है। कह रहा है 'तुम मुझ से यह प्रश्न न पूछो कि मैं तुम्हें प्रेम करते-करते क्यों रुक जाता हूँ?'

शची अपने पति महेन्द्र के बालों को सहला कर प्यार से उसे धप

देती है, तुम मुझे नहीं कहोगे फिर किसे कहोगे तुम विश्वास रखो मैं तुम्हारी बुरी से बुरी बात सुन कर नाराज नहीं होऊँगी, मेरी आस्था पर तुम्हें संदेह नहीं करना चाहिए ?

मैं विवाहित हूँ !'

गाथा के तन-मन में साँप डसने पर जो जहर की लहर दौड़ती है उसी तरह की पीड़ा का संचरण हो उठता है। तड़प कर कहती है 'क्या कहते हो महेन्द्र ?

महेन्द्र की आँखों में भय छलछलाते हैं यह सही है, उसके एक बच्चा है। वह बच्चा बहुत ही प्यारा है। मैं उस पत्नी को भूल सकता हूँ पर ?

'पर अपने खून को नहीं भूल सकते।' वह बीच में चिहुँक-सी उठती है। 'खून की प्रतिक्रिया ही ऐसी होती है। मनुष्य देवता तुल्य क्यों न बन जाए लेकिन अपने बच्चे के साथ न्याय करते हुए वह दुर्बल हो जाता है। तुम भी कमजोर हो गए। यह स्वाभाविक भी है। कभी कभी तुम यह अवश्य सोचते होगे विशेष कर जब तुम्हारे मन में विराग और स्नेह की भावना जागती है। तब तुम यह सोचे बिना रह नहीं सकते कि तुम्हारे एक बच्चा है तुम उसे हृदय से अधिक प्यार करते हो। जब वह मुस्कराता था तब तुम पुलकित हो उठते थे। जब वह पापा कह कर मचलता था तब तुम अभिमान से फूल उठते थे। और इन से अभिभूत हो कर मौन गर्जना करते थे कि इसके अतिरिक्त इस संसार में मेरा कोई नहीं है। गाथा की बड़ी-बड़ी लाल आँखों से अश्रु ढुलक पड़ते हैं फिर भी तुम अपनी प्रबल इच्छाओं को रोक नहीं सके और जीवन को राख नाग को आग में जलने के लिए छोड़ दिया। तुम पुरुषों की कितनी दुष्ट प्रकृति हो गई है ?

महेन्द्र अपराधी की भाँति निश्चल हो जाता है। न हिलता है और न डुलता है।

शची बहती जा रही है मेरा विचार है कि तुम ने जानबूझ कर अपनी बीवी को अंधा किया है ?

नहीं नहीं मैंने उसे अंधा नहीं किया। वह दुख से उबल पड़ता है।

शची ऐसी स्थिति में हृदयहीन की तरह शांत स्वर में बोलती है जरूर यह जघन्य कृत्य तुम ने ही किया होगा। तुम यदि उसी तरह की दूसरी नारी के प्रति इतना बड़ा छल कर सकते हो तो क्या अपनी वासना की बुभुक्षा के लिए कोमल नारी को मार नहीं सकते ? जरूर यह तुम्हारा ही कृत्य है।'

महेन्द्र तीव्र स्वर में बोल उठता है चुप रहो। उसका वदन कांपने लगता है 'मैं ऐसा काम नहीं कर सकता। उसका उसकी पड़ोसिन से झगड़ा हो गया था पड़ोसिन ने किसी तेज लोहे से उसकी आंख पर घाव कर दिया था। खून इतना बहा इतना बहा कि वह अंधी हो गई।

'मुझे विश्वास नहीं होता।

'उससे सब पूछ लो।

वह है कहां ?

आगरा रहती है राजामंडी में किशोर कल्याणसिंह की बेटी है।'

शची बिलकुल शांत हो जाती है। महेन्द्र सावधान हो जाता है। गलती कर के पछताता है 'मैंने तुम्हें पता बता कर ठीक नहीं किया। जिस रहस्य को उम्र भर छिपाने की सौगंध खाई थी उसे आज अचानक उगल बैठा।

शची क्रूरता से मुस्करा पड़ती है पाप में छुपने की शक्ति होती तो पतन की संज्ञा की जरूरत ही न पड़ती।'

*　　　*　　　*

शची बाग की ओर जा रही थी। वह इतनी उद्विग्न थी कि उसे किसी का ध्यान नहीं था। हृदय रो रहा था और मस्तिष्क कलप रहा था।

अप्रत्याशित किसी व्यक्ति ने ऊंचे स्वर में कहा मुख्यमंत्री जा रहे हैं।

शची ने देखा अरविंद के साथ कोई खद्दरधारी सज्जन बैठे हैं अगली सीट पर कोई युवती—सुन्दर और मनोहर!

झलक सन्ताप और क्षोभ!

गाड़ी आँखों से ओझल हो गई।

शची सोच रही थी कि यह युवती कौन हो सकती है? वह इसी प्रश्न के उत्तर में चिन्तित हो उठी। लेकिन उसे उत्तर उसके समक्ष धुंधले से धुंधला हो रहा था। एक सौतिया डाह से वह जल उठी।

घर आकर उसने गुलाब के साथ तुरन्त खाना खाया और ऊपर के कमरे में जाकर सो गई।

अरविंद ने लगभग बारह बजे उसके कमरे में प्रवेश किया। शची सो गई थी। अरविंद कुछ क्षण के लिए उसे एकटक देखता रहा और चुपके से उसकी अलकें स्पर्श कर उसे चूम लिया। वह सोच रहा था 'परिस्थिति बलवान से बलवान को भी पराजित कर देती है।

तब वह मदहोश सा हो उठा। वासना के किस उन्माद से विचलित होकर उसने शची के बिखरे हुए बालों में अपना मुंह छिपा लिया। शची जाग उठी। कड़क कर बोली 'जानते हो मैं विवाहित हूं।

ओह! एक साध्वी

अरविंद, ! मर्यादा ??

मर्यादा को स्वच्छन्द करने के लिए ही तो ब्याह का नाटक रचा गया था।

'आज सुमन शराब पी रखी है ?'

'हररोज पीता हूं लेकिन रात को घर आने के बाद केवल अपनी पत्नी के सामने। बस मैंने गाय माता की कसम खाकर इस बात का ऐलान किया था कि मैं शराब कभी नहीं पीता। लेकिन यह मन भी कितना उच्छृंखल और परवश है। साधन सुलभ होते ही विलास और विनोद के रास्ते दौड़ने लगता है।

'तुम बड़े नीच हो !'

शची ! यह मत भूलो कि तुम एक मुख्यमंत्री से बात कर रही हो। उस मुख्यमंत्री से जो सम्मान-सूचक शब्द सुनते-सुनते स्वाभिमान का पुतला हो चुका है। अपशब्द अब उसके लिए तमाचे के समान हैं।

शची ने देखा कि अरविंद की मुखमुद्रा अत्यन्त कठोर हो गई। अहिंसा के पुजारी के रोम रोम में हिंसा की लपटें निकल रही हैं। दानवी प्रवृत्तियां उसके मुख पर उमड़ घुमड़ रही हैं। वह हकलाती हुई बोली तुम इतने दुष्ट हो ?

'तुम्हारी नजर में लेकिन जनता मुझे देवता मानती है। और एक माह के भीतर स्वामी श्री भजनानंद जी महाराज मेरे देवत्व की सब जगह स्थापना कर देंगे। मैंने उन्हें पैसों से खरीद लिया है। उनका धर्म त्याग तपस्या और सत्य—सबको मैंने पैसों में खरीद लिया है। ताकि धर्मभीरु प्रजा को वे मेरे देवत्व के प्रकाश से चकाचौंध करके मुझे युग-युग तक जीवित बनाए रखें।

शची का अन्तर इतना व्यग्र हो उठा कि उसने चाहा कि वह जोर से चिल्ला पड़े और संसार को बता दे कि यह हमारा सरदार और लुटेरा डाकू अत्याचारी है। पर उसने अपनी व्यग्रता रोककर मिटा ली। उसके आंसुओं को अपने रूमाल से पोंछता हुआ अरविंद अविचलित स्वर में बोला शची ! मैं शराब पीकर मत नहीं बन जाता हूं। मैं तुम्हारे दर्द को समझता हूं। तुम मुझे बहुत चाहती हो न ?

नहीं।'

धीरे बोलो।'

'मैं तुम्हें चाहती थी पर अब मैं नहीं चाहती। तुमने वास्तव में मेरा जाना हराम कर दिया। महेन्द्र शादीशुदा है। उसके एक बच्चा भी है।

क्या कहा?'

यह पति और बाप दोनों है।'

मैं उसकी जान ले सकता हूंगा।

यह काम भी कर सकते हो? वह हठात व्यंग से बोली।

देवता क्या नहीं कर सकता। मारना जिलाना तो उसी के ही हाथ में है।"

"लेकिन मैं विधवा होना नहीं चाहती। मैं अपनी सौत को देख जा रही हूं। मनुष्यता का तकाजा है। भारतीय नारी जब आत्मा में जागती है तब आत्मा सभी छिछली झूठी बातों एवं भावुकता को छोड़ देती है।

"क्या कहती है?

अरविंद! बहुत बड़ी दुनिया देख चुकी हूँ। प्यार के फैशन से लेकर समर्पण तक रूप देखने के बाद मैं यही तय कर पाई हूं कि प्राणी एक बार आत्मिक युग में पहुंच कर ही चिंताओं एवं दुखों से मुक्त हो सकता है।' वह रो पड़ी, 'यह जीवन की कितनी पीड़ाजनक ट्रेजडी है कि मैं पूर्ण वेश्या बनने के बजाए पत्नी बन गई। पत्नी बन जाने के बाद भी मैं सुखी नहीं हो सकी। क्यों? केवल इस लिये कि तुम अपने अपमान का बदला लेना चाहते हो। मैं उस प्रतिशोध की भावना से परिचित होने के उपरांत भी तुम्हारा शिकार बनती गई। यह भी क्यों हो रहा था शायद दैवी प्रेरणा से ही? शची ने उसके पांव पकड़ लिए, एक प्रार्थना करती हूँ।

करो।

क्या तुम यह सदा के लिए नहीं समझ सकते कि मैं तुम्हारी कुछ नहीं हूँ। मैं अब थक चुकी हूँ हार चुकी हूँ।'

समझ सकता हूं शची! देवता जब नारी के रूप पर मोहित

होता है तब सभी सम्बन्धों को भूल जाता है। और मैं भी आजकल अपने नए शिक्षामन्त्री की सुपुत्री सरला पर मुग्ध हूं। क्या मुग्ध हूं, इसमें भी राजनैतिक कारण है। शिक्षामन्त्री गुप्ता मेरा सदा से विरोधी रहा है उसे पुनः पद देकर मैंने अपनी निष्पक्ष नीति का परिचय दिया और उसकी बेटी को अपने प्रेम-जाल में फंसा कर आत्मा को सदा के लिए परास्त कर दिया। अब मैं तुम्हें आसानी से भूल सकता हूं। कभी-कभी प्रसंगवश याद जरूर कर लूंगा। यदि अपनी स्मृति को भी मेरे हृदय में रखना नहीं चाहती हो तब एक काम करो। उसकी मुद्रा बिलकुल दृढ़ हो गई।

अरविंद ने जलती हुई आंखों से शची को देखा। शची निर्जीव सी बैठी थी। अरविंद निश्चित स्वर में बोला, 'वह काम यह है कि अपनी भाभी और भतीजों को भी अपने साथ रख लो। उनकी परवरिश के लिए मैं दस हजार रुपए तुम्हें देने को तैयार हूं।

शची समझ गई कि अरविंद हम सब से बिलकुल किनारा करना चाहता है। उसने भी स्वीकृति दे दी।

अरविंद ने जाते-जाते एक चेतावनी और दी ये सारी बातें पेट में हजम करके रखना।

अरविंद चला गया।

शची का मन अशांत हो गया। वह नेत्र मूंद कर कराह उठी "यह आदमी कितना दुष्ट है? धर्म और प्रेम की बलिवेदी पर त्याग के बजाय पूंजी लुटाता है और देवत्व की प्राप्ति करता है। यह किस गुण्डे से कम है? मैं समझती हूं कि गुण्डा भी इससे अधिक संवेदनशील होगा। गुण्डा अपराधी है और अपने अपराध को नंगा कर समाज और कानून के समक्ष रख देता है। कानून उसे दंड देता है। वह दंड पाकर उन जेलों में जाता है जिनके दरवाजे पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा होता है कि जेल अपराधियों को दंड देने के लिए नहीं बल्कि सुधारने के लिए होती है। पर यहां की अव्यवस्था के कारण वह सुधर नहीं पाता पर उसका मन

अपराध के दंड से परिचित हो जाता है। और यह देश का अपराधी महान अपराध करके भी अपने दंड से अज्ञात है। इस धरती का इन्सान कितना कमजोर और निष्क्रिय है कि उस का दूध पीकर सांप पलता है। गाची के चेहरे की कोमलता भयानकता में बदल गई।

*　　　　*　　　　*

४०

'तुम्हारे बच्चा होने वाला है ?

जी।'

इतना जल्दी ?

मैं क्या करूं !

बड़े संकट की बात है !

संकट ? मैं कहती हूं कि तुम्हारी और मेरी शान मिट्टी में मिल जाएगा। जीवन कलंकित और बरबाद हो जाएगा।

वह बचन हो उठा 'चलो अपना एक मित्र है जिसे मैंने पी० एम० ओ० बना दिया है, उससे एबॉर्शन करा लिया जाए।"

लेकिन बच्चा चार माह का हो गया है। मैं लज्जा के मारे पहले कह नहीं सकी। युवती की आँखें भर गई।

तुम्हारी लज्जा को आग लग और मर जाय ?"

अरविंद ! सीमा से बाहर जाने का प्रयास न करो। तुम मुख्यमंत्री हो और एक मुख्यमंत्री के लिए एक कलंक ही बहुत है। यह कलंक तुम्हें धूलि धूसरित कर देगा। उसने दृढ़ता से कहा। उसकी आँखों में शोले धहक रहे थे।

अरविंद ढीला पड़ गया। सत्या का हाथ पकड़ते हुए बोला, जिन्दगी हम दोनों की खराब होगी।

देखो मैं इस करके अपना अधिकार प्राप्त कर लूंगी। भला इसी में है कि चुपचाप मुझे इस बला से बचालो।'

'जरा सोचने तो दो।' अरविंद अपना सिर पकड़ कर बैठ गया। उसके सामने अन्धकार हो अन्धकार छा गया। उस अन्धकार में उसको वासना विषाक्त कीड़े मकौड़ों की भांति बिलबिलाती दीख पड़ी। वह सोचने लगा इसमें विद्रोह की लपटें हैं यह मेरी प्रत्येक नीति को असफल कर देगी और यदि इसके बाप सुन्दर का पता चल गया तो वह जमीन-आसमान एक कर देगा। मुख्यमन्त्री से अपराधी बना देगा। तब ? तब मुझे इसका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। मैं इतना अधीर क्यों हो रहा हूं ? भय किसका भय ? मैं अपने दोस्त को कहकर इसका बच्चा गिरवा दूंगा। वह थोड़ी देर कठोर मुद्रा में रहा और फिर विचारने लगा नहीं बच्चे को जीवित रख कर इसको सदा के लिए अपना बना लेना चाहिए। अच्छा, विजय चिरन्तन। वह मस्करा पड़ा।

"तुम मस्करा रहे हो ?

हां सत्या मैं दुख में सदा मस्कराने की चेष्टा करता हूं। जीवन की दहकती आग में लपट बन कर उठना ही मेरा काम है।

'तब ? सत्या ने अरविंद की गोद में अपना सिर रख दिया।

'किसी चित्र में ऐसी ही परिस्थिति की एक नारी देखी थी। एक गुंडे ने उस से बलात्कार किया और वह नारी गर्भवती हो गई। उसके भाई ने उसे पहाड़ी स्टेशन पर भेज दिया। अच्छा हो गया। पर उसके लेखक पंडित मुलराम शर्मा ने अन्त में उस नारी द्वारा आत्महत्या कराके नारी की भावना को कुचल कर दिया। और मैं उस नारी को जीने का अधिकार देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि नारी नर के पापों को लेकर पलायन न करे बल्कि वह उस दंड दे ताकि नर प्रच्छन्न रूप से नारी के जीवन से खेलना बन्द कर दे।

'पर मैं बच्चा नहीं चाहती।

'तब मैं तुम्हें एक छुरा ला देता हूं। जब यह बच्चा पैदा हो जाय तब उसको कत्ल करके किसी गंदे नाले में या तालाब में फेंक आना।'

'यह मुझ से नहीं हो सकता।" वह कांप उठी। उसने अपने दोनों हाथ इस तरह हिलाए कि आतंक और भय से उसका रोम रोम दहल उठा हो।

तब बच्चे को पैदा होने दो' उसने नाटकीय ढंग से कहा।

पर यह कितना मुश्किल है। पग-पग पर बदनाम हो जाने का भय है?"

लेकिन मैं अपने बच्चे का नाश नहीं देख सकता। मैंने पाप किया है तुमने पाप किया है इस पेट के बच्चे ने तो नहीं? भला फिर इसे क्यों सजा मिले? सरया! मैं हर मुश्किल को आसान करने की दवा जानता हूं। तुम एक काम करो। अभी से खासना शुरू कर दो। डाक्टर से मैं तुम्हारे फफड़े खराब हो जाने की बात सुन्दर जी को कहलवा दूंगा। ख्याल रहे कि तुम्हें डाक्टर को यह नहीं कहना है कि तुम मां बनने वाली हो। चाणक्य ने कहा कि मस्तिष्क की बात जिह्वा को भी न मालूम हो। सिर्फ उसे इस बात का बहाना बना कर बताना है कि तुम्हें विदेश जाना है।

विदेश! उस पर वज्रपात हो गया।

'और कहां? शिमला मसूरी, दार्जलिंग नैनीताल तो तुम्हारे पिताजी हर समय उड़ कर आ सकते हैं।

लेकिन इतना रुपया?'

हां यह समस्या है।" उसने अपने अधरों के बीच अपनी तर्जनी रख कर सोचा कल सेठ जीवनलाल पचास हजार रुपए देगा। उस बड सस्ते में एक ठेका दिला दिया है। वह प्रकट हो बोला "रुपयों का बन्दोबस्त मैं कर दूंगा।'

सरया ने क्रोध भर कर कहा 'तुम ने सदा के लिए मुझे अपना पालतू

ईश्वर से सदा प्रार्थना करूंगा कि वह आदमी को इतना शक्तिशाली कभी न बनाए कि वह सत्य को जीत ले।

अरविन्द भाई के दर्द की मार्मिकता का समझ रहा था। अपने आंसुओं को पीता हुआ वह सोचने लगा, आदमी यहाँ आते कितना दुर्बल हो जाता है। उसकी समस्त शक्तियां पंग हो जाती हैं।"

अरविंद !' थूक को निगलता हुआ बोला सोना निम्मू और रत्नश का सम्बल तुम हो। मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें अपनी तरह का देवता मत बनाना। अरविंद न एकांत का संकेत किया। सब चले गए।

' । अरविंद की गर्दन नम से झुक गई।

'आज तुम्हारी निपुणता की वजह से सारा प्रांत तुम्हें देवता की तरह पूजता है घर घर में तुम्हारे चित्र टंगे हैं। तुम्हारी चारित्र-उदारता तुम्हारे मन के और तन के सभी कुकर्मों को छिपाए हुए है। लेकिन एक दिन घटाओं से आच्छन्न यह आकाश स्वच्छ होगा। नीला-नीला आसमान होगा चाँद निकलेगा और उस चाँद के शीतल और उज्ज्वल प्रकाश में तुम्हारे पाप प्रच्छन्न नहीं रह सकते ? तब तुम पश्चाताप की आग में सुलग कर अपना विनाश करोगे। यह अमरता का महत्व तुम्हें उन्माद-सा लगेगा। यह विलाप तुम्हें संताप से अधिक पीड़ामय लगेगा।'

अरविंद प्रस्तर प्रतिमा की तरह मौन रहा।

वह तर्क द्वारा अपने चाँद को कष्ट पहुंचाना नहीं चाहता था अतः वह चुप रहा। चाँद की सत्य बातें एवं तार से चुभते हुए शब्द उसकी शांति को विचलित नहीं कर सके। अन्त में चाँद ने इतना ही कहा, ' यदि अपने राक्षसी देवत्व को चिर रखना चाहते हो तो समय की गति का पहचानने की शक्ति ताम करो।

रात भर अरविंद निम्मू और रत्नेश को छाती से चिपकाये पड़ा रहा। लगभग रात के दो बजे दर्द बढ़ा। चाँद ने डूबे हुए स्वर में पुकारा ' सोना !

तब मैं तुम्हें एक छुरा सा देता हूं। जब वह बच्चा पैदा हो जाय तब उसको कत्ल करके किसी गंदे नाले में या तालाब में फेंक आना।

'यह मुझ से नहीं हो सकता।' वह कांप उठी। उसने अपने दोनों हाथ इस तरह हिलाए कि आतंक और भय से उसका रोम रोम दहल उठा हो।

'तब बच्चे को पैदा होने दो'—उसने नाटकीय ढंग से कहा।

'पर यह कितना मुश्किल है। पग-पग पर बदनाम हो जाने का भय है?'

'लेकिन मैं अपने बच्चे का नाश नहीं देख सकता। मैंने पाप किया है, तुमने पाप किया है—इस पेट के बच्चे ने तो नहीं? भला फिर इसे क्यों सजा मिले? सत्या! मैं हर मुश्किल को आसान करने की दवा जानता हूं। तुम एक काम करो। अभी से खांसना शुरू कर दो। डाक्टर से मैं तुम्हारे फेफड़े खराब हो जाने की बात सुन्दर जी को कहलवा दूंगा। ख्याल रहे कि तुम्हें डाक्टर को यह नहीं कहना है कि तुम मां बनने वाली हो। चाणक्य ने कहा कि मस्तिष्क की बात जिह्वा को भी न मालूम हो। सिर्फ उसे इस बात का बहाना कर के बताना है कि तुम्हें विदेश जाना है।'

'विदेश!' उस पर वज्रपात हो गया।

'और कहां? शिमला, मसूरी, दार्जलिंग, नैनीताल तो तुम्हारे पिताजी हर समय उड़ कर आ सकते हैं।'

'लेकिन इतना रुपया?'

'हां यह समस्या है।' उसने अपने अधरों के बीच अपनी तर्जनी रख कर सोचा, 'बस सेठ जीवनलाल पचास हजार रुपए देगा। उस बड़े सस्ते में एक ठेका दिला दिया है।' वह प्रकट हो बोला, "रुपयों का बन्दोबस्त मैं कर दूंगा।"

सत्या ने श्रद्धा भर कर कहा, 'तुम ने सदा के लिए मुझे अपना दास बना

पशु बना लिया। मैं कितनी भोली थी कि तुम्हारी प्यारी बातों में और प्रलोभन में आ गई।

अरविंद हँस कर बोला 'भाग्य का लिखा अमिट है। यदि यह अमिट नहीं होता तो माता को बनवास में पुत्र जन्माने नहीं जाना पड़ता।

*   *   *

४१

भाग्य का लिखा अमिट है। प्रत्येक आस्तिक इस निर्विवाद श्रद्धा पूर्वक स्वीकार करता है। सत्या गुलाब, आजकल नाची, सोना और भी कितने ही पर अरविंद सिर्फ दूसरों के लिए ही ऐसे वाक्यों का प्रयोग किया करता था। भगवान और पत्थर में क्या अन्तर है इसे वह एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक की भांति सब तरह से विश्लेषण कर के जान चुका था। वह जानता था कि आत्मा और परमात्मा इहलोक और परलोक को केवल ढकोसला मात्र समझने वाला व्यक्ति चार्वाक भी ऋषि की पदवी से विभूषित किया गया है। यह व्यवधानपूर्ण मूल्यांकन क्या सत्य की कसौटी नहीं ?

अरविंद इन्हीं विचारों में तन्मय हो कर मन मन मुस्करा देता था और तब उसे प्रत्येक सिद्धांत और धर्म उन्नति और अवनति के साधन मात्र लगते थे। तब वह मन ही मन यह भी कह उठता था कि आज के बाद धर्म का परिष्कृत रूप नहीं ?

अरविंद चतुर था। आजकल राजनीति की सरगर्मी शांत थी। नाची से सम्बन्ध सदा के लिए खतम हो गया। गुलाब अपने में नए गोश्त का पोषण कर रही थी। सत्या दूर बहुत दूर स्विटजरलैंड की मनोरम हरियावलियों में झूले झूल रही थी।

"सत्या ! अरविंद का मानस अनिर्वचनीय सुखानुभूति से पुलकित

हो उठा। राजनीति के दलदल में फंसे उसके जीवन का कमल सत्या थी, जिसकी सौरभ उसके मन और तन की अतृप्ति को परितोष के आवर्त में परिवेष्टित कर उसको चिरन्तन गमन दे रही थी।

'अरविंद बाबू!'

'क्या है ?

तार!"

किसन ने बड़े अदब से तार को अरविंद के सामने किया। अरविंद ने तार खोल कर पढ़ा। चेहरा स्याह हो गया। आँखों में सजलता दीप्त हो उठी। भया बीमार हैं। यह वाक्य उसके मन के एक-एक तार में गूंज गया। उसने अपने सेक्रेटरी को फोन किया और हवाई जहाज का प्रबन्ध करने के लिए कहा।

दोपहर के लगभग दो बजे थे और तीन बजे तक अरविंद भया के पास पहुंच गया। भया की हालत वास्तव में चिंताजनक थी। छाती में पीड़ा थी। वह तड़प रहा था। बड़े-बड़े डाक्टर उपस्थित थे। उपचार चालू था। अन्त में एक घंटे के बाद चांद में बोलने की शक्ति आई। उसने अपनी गीली पलकें उठा कर धीरे धीरे कहा, बेटा! जीवन का आखिरी दांव कभी बेकाम सिद्ध नहीं होता। आदमी यहीं आकर थक जाता है। एक दिन मैंने तुम्हें अपने सीने से चिपका कर माँ को शान्ति से मरने दिया था और आज । चाँद की आंखों में मोतियों से अमूल्य आँसू ढलक पड़े। अरविंद का गला भर आया।

भया आप घबराइये नहीं। मैं आपको, मरने नहीं दूंगा। देखो, कितने बड़े-बड़े डाक्टर खड़े हैं।

पगले! मनुष्य मृत्यु पर विजय पा लेता तो प्रभु और प्रकृति दोनों को भूल जाता। धरती पर अराजकता और अनस्थिरता का बाजार लग जाता। खून-खून को काटता और भाई भाई की हत्या करता। मैं

ईश्वर से सदा प्रार्थना करूँगा कि वह आदमी को इतना शक्तिशाली कभी न बनाए कि वह मृत्यु को जीत ले।

अरविन्द भाई के दर्द की मार्मिकता को समझ रहा था। अपने आँसुओं को पीता हुआ वह सोचने लगा 'आदमी यहाँ आते कितना दुर्बल हो जाता है। उसकी समस्त शक्तियाँ पंगु हो जाती हैं।

अरविंद!' थूक को निगलता हुआ बोला 'लाला निम्मू और रत्ना का सम्बल तुम हो। मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें अपनी तरह का देवता मत बनाना। अरविंद ने एकांत का संकेत किया। सब चले गए।

। अरविंद का गदन दाम से भर गई।

आज तुम्हारी निपुणता की वजह से सारा प्रांत तुम्हें देवता की तरह पूजता है घर घर में तुम्हारे चित्र टंगे हैं। तुम्हारी चारित्र-उज्ज्वलता तुम्हारे मन के और तन के सभी कुकर्मों को छिपाए हुए है। लेकिन एक दिन घटाओं से आच्छन्न यह आकाश स्वच्छ होगा। नीला-नीला आसमान होगा चाँद निकलेगा और उस चाँद के शीतल और उज्ज्वल प्रकाश में तुम्हारे पाप प्रच्छन्न नहीं रह सकेंगे? तब तुम पश्चाताप की आग में सुलग कर अपना विनाश करोगे। यह प्रभुता का महत्त्व तुम्हें उन्माद-सा लगेगा। यह विलाप तुम्हें संताप से अधिक पीड़ामय लगेगा।'

अरविंद प्रस्तर प्रतिमा की तरह मौन रहा।

यह तर्क द्वारा अपने चाँद को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता था अतः वह चुप रहा। चाँद की सत्य बातें एवं तीर से चुभते हुए शब्द उसकी शांति को विचलित नहीं कर सके। अन्त में चाँद ने इतना ही कहा, यदि अपने राक्षसी देवत्व को चिर रखना चाहते हो तो समय की गति को पहचानने की शक्ति सीख करो।

रात भर अरविन्द निम्मू और रत्ना को छाती से चिपकाए पड़ा रहा। लगभग रात के दो बजे रहे थे। चाँद ने डूबे हुए स्वर में पुकारा सोना!'

सोना न अपने रोम्न पर होंठों को दबाते हुए काबू पाया। बड़ी कठिनता से बोली, जी।"

'तुम यहाँ हो, मैंन तुम्हें बहुत कष्ट दिय हैं, मुझ क्षमा करना।

सोना ने सिसकते हुए चांद के पाँव पकड़ लिए।

गुलाब!'

गुलाब न उनका हाथ अपन हाथ में ले लिया।

'बेटा! मेरे बाप क प्रभाव में सोना बेचारे अरविंद को बड़ ताने सुनाया करती थी लेकिन तुम मेरे अभाव में मेरे बच्चों को ।

'भया! वह इस तरह चीखी जसे उसका कलेजा फट पड़ा हो।

'सच कहता हू गुलाब! मृत्यु क विकराल पजों में आने पर भी मैं उन तानों को नहीं भूल पाया हू। आदमी कितना विचित्र है?

मैं इ हें अपन हृदय से कम नहीं समझूगी भया!

और चांद न याचना भरी दृष्टि सब पर डाली। क्षमा नील और स्नह भरी उन आखों में अभागी जिन्दगी की अंतिम करुणा थी। उस करुणा में निश्छलता थी, पवित्रता थी ओज था।

अरविंद! एक अस्फट स्वर क साथ चांद सदा क लिए टूट गया, मर गया।

एक हृदयवेधक हाहाकार गूंज गया। करुणा क विभिन्न स्वर पत्थर को पानी की तरह पिघला रहे थे। अरविंद की आँखों में अश्रु जरूर थ पर उसका रोदन मौन था। बड़-बड अधिकारी सठ, स जन उनको धय बधा रहे थ।

अर्थी निकली।

अरविंद न अर्थी के जलूम में कोई कोर-कसर नहीं रखी। हजारों की सख्या में जसे लोग भूल से गय थ कि यह अर्थी मुख्यम त्री के भाई की है या देश और समाज क महान नता की। अरविंद न अपनी अंतिम चेष्टा की कि लोग उसके भाई को देशभक्त कहें अत जब चिता में आग लगाई जाने वाली थी तब वह अति विनम्र होता हुआ बोला आज मैं

जनता के समक्ष एक रहस्य का उद्घाटन कर रहा हूँ कि इस शहर की उन्नति में और गाँवों की उन्नति में सबसे बड़ा हाथ चाँद भैया का ही था। उन्होंने हजारों का चंदा गुप्त रूप से एकत्रित किया था। वे मौन साधक और सच्चे देशभक्त थे। प्रचार और प्रसार से सदा दूर रहते थे। यही वजह है कि जब अपने शहर में मेडिकल-कालेज न खोलने का निश्चय सरकार ने कर लिया था तब वे ही दिल्ली की दौड़-धूप करते रहे और अंत में उन्होंने कालेज खोलने की स्वीकृति लेकर ही छोड़ी। यह था उनका मातृभूमि प्रेम। मैं चाहता हूँ इस देश के मौन साधक और प्रगतिशील मानव की स्मृति में एक स्मारक प्रजा की ओर से बनवाया जाए। अंत में उसने जोशीले शब्दों में कहा—मैं आप से अपील करता हूँ कि आप उस मौन साधक के प्रति कर्तव्य पूरा करें।

इधर चिता की राख ठंडी नहीं होने पाई थी और उधर अरविंद के शिष्य सेठ साहूकारों से स्मारक निधि का चंदा भरवा रहे थे। पल ही क्षणों में चाँद देशभक्त बन गया। यही अरविंद की सुतीक्ष्ण बुद्धि की विलक्षणता थी।

*　　　*　　　*

४२

स्मारक बन कर तैयार हो गया।

उस दिन दो तीन मन्त्रीगण और केन्द्रीय सरकार के चंद अधिकारी भी उपस्थित थे। अनावरण केन्द्रीय सरकार के शिक्षामंत्री से कराया गया। अनावरण करके उन्होंने एक देशभक्त के प्रति जो सहानुभूति भरे शब्द प्रकट करने आवश्यक थे उन्होंने किए। वे बोले 'मनुष्य को अपने देश और समाज के लिए सर्वस्व अर्पण कर देना चाहिए। स्वर्गीय चाँद ने मौन साधक की भाँति राष्ट्र की जो सेवा की है वह सराहनीय है।'

अरविंद ने इतना ही कहा 'भैया! अहिंसा शांति और प्रेम के अवतार थे। महात्मा गांधी से एक बार वे सेवाग्राम में मिले थे। तब बापू ने उनकी मौन रचनात्मक साधना की सराहना की थी।

कदाचित चाँद ने महात्मा गांधी को प्रत्यक्ष देखा भी न हो तो कोई बड़ी बात नहीं। न अब महात्मा रहे और न चाँद। दोनों अभी स्वर्ग में शांति का संदेश सुनाने में संलग्न होंगे। इस समय अरविंद ने अपने मन ही मन में कहा चाँद! मैं तुम्हारी बात को अक्षरश: पालन करना चाहता हूँ पर तुम्हें क्या पता कि यहाँ कि समस्त मशीनरी खराब है। आदमी ईमानदार बन कर रह ही नहीं सकता। कभी कोशिश भी करें कि ईमानदार बन जाए, तो सभी साथी चौंक पड़ते हैं। बनने ही नहीं देते और वह क्षण भर के लिए द्रवित हो उठा।

इसके बाद में एक वक्ता ने कमाल ही कर दिया। वह भी सरकार का उच्च अधिकारी था। उसका भाषण सुन कर अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं की आत्माएं कराह उठी होंगी। न भाषा पर अधिकार और न भावों पर। बस बोलता ही जा रहा था। श्रोतागण ऊब उठे थे और अंत में अरविंद को उसे रोकना ही पड़ा।

स्मारक का अनावरण हो गया। चाँद सदा के लिए देशभक्त बन गया। प्रश्न उठता है कि क्या यह देशभक्त-निर्माण योजना सदा चलती रहेगी? प्रज्ञा इसका विश्लेषण करे?

* * *

४३

शिक्षामन्त्री श्री सुन्दर जी अरविंद के भ्रष्टाचार से बहुत अच्छी तरह परिचित थे लेकिन वे किसी प्रमाण के अभाव में शांत बैठे हुए थे। सत्या को विदेश भेजने के रहस्य को लेकर वे चिंतित हो उठे थे। रह रह उनके मस्तिष्क में जनता हुआ प्रश्न उठता था कि अवश्य सत्या को विदेश भेजने में अरविंद का हाथ है।

इसी समय एक घटना और घटित हुई। इस घटना को लेकर सुंदर और अरविंद के आन्तरिक संघर्ष ने खुला उग्र रूप धारण कर लिया। अरविंद शिक्षा विभाग का दफ्तर अपने शहर ले जाना चाहता था और सुंदर जी अपने शहर में। यह परम्परा प्रारम्भ से चली आ रही थी। जब कभी कोई नया मन्त्री बनता यह पूर्णरूप से कोशिश करता कि वह अपने जिले को समृद्ध एवं सम्पन्न करे ताकि नये निर्वाचन में वह पुनः विजयी हो कर विधान सभा में आए।

अरविंद का विरोध सुंदर जी ने एक साप्ताहिक में किया। उन्होंने कहा 'हालांकि शिक्षा विभाग का मौजूदा दफ्तर इसलिए अव्यवस्थित है कि वहां पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं है। मुख्यमन्त्री जी के नगर में भवन निर्माण करना पड़ेगा जिससे राज्य का व्यय ही लाखों रुपया लग जाएगा। और हमारे यहाँ भू० पू० नरेशों के विशाल भवन खाली पड़े हैं। मैं प्रजा से अपील करूंगा कि वे एक जुट हो कर आवाज बुलन्द करें कि शिक्षा विभाग हमारे यहाँ हो। इस पर यदि हमारी योजना को न सुना जाए तो सत्य अहिंसा के सहारे आन्दोलन प्रारम्भ करें।

अरविंद यह समाचार पढ़ कर सन्न रह गया। वह रुष्ट हो कर बड़बड़ाया यह सुंदर सांप का बच्चा है। दब चुका है न चोट कभी न कभी जरूर करेगा।

उसने फोन उठाया।

सुन्दर जी उसके बंगले पधारे। नमस्कार होने के पश्चात अरविंद ने अधिकार पूर्ण स्वर में कहा 'सुन्दर जी! इस विरोध का नतीजा अच्छा नहीं निकलेगा।"

यह मैं जानता हूँ। पर मुझे यह मालूम नहीं था कि आप मुझे यह पद देकर मेरे विचारों को खरीदना चाहते हैं। विचार खरीदे नहीं जाते। मैं इस प्रश्न को लेकर सबका विरोध करूँगा आपने अधिक विवश किया तो पदत्याग भी कर दूंगा।

अरविंद के होंठों पर भदभरी मुस्कान नाच उठी। वह पनी नजर

से घूरता हुआ बोला सुन्दर जी ! आप आपनी बटी को कितना प्यार करते हैं ?'

सुन्दर जी चौंक पड़े। उनके कान खड़े हो गये। हठात् बोले, इस प्रश्न से आप का क्या मतलब है ?

मतलब ! बहुत अधिक है।'

'प्यार करता हूँ। उसके सुख और संतोष के लिए मैं आसमान के तारे भी ला सकता हूँ।"

अरविंद कठोर स्वर में बोला मेरा विचार है कि आप इस आंदोलन से किनारा कर लीजिये।

"क्यों ?

'मेरी आज्ञा है।'

आप की आज्ञा प्रभु की वाणी नहीं, सुन्दर जी आवेग में बोले।

'ये पढ़िए।' उसने एक चिट्ठी को मोड़ कर उन्हें उसकी चंद पत्तियाँ पढ़ा दीं। लिखा था पेट का बच्चा बढ़ रहा है। आजकल मेरी सेहत अच्छी नहीं रहती। जो भी खाती हूँ उल्टी के द्वारा निकल जाता है। यदि तुम दौलत से मेरा उपकार नहीं करते और यहाँ नहीं भेजते तो मैं ग्लानि की पीड़ा से मर जाती।

'यह क्या है ? सुन्दर जी चीख पड़े।

"शांत रहिए, दीवारों के भी कान होते हैं।

'मुझे खत पूरा पढ़वा दीजिए।

'नहीं आपकी बेटी की खास हिदायत है। उसने मुझे कहा था कि यह पाप है। यदि इस पाप का पिताजी के समक्ष प्रकटीकरण हो जाएगा तब मैं आत्महत्या कर लूंगी। इसलिए आप से मेरी प्रार्थना है कि आप बिलकुल खामोश हो जाइए। आपने जरा भी इस बात को इधर-उधर करने का प्रयास किया तो आपको अपनी बेटी से हाथ धोना पड़ेगा।

"मुझे सुमन पराजित कर ।

'तुमने नहीं, आपने, मैं मुख्य मंत्री हूं।'

'हां आपने मुझे पराजित कर दिया।

'अब मैं यह मान कर चलूं कि आप इस आन्दोलन को लेकर खामोश रहेंगे।'

रहना पड़ेगा।

अब आप जा सकते हैं।

सुन्दर जी गठिया पीड़ित रोगी की तरह कदमों को रगड़ते हुए बंगले से बाहर निकले।

उनके बाहर जाते ही अरविंद ने चाय का प्याला मंगवाया। चाय पीकर वह सरमा का पत्र पढ़ने लगा—

'अरविंद !

पत्र तुम्हारा प्राप्त हुआ। पढ़ कर प्रसन्नता हुई साथ दुख भी। दुख इसलिए कि तुम हर बार यह क्यों लिखते हो कि तुम्हारा बच्चा तुम्हारे पेट में पल रहा है। क्या यह तुम्हारा बच्चा नहीं ?

उसने खत पढ़ना बन्द कर दिया। सोचने लगा तो आप मुझ से लिखवा कर प्रमाण चाहती हैं। इतना सीधा होता तब बन गया मंत्री !

वह आगे बढ़ने लगा तुम्हारे पत्र से मालूम पड़ रहा है कि तुम दिन प्रतिदिन मेरे प्रति उदासीन होते जा रहे हो। कह नहीं सकती कि तुम कब मुझे एकदम भूल जाओ। पिपासा और प्रवीणता इन दोनों बातों की तुममें प्रचुरता है। अतः तुम जल्दी से पराजित नहीं हो सकते, लेकिन मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम अपनी छल-नीति से मेरे जीवन को बरबाद न कर देना। यह बच्चा जो मेरे पेट में पल रहा है, तुम्हारा ही है। उदारता से मैं तुम्हारा पोषण कर रहा हूं फिर यह शब्द क्यों और किस लिए ?

यदि इस बार इस प्रकार का पत्र आएगा तब मैं अपने जीवन को तुमसे सदा के लिए अलग समझ लूंगी।

अरविंद हंसने लगा। हंसते-हंसते उसने उस पत्र को जला कर राख

कर दिया। उसकी राख को हथेली में लेकर धीरे धीरे फूंक से उड़ान लगा 'इस तरह इस राख का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।' वह दार्शनिक की भांति बोला।

एक माह गुजर गया।

कुल सुन्दर जी के पास अचानक तार आया। तार में सत्या ने लिखा था, मैंने एक अग्रज से सिविल मरिज कर लिया है। मैं शीघ्र ही हिन्दुस्तान आऊँगी।

सुन्दर जी तार पढ़ कर एक बार क्रोध से उबल पड़े। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे उनके तमाम शरीर की नसें फट जाएगी। वे भल्ला पड़ 'इन आज की छोकरियों को हो क्या गया है?' लेकिन फिर वे चुप हो गए। वह मां बनने वाली थी मां। अच्छा ही किया उसने कि अपने को किसी का पालतू बना लिया। अब मैं मुख्यमंत्री को देख लूंगा। समय होगा, बदनामी नहीं।

अरविंद दिल्ली गया हुआ था।

आगामी चुनाव आ रहे थ। कांग्रेस के टिकट के लिए सभी क्रियाशील थ। क्या सेठ साहूकार और क्या राज महाराज? उनके दबाव के समक्ष सच्चे कार्यकर्त्ता झुक रहे थ। उनकी गरीबी का अनुचित लाभ उठा कर पूंजीपति उन्हें भांति भांति के प्रलोभन दे रहे थ। अरविंद इन्हीं सभी मसलों पर बातचीत करने क लिए दिल्ली गया हुआ था। उसे भी वहां सत्या का वैसा ह तार मिला। वह तार पढ़ कर हक्का-बक्का रह गया। तार क दूसरे दिन उसे सत्या का एक पत्र भी मिला जो जयपुर से रि-डाइरेक्ट हो कर आया था। उसने पत्र खोल कर पढ़ना प्रारम्भ किया। कोई विशेष बात उसने अरविंद के बारे में नहीं लिखी थी। जो कुछ महत्वपूर्ण था वह इस प्रकार का था तुमने समझा होगा कि तुम इतने प्रवीण खिलाड़ी हो कि हमेशा तुम्हीं सबको मात दोगे, सो बात नहीं है। जिन्दगी की शतरंज पर जब विचारों क प्यादे चलते हैं

सब क्या पता कौन चाल चूक जाए और मात खाए जा। तमन मुझे पालतू बनाना चाहा मेरे पिता क सच्चे एव सघषमय जीवन को सदा क लिए खामोश करना चाहा क्योकि तुमन उनकी आत्मा अर्थात बटी पर विजय प्राप्त कर ली थी। जानते हो अराजक विचारों की महान् पराजय सदीपन की सूझ थी। श्री कृष्ण के गुरु सदीपन न नतिक अरा जकता के फलते सिद्धांत—खाओ पीओ मौज करो—की अमानवीय पद्धति को रोकन क लिए उन्होंने अपन शिष्य श्री कृष्ण को कहा कि आत्माओं पर विजय प्राप्त करो। और यही वजह है कि श्री कृष्ण न हजारों शादियाँ करके समस्त राजाओं एव जगली जातियों के नताओं के मस्तक नत कर दिय। यदि नतिक अराजकता के सिद्धान्त के मानने वाले दूसरे क धन को छीन कर विलास के सागर में नहीं डूबते तो मेरी समझ में कम इतनी अराजकता नहीं फलाता।

'यही बात तुम न मेरे पिताजी क प्रति की। सच, उन्होंन जो मुझ खत भजा है उसको पढ़ते तो तुम्हारी आत्मा कराह उठती कभी कभी आदमी इतना दीन हो जाता है कि सिवाय हम उस पर दया के और कुछ कर ही नहीं सकते। उन्होंन मुझ सात्वना दी कि मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ कि तुम्हारे सुख क लिए मैं राज-पाज सब छोड सकता हू। उनकी यह महान् त्याग की प्रवत्ति उनक कोमलतम हृदय की सूचक है और बटी क प्रति असाम स्नह की द्योतक। पर इन शब्दों में उनका आंतरिक क्रान्त नहीं झलकता। मैं जानती हूँ कि इन शब्दों को लिखत समय उनका क्रोध उनकी घृणा और उनकी अतप्त इच्छाए उन्हें खाए जा रही होंगी। उनक हृदय में व्यथा का तूफान घुमड रहा होगा और उनकी थकी-थकी पलकों के पुलीन मोतियों जसे अश्रुओं से भीग गए होंग। वे बहुत भावुक हैं। वे मेरे सुख के लिए अपना चरम पतन भी देख सकते हैं। लेकिन भाग्य क खल भी कितन विचित्र हैं? उन्होंन अपना चरम पतन नहा, मेरा चरम पतन देख लिया। फिर भी उनकी उदारता देखो। लिखते हैं, सत्या! इस पतन में ही तुम्हारी सुख निधि

निहित है तो मैं तुम्हें रोकता नहीं। मैं चाहता हूं यदि तुम्हें चिरन्तन सुख सर्वस्व विसर्जन के उपरांत मिले तब भी मैं प्रसन्न होऊंगा क्योंकि हर बाप अपनी सन्तान की सुख-समृद्धि के लिए सतत प्रयत्न करता है। और मैं वह बाप हूं जो अपनी सन्तान की सुख-समृद्धि के लिए अपना सम्मान और इज्जत तक देना चाहता है। सत्या! मैं तुम्हें हार्दिक प्यार करता हूं, चाहता हूं तुम प्रसन्न रहो लेकिन अब मैं देख रहा हूं—एक बिना बाप के बेटे को ले कर तुम कभी भी नातिमय जीवन यापन नहीं कर सकोगी। प्रताड़ना और दुत्कारें तुम्हें कभी भी चैन नहीं लेने देंगी। समाज और सुशिक्षित व्यक्तियों के मस्तिष्क की कटु भ्रांतियां व बोलियां अपनी प्रगतिशील विचारधारा का खोखला आवरण उतार कर जानवर की भांति नंगी नजर आएंगी। हां एक बात तो है कि नंगा जानवर विधि के निर्माण कौशल के कारण आंखों को प्रिय तो लगता है। पर प्रियता पीड़ामय होता है और समाज की कटूक्तियां इतनी पैनी होती हैं जितनी कसाई की कटार, जो निरीह बकरे पर चल पड़ती है। तब तुम्हारा जीवन दुसाध्य हो जाएगा। तुम अपने ही आत्मदाह में दग्ध होने लगोगी। इसलिए बेटा, तुम से प्रार्थना करता हूं कि कलंकित जीवन ले कर तुम देवताओं के देश में जीवित नहीं रह सकती।

अरविंद! क्या इन शब्दों में एक स्नेहातुर पिता का हृदय प्रतिबिम्बित नहीं हो रहा है? जरूर हो रहा है और तुम्हें भी यही महसूस होता होगा। मैंने अपने पिता के लिए या तुम्हारे दिए गए वचन के लिए सन्नी के लिए एक भले और साधु स्वभाव वाले व्यक्ति से विवाह कर लिया है। मुझे भरोसा है कि वह व्यक्ति तुम्हारे खून को भी उतना ही प्यार करेगा जितना अपने खून को। इस विवाह से एक और प्रतिक्रिया होगी कि तुम में जो विलासपूर्ण उदासीनता छा रही है उसका भी लोप हो जाएगा। अब मेरा बाप सत्य के लिए संघर्ष करेगा, लड़ेगा और तुम्हारे दवग्य में जो दानवता है उसका पर्दाफाश करेगा।

मेरे अग्रज पति ने तुम्हारे तमाम चित्र एवं कलेण्डर फाड़ डाले हैं।

यह इसलिए नहीं कि 'इलियट तुम से घृणा करता है, बल्कि इसलिए कि उसका कहना है कि जो इसान अपने बच्चे और अपनी पत्नी को अपनी नहीं कहता वह जानवर होता है। जानवर भी अपने नए बच्चों का बड़ा प्यार करते हैं बाद में भले ही भूल जाएँ, लेकिन तुम्हारा यह अरविंद कैसा आदमी है? भारतमाता और भगवान श्री कृष्ण के साथ तुम्हारा जो चित्र था उसको फाड़ते हुए वह जोर का अट्टहास कर उठा था। अट्टहास कर चुकने के बाद उसने धीरे से कहा—गॉड आफ कलियुग।

अब मैं पूर्ण सुखी हूँ। इलियट साधारण अग्रज है। वह हिन्दुस्तान रहना चाहता है। कहता है वह दार्शनिकों की भूमि है। वहाँ सच्ची इंसानियत अभी भी जिंदा है। वहाँ आदमी का प्यार अब भी निर्दोष है। सच वह बहुत ही प्यारा इंसान है। भूठन को महाप्रसाद समझ कर ग्रहण करता है।

पत्र समाप्त करता हूँ। यह मेरा अंतिम पत्र है। युगदेवता से अंतिम प्रार्थना है कि वह भविष्य में किसी नारी के अरमानों से न खेले। खेलेगा तो मैं एक ही चित्र से उसका जिंदगी तबाह कर दूँगी।

—सत्या

अरविंद पत्र पढ़ने के बाद चिंतित हो उठा। उसे लगा जैसे वह लढ़कते हुए पत्थर की भाँति ढक-ढक कर लढ़क रहा है। प्रांत का मुख्यमंत्री धीरे धीरे गिरता हुआ पतन के गहन गह्वर तक पहुंच जाता है। वहाँ उसकी आकाश को चूमने वाली आकांक्षाएँ चिंघाड़ती हैं। बुभुक्षित बास नाए उसको इतनी मार्मिक पीड़ा देती हैं कि जैसे उसको सहस्र चींटियाँ काट रही हों। वह अवश हो उठता है। उसका जी चाहता है कि वह एक बार जोर से चीख पड़े पर वह चीख नहीं सका।

ठीक समय उसकी जबान ने धोखा दे दिया। उसने अपने दोनों हाथों से गला दबा लिया। आकुलता क्रोध भय और घृणा के मारे उसका तमाम बदन पसीना-पसीना हो गया। उससे नौकर तक को नहीं पुकारा गया। वह निढ़ाल हो कर पड़ गया।

उसने उसी समय निश्चय किया कि कल वह कि सभी बातें समाप्त करके जयपुर चला जाएगा। वह अधीर होकर चहलकदमी करने लगा।

*   *   *

४४

गुलाब अपने दोनों बच्चों को चाकलेट दे रही थी। बच्चे मचल मचल कर अधिक लेने का हठ कर रहे थे। तभी रतन भागा भागा आ गया। गुलाब ने उसे भी चाक्लेट दी। वह किलक कर नाच उठा।

चाँद की मृत्यु के बाद गुलाब सोना के पास ही रह रही थी। यहीं उसके दूसरा बच्चा उमेश हुआ था। कई बार अरविंद ने लिखा भी था कि अब तुम आ जाओ, तुम्हारे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता। तब उत्तर में गुलाब ने मजाक करते हुए लिखा था, मेरे बिना आप को कल नहीं पड़ता यह सब कहने की बातें हैं। मुख्यमंत्री आप आप हैं और हम हम हैं। आप खूबसूरत दिलफेंक और बड़ बातूनी हैं फिर भला ।
बाद में उसने गम्भीर हो कर लिखा था कि चाँद भैया की मृत्यु के पश्चात् सोना बहन बड़ी उदास और चिन्तित रहती हैं। न ढंग से खाती हैं और न ढंग से पहनती हैं। ऐसा मालूम होता है कि दीमक लगी लकड़ी की तरह वह खोखली होती जा रही हैं। और एक दिन बिना किसी से कुछ कहे पुराने खंडहर की तरह गिर पड़ेंगी। अब मैं उन्हीं के पास रहूंगी। उनकी भी बड़ी इच्छा है कि मैं उनके पास रहूं।

पास-पड़ोस की औरतों के दिल को सोना और गुलाब का प्रेम देख कर बड़ी ठेस लगी। क्योंकि सोना मारवाड़िन थी और गुलाब पंजाबिन। प्रांतीयता का फलता हुआ जहर।

उन सभी ने सोचा था कि सोना और गुलाब कभी भी एक साथ नहीं रह सकतीं। दोनों में कुत्ते और बिल्ली वाला झगड़ा चलेगा और वे हस हँस कर तमाशा देखेंगी। लेकिन सोना और गुलाब का प्यार

क्योंकि उसकी माँ बंगालियों को म्लेच्छ समझती थी। बात-बात पर झगड़ पड़ती थी। अशांति के उन्माद में उसने अपनी पत्नी को मार डाला और माँ को घायल कर दिया। माँ इस तरह घायल हो गई कि अब वह बच नहीं सकेगी। पुलिस ने जब उस युवक का बयान लिया तब उसने एक विक्षिप्त दिमाग वाले की भाँति निश्चल हो कर कहा, मैं इनके झगड़े से तंग आ गया था। मेरा सोना और खाना हराम हो गया था। धीरे धीरे मैं उनकी हाय हाय सुन कर चिड़चिड़ा हो गया और एक दिन मैंने किसी भावना से प्रेरित हो कर सोचा कि क्यों नहीं इन दोनों को मार कर देखा जाए कि उनके खून में कितना अन्तर है? जो उन दोनों का आपस में मिलन नहीं होता? सोना विगलित स्वर में बोली—

और एक गुलाब तुम हो जो मुझे अपनी माँ से अधिक प्यार करता हो चाहती हो सम्मान करती हो। मैं बहुत तकदीर वाली हूँ।

मुझे शर्मिन्दा न करो जीजी। हमें यह सभी स्वर्ग को नरक बना देने वाले सिद्धांतों को समाप्त करना पड़ेगा। अच्छा यह तो बताइए। वह बात को बदलती हुई बोली आप महिला समाज में काम क्यों नहीं कर लेतीं। सेवा की सेवा हो जाएगी और मन का मन बहल जाएगा।

ऐसा ही करूँगी।

तभी निम्मू ने आवाज दी भाभी!

क्या है?

यह रत्तन मेरी चुटिया खींचता है।

गुलाब जैसे ही नीचे आई बस ही चौंकती रह गई रत्तन और मुन्ने ने निम्मू की दोनों चोटियों को पकड़ रखा है और उन्हें घोड़े की लगाम की भाँति खींच रहे हैं।

गुलाब को देखते ही झट से पुस्तक हाथ में लेकर रटने लगा सा ए-टी क्ट मायन बिल्ली।

गुलाब के होठों पर स्निग्ध मुस्कान नाच उठी।

* * *

अपनी वार्ता समाप्त करके अरविंद चिन्तित होकर लौटा। उसके दो अन्यतम मित्रों को कांग्रेस का टिकट नहीं मिला था। जिले के पर्यवेक्षक ने उन व्यक्तियों के प्रति यह आरोप लगाया था कि वह जातीयता का विषवमन करते हैं। कांग्रेस के भावनों व सिद्धान्तों की हत्या करके अपना व्यक्तित्व कायम रख हुए हैं। वास्तव में इनसे जनता एकदम रुष्ट है। पर्यवेक्षक ने प्रान्त के प्राय सभी कांग्रेसी व्यक्तियों के प्रति यह शिकायत की कि वे एक दूसरे के प्रति सद्भावना के बजाय रोष प्रकट करते हैं। पर्यवेक्षक ने कहा कि जब मैं वहाँ पहुंचा तब वे मेरी ओर इस तरह लपके जैसे मैं उन की खुराक हूं। लेकिन उनको इस तरह निराश होना पड़ा जिस तरह पके हुए अप्राप्य अंगूरों के लिए लोमड़ी को। पर्यवेक्षक ने खेद के साथ इस बात पर भी प्रकाश डाला कि प्रत्येक उम्मीदवार एक दूसरे पर रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार सिफारिश, घातक चरित्रहीनता और ब्लैक मेलिंग का आरोप लगाते हैं। यह उनकी संकीर्ण और ओछी मनोवृत्ति का ज्वलन्त प्रमाण है।

कुछ भी हो अरविंद के दो साथियों को कांग्रेस का टिकट नहीं मिला। यह उसके लिए पराजय की बात थी। उसके विरोधी दल वाले न अपने-अपने पत्रों में क्या क्या लिखेंगे यह सोच-सोच कर वह चिन्ता में डूबा जा रहा था।

कभी-कभी उसका मन अचानक सोच उठता था कि क्या अब उसका कुछ नहीं हो गया? नहीं अभी पतन कैसा? उसका आत्म विश्वास उठता था। इसी उधेड़-बुन में वह हवाई अड्डे पर जा बैठा।

जहाज उड़ा। काफी की चुस्की लेने के साथ ही उसके दिमाग में निर्वाचन का नक्शा खिंच उठा। वह एक बार फिर पिछले की तरह घर घर जाएगा, उनसे वोट की भीख माँगेगा और सभी उम्मीदवारों से अधिक मत प्राप्त करके अपनी लोकप्रियता को प्रांत में जमा देगा। उसका देवत्व चिरस्थायी हो जाएगा।

एकाएक आकाश में तूफान उठता नज़र आया।

चालक घबरा गया और उसने सबको सावधान रहने का आदेश दे दिया। जहाज में अरविंद और उसका सेक्रटरी ही था। दोनों घबराए। देखते-देखते नीला आसमान काला-पीला हो गया। जहाज कंट्रोल के बाहर होने लगा। अरविंद और उसके सेक्रटरी के चेहरे पीले पड़ गए। अरविंद चिल्ला रहा था महाजनो जहाज उतारो, जहाज को उतारो कहते कहते उसका गला ही सूख गया।

मृत्यु कितनी भयानक होती है इसकी कल्पना करने के पहले ही जहाज एक पेड़ से टकराया। अरविंद कूद पड़ा और उसका सिर एक चट्टान से टकराकर फट गया।

जहाज जल कर राख हो गया। हाँ आग बुझ जाने के बाद नर कंकाल जरूर बोल पड़े।

दूसरे दिन समाचारपत्रों ने मुख्यमंत्री के मरने के समाचार प्रका कर दिए। समाचार का मुख्य अंश इस प्रकार का था कि गाँव के सूचना पाते ही अधिकारी घटनास्थल पर पहुँचे और बेहोश को अस्पताल में लाए जहाँ आक्सीजन देने के पहले ही हो गया। मरने के समय उनके पास कोई नहीं था। लाश जन्मभूमि को पहुँचाई गई जहाँ आज शाम को हिंदू प। उनका दाह संस्कार किया जाएगा।

अर्थी के जलूस में प्रायः सभी नेता मंत्री एवं क दो-तीन मंत्री थे। लगभग सारा शहर अपने देवत रहा था क्योंकि उसने शहर को स्वर्ग-सा बना f भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और चरित्रहीनता के क हुआ था। लोगों एवं नेताओं ने सबसे अच्छे दाव भेंट की और सभी ने एक स्वर में कहा 'प्रांत। दलित-पीड़ित समस्त जनता की सेवा करते क हा यह मग देखता चला गया।